



treatment and the arrangement of the subject. The Source Method also by its means can be followed as much as possible, with the help of the illustrations and maps, supplemented by suitable questions from the teacher, so as to create interest for the student. The geographical peculiarities of India, explained in the introductory lesson and the chronological chart of the world's celebrities should be clearly noted and supplied by the teacher, so as to lead the student ultimately to view the world's history as a comprehensive whole.

The book being originally meant for Marathi students only naturally contained such feature as would appeal to their environment in the peninsular part of India. In this Hindi edition, however, I have tried, as far as I could to bring in the special features of the North Indian History, through the various stages of development in the present atmosphere of the country. It is what the student needs to read, so as to get the proper idea of a united India, and to get rid of the harmful prejudices which have been eliminated. I feel sure that this book will be a much desired utility.









## बारहवाँ अध्याय

### नारायणराव और स्वर्ण माधवराव

- १—नारायणराव का वध और राज्य का हान
- २—प्रथम भंभेज-मराठा युद्ध
- ३—महाराजी द्वारा बादशाही का प्रबंध
- ४—स्वर्ण की लड़ाई
- ५—स्वर्ण माधवराव व अन्य कार्य-कर्त्ताओं की मृत्यु

## बारहवाँ अध्याय

### छत्रपति द्वितीय शाह, वेशवा द्वितीय बाजीराव

- १—वेशवा द्वितीय बाजीराव
- २—नाना फडनवीस की मृत्यु
- ३—सैन्याती फौज
- ४—भंभेज मराठों का दूसरा युद्ध
- ५—होम्बर के साथ युद्ध

## तेरहवाँ अध्याय

### महाराष्ट्र शक्ति का अंत

- १—नीसरा मराठ्य युद्ध
- २—भोंसले और होल्कर के साथ युद्ध
- ३—विहारी युद्ध
- ४—मराठ्यशाही का अंत
- ५—मराठ्यशाही के अन्त होने के कारण










३—भारत के समुद्री किनारों पर अनेक बन्दरगाह हैं। ये भारत के प्रवेश द्वार हैं। ऐसे बन्दरगाह पश्चिम-तट पर अनेक हैं, लेकिन पूर्वी तट पर केवल इने गिने ही हैं और वे भी पश्चिमी बन्दरगाहों के समान अच्छे नहीं हैं।

४—व्यापार की सुविधा के लिए पूर्व काल में बड़े बड़े नगर केवल बड़ी बड़ी नदियों के किनारे बसाये जाते थे। लेकिन योगीशों के भारत में आने से बड़े बड़े जहाजों के सुमारे के लिए कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, कोरोंची इत्यादि नगर व्यापार की बड़ी से बड़ी मंडी बन गये हैं। इसीलिए ये बड़ी बड़ी रेलवे लाइनों के बन्द बन गये हैं।

५—संसार की पार्सी से लेकर महानदी के मुहाने तक जो जंगल पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है उसके बीच में विन्ध्याचल पहाड़ की धोनी है। इस धोनी से भारत को उत्तर और दक्षिण—इन दो भागों में बाँट दिया है। भारत के ये दो हिस्से बहुत प्राचीन काल से माने जाते हैं। प्राचीन काल में यह जंगल इतना घन था कि इनको पार करना बड़ा कठिन काम था।

६—इस भारत एक लम्बा-चौड़ा मैदान है। इस भाग में सिन्धु और गंगा दो बड़ी नदियाँ तथा इनकी अनेक सहायक नदियाँ बहती हैं, जिनसे यह देश बड़ा उपजाऊ बन गया है। इसी देश को पहले 'अर्यावर्त' कहते थे, यही 'आर्य-भारत' की उत्पत्ति हुई थी। इसलिए इन नदियों की रचना और देश पर पड़नेवाले प्रभाव की बात जाननी और समझनी जरूरी है।

७—भारत के उत्तर में  है और दक्षिण में



३—भारत के समुद्री किनारों पर अनेक बन्दरगाह हैं। भारत के प्रवेश द्वार हैं। ऐसे बन्दरगाह पश्चिम-तट पर अनेक हैं लेकिन पूर्वी तट पर केवल इने-गिने ही हैं और ये भी पश्चिम बन्दरगाहों के समान अच्छे नहीं हैं।

४—व्यापार की सुविधा के लिए पूर्व काल में बड़े बड़े नग केवल बड़ी बड़ी नदियों के किनारे बसाये जाते थे। लेकिन योग्यताओं के भारत में आने से बड़े बड़े जहाजों के सुमोनें लिए कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, कराँची इत्यादि नगर व्याप की बड़ी से बड़ी मंडी बन गये हैं। इसीलिए ये बड़ी बड़ी रेल लाइनों के केंद्र बनाये गये हैं।

५—अबमान की खाड़ी से लेकर महानदी के मुहाने तक ३ जंगल पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है उसके बीच में विन्ध्याच पहाड़ की धेणी है। इस धेणी ने भारत को उत्तर और दक्षिण—इन दो भागों में बाँट दिया है। भारत के ये दो हिस्से बहुत प्राचीन काल से माने जाते हैं। प्राचीन काल यह जंगल इतना घन था कि इसको पार करना बड़ा कष्ट काम था।

१—उत्तर-भारत एक लम्बा-चौड़ा मैदान है। इस भाग में सिन्धु और गंगा दो बड़ी नदियाँ तथा इनकी अनेक सहाय नदियाँ बहती हैं, मिगने यह देना बड़ा उपजाऊ बन गया है इसी देना को पहले 'आर्यवर्त' कहते थे, वहीं 'आर्य-सभ्यता' की उत्पत्ति हुई थी। इसलिए इन नदियों की रचना और देना पर पहुँचनेवाले प्रयास की बात जाननी और समझनी जरूरी है।

२—भारत के उत्तर में हिमालय-श्रृंखला फैला है और दक्षिण में

अगाध भारत-महासागर है। इसलिए उत्तर-भारत में निश्चित रूप में वृष्टि होती है। उपजाऊ भूमि और सिंचाई के लिए जल सुलभ होने से इस देश का मुख्य धंधा खेती है। अन्य धंधे इसी के सहारे पनपते हैं।

८—अनुकूल जलवायु, उपजाऊ भूमि और उद्योगशील तथा बुद्धिमान लोगों के बसने से यह देश पूर्व-काल में ही अपार सम्पत्ति का घर बन चुका था। यहाँ अनेक विद्याओं तथा कलाओं की उन्नति हुई। इसीलिए यह सारे संसार में इतना प्रसिद्ध हो गया कि विदेशों की दृष्टि इसी पर गढ़ गई।

९—भिन्न भिन्न प्रकार के जल-वायु, फल-फूल, वनस्पतियाँ, पक्षी एवं अन्य प्राणी, खनिज-सम्पत्ति इत्यादि सभी इस देश में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इसलिए पश्चिमी तट के बंदरगाहों पर विदेशों के जहाज़ इन चीज़ों को लेने के लिए आते थे। इससे यहाँ का व्यापार बहुत बड़ा-बड़ा था। इस व्यापारिक उन्नति के कारण ही इसे लोग 'सुवर्ण-भूमि' कहते थे। धोरुण की सोने की द्वारका-नगरी और सुदामा को दी गई सोने की सुदामापुरी (पोर बंदर) की कथाएँ उस समय का वैभव आज भी हमें बघाती हैं।

## १०—स्थल-निर्देश

आज-कल रेल-पथों के खुल जाने से यात्रा के प्राचीन मार्गों और लड़ाई तथा प्रबंध के स्थानों का महत्व कुछ भी नष्ट नहीं हुआ। इसलिए पहले की घटनाओं को यथावत समझने के लिए उस समय की स्थिति को ध्यान में रखना जरूरी है। हिमालय पर्वत-श्रेणी के दक्षिण का भाग गंगा का ओर दक्षिण में दानु



# ३—पृथिवी का क्षेत्र-फल और जन-संख्या

( वर्ण और धर्म )

देश	क्षेत्रफल वर्ग मील	जन-संख्या	पृथिवी भर की वर्ण-संख्या	
ग्रेट ब्रिटेन व आयरलैंड	१ लाख २१ हजार ४००	४०० लाख	गौर (काफे-शियन)	७७ करोड़
फ्रेंच प्रोटेक्टोरेट्स	१ करोड़ २५ लाख	३९ करोड़	पीत (मंगोलियन)	५४ करोड़
फ्रेंच प्रोटेक्टोरेट्स का योग	१ करोड़ २७ लाख	४४ करोड़	कृष्ण (एथियोपियन)	१७१ करोड़
भारत	१० लाख ९३ हजार	२४,६९,९७,११२	ताम्र (अमेरिकन)	२ करोड़
भारतीय राज्य	७ लाख ९ हजार	७,१२,३९,०८९		२० लाख
कुल भारत	१८ लाख २ हजार ६००	३१,८२,३६,२०१	कुल जोड़	७० लाख

योरप	क्षेत्रफल	जन-संख्या	पृथिवी भर के धर्म	संख्या
एशिया	१६८ लाख	८० करोड़	ईसाई	४७ करोड़
अफ्रीका	१२० लाख	२० करोड़	बौद्ध	४० करोड़
अमेरिका	१६५ लाख	१२ करोड़	हिन्दू	२१ करोड़
ऑस्ट्रेलिया	३० लाख		मुसलमान	२० करोड़
कुल पृथिवी	५२० लाख	१५० करोड़	यहुदी	८० लाख
पृथिवी का भाग	१४५० लाख	१	अन्य	२० करोड़
पृथिवी	१९७० लाख		कुल योग	१५० करोड़





म	११,७८,५५१	गिराँ	४७,५४,०३१
रि	१,१५,७१,२१८	गुजराती	९७,०८,१११
नारी	४१,७७१	हारा	१७,१८९
		हारा मोल	२१,६१,२८,७२१

( ३ ) भारत के नगरों की जन-संख्या

( सन् १९२१ की वसुध-गणना के अनुसार )

आहवा	१३,०७,५४७	गागपुर	१,४८,१०२
अमरा	११,७०,९१४	धीनगर	१,४१,७७०
मद्रास	५,२१,९११	मधुग	१,३८,८९४
देरादून (इरिग)	४,८४,१८०	दोली	१,२९,४०९
गिर	३,७१,९६२	मोह	१,२२,६०६
दिल्ली	३,०८,४२०	प्रियनाराती	१,२०,४२२
लाहौर	२,८१,७८१	अपपुर	१,२०,२०७
अमदावाद	२,७८,००७	पटना	१,१९,९७६
लखनऊ	२,४०,५६६	दावर	१,१९,४००
बंगलौर	२,३३,४९६	मृत	१,१३,४३४
बरोवा	२,१६,८८३	अजमेर	१,१३,५१०
कानपुर	२,१६,४३६	अदनपुर	१,०८,३२३
पूना	२,१०,७२६	देरादून	१,०८,४००
बनारस	१,९८,४८७	गजनीरिहड़ा	१,०१,१८०
आगरा	१,८०,५३०	दहोद	९८,०००
अनूपम	१,६०,२१८	इन्दौर	९८,०००
इलाहाबाद	१,५७,२२०	मंगर	९८,०००
मंडाले	१,४८,९१७	भारतियर	९८,०००



छोटी नावें काम में लाना, देवता के संतोष के लिए मनुष्य की बलि देना इत्यादि बातों का प्रारम्भ ।

७ से ६ हजार—पश्चिमी एशिया और मिस्र में दीवारों से घिरे हुए नगरों का बसाना, विशेषतः मेसोपोटामिया या ईराक में उनके कपड़े धोने का प्रारम्भ, मछली पकड़ने के लिए नावों का बनना ।

५ से ४ हजार—दुजला (Tigris) और फ़ुरात (Euphrates) नामक नदियों के बीच के प्रदेश सुमेरिया तथा नील-नदी के तट पर मिस्र देश में ज्यामिति-विद्या की उत्पत्ति, अन्य विषयों में सुधार, आर्यों के वेद, गीता इत्यादि ग्रन्थों का समय । ४२४१ मिस्र की वर्ष-गणना का प्रारम्भ ।

४ से ३ हजार—मिस्र देश में पिरामिड का निर्माण । अयोध्यापति श्रीगमचन्द्र का समय । सुमेरिया में नहरों का बनना (सिन्धुप्रान्त में माहेजोदारो और मुलतान के पान हरापा नाम के दो प्राचीन नगरों का पुरातत्त्वविदों द्वारा हाल में पता लगा है, उनके खंडहरों में उनका मूल-रचना ईसाई सन से पूर्व तीन हजार वर्ष प्राचीन सुमेरियन के समकालीन अनुमान की गई है । इन सन्वन्ध में अभी मत बदलना सम्भव है) रोमानी चरित्र का उपयोग चीन में होने लगा ।

३१०१—युधिष्ठिर के संवत्सर का प्रारम्भ ।

२५१०—सुमेरिया का पहला राजा मार्गन ।

२१००—असुरियाई साम्राज्य की स्थापना । आर्यों की पूव दम्ती कैस्पियन समुद्र के पास से पश्चिम की ओर योरप में दाइन नदी के तट तक थी । वहाँ से उनका आग्नेय

कोने में उत्तर-अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग-द्वारा भारत में प्रवेश। दक्षिण में ईरान और पश्चिम में बायज़न प्रान्तों से होकर इटली में आर्यों की तीन शाखाओं का प्रयाण। भारतीय युद्ध ३०००—२५०० के बीच में। बराहमिहिर इस युद्ध का समय २५५८ वर्ष बताता है।

२०००—१५००—आर्यों की उपनि। गेहूँ, लोहा, और घोड़े का व्यवहार।

१६००—मिथ में फेरोह राजा का पेश्वर उमका असीरिया वालों के साथ युद्ध।

१५००—१०००—असीरिया और बेबीलोनिया में सुधार की याद, यहूदी धर्म-संस्थापक मोज़ेज़ (मूसा) का समय, कपड़ा, लोहा तथा काँच का उपयोग होना और लोगों का रहन सहन लगभग आज-कल जैसा समृद्धिपूर्ण होना। भारत में आर्यों के ऋग्वेद की ऋचाओं का संग्रह होना और उनका जीवन सुसम्पन्न बनना, उपनिषदों की रचना। पेरसिया-देश में यहूदी लोगों के पूर्वज अब्राहम के वंश का उदय।

१०००—९६०—हिप् राजे डेविड और सालोमन का जेरुसलम शासन।

१०००—८००—ग्रीक जाति का उत्तर में विस्तार, भारत में आर्य का आग्नेय में विस्तार, मिथ का उद्धार और वहाँ लिपि का विकास।

८००—सिन्धु के सामने उत्तर-अफ़्रीका के तट पर काथे नगर की उपनि। इसकी जन-संख्या १० लाख थी पायसी ज़रथोस्ती धर्म के संस्थापक ज़रथोस्त का समय





१—१००—पुरापुर अर्थात् पेसावर के राजा कनिष्क का शासन-काल; उनका राजवंश चरका; मैथिलिक गौतम; मेना-पति धेदिपयेला का इहलैंड जान कर रोमार बनाना; ग्रीस के ज्यमिगिशास गृष्टिड का समय ।

७८—शालिवाहन-शक का प्रारम्भ ।

१००-२००—बुद्धचरित्रधार अभ्युप ।

११७—रोमन-साम्राज्य की उत्पत्ति की चरमावस्था; बारशाह दे ज़न की मृत्यु; हेडियन का राज्यारोहण ।

१३०—ज्योतिषी टॉलेमी का जीवन-काल ।

२००—विष्णु-स्मृति; कवि भानु; सुधुत ।

३५०—यानयत्क्य; मुद्रागक्षस के लेखक विशाखदत्त का जीवन-काल ।

१६१-१८०—मार्कस आरेलियस ।

७३-२२५—पैटण का शालिवाहन-वंश; भाजें, कालें, नासिक, कान्हेरी इत्यादि गुफाओं का बनना ।

३१२-३३७—सम्राट् कान्स्टेडान दि ग्रेट की ईसाई-धर्म में दीक्षा ।

३००-४००—कवि कालिदास का जीवन काल; बुद्ध-धर्म का चीन में प्रवेश; चांगमट ।

३२०-५१०—गुप्तवंश; मगध के पाटलिपुत्र में चन्द्रगुप्त विश्रमा-दित्य; (३७५-४१३) विद्या-कला का परमोत्कर्ष; अजंटा, सारनाथ, देवगढ़ इत्यादि में गुफाओं का बनना;

३५०—घेरुल की गुफा ।

३५०—चीज-गणित का यूरोप में व्यवहार; ३९९-४१४ फ्राहियान की भारत-यात्रा ।

४७६—चीज-गणित का प्रथम रचयिता आर्यभट्ट; ४९५-५८७





७२२—फ्रांस में दृग्वं में चार्ल्स मोर्टल-द्वारा मुसलमानों की हार ।

८९७३—मालायेद्व का राष्ट्रकूट-वंश ।

७६०—चेस्टर के कैथेड्रल की गुफा तैयार हुई ।

४-७७५—एलीफा अल्मंगूर } अरेबियन नाइट्स नामक

६-८०९—एलीफा एरु रशीद } ग्रन्थ के नायक ।

८-८१४—मध्य-यूरोप में चार्ल्समेन बादशाह का शासन-काल ।

८-८२०—आदि-शंकराचार्य ।

७०४—धारापुरी की गुफा ।

३-८१३—राष्ट्रकूट-वंशी तीसरे गोविन्द ने दक्षिण से जाकर कन्नौज तक का देश विजय किया ।

८१५-८७७—राष्ट्रकूट-वंशी राजा अमोघवर्ष का जीवनकाल ।

अग्य-प्रवासी सुलेमान इस राजा की गिनती संसार के चार बड़े राजों में करता था । इस राजा के सम-कालीन राजे—बंगाल का राजा धर्मपाल, और उसका पुत्र देवपाल पाटलिपुत्र ( पटना ) में पराक्रमी और यशस्वी राजे हुए ।

८७१-९०१—इंग्लैंड के राजा अल्फ्रेड । जावा में बोसुधुर के प्रचंड घुड़-जैन देवालय की स्थापना ।

१००-१०००—

९३२—मुंजाल नामक आर्य-ज्योतिषी ।

९६७—गजनी की स्थापना ।

२८३—मैसूर में श्रवणबेलगोला स्थान में धर्मगुरु गोमत की ५६॥ फुट ऊँची भव्य मूर्ति तैयार की गई ।

१०००-११००—

१८४-१०१०—राजराज चोला ने तंजौर का मन्दिर निर्माण

































अस्या में शरीर त्याग किया। उनके अनुयायियों की संख्या ११ हजार थी। बाद में चन्द्रगुप्त के शासन-काल में उनके सारे देशों का संग्रह किया गया। उस संग्रह का कुछ भाग आज भी पाली-भाषा में उपलब्ध है। उस भाग का नाम अंग है। कह जाता है कि चन्द्रगुप्त ने भी जैनियों का अच्छा सम्मान किया। उसकी आत्मा में भद्रबाहु नाम का एक जैन-विद्वान् जैनियों का एक बड़ा संघ अपने साथ लेकर दक्षिण-भारत में गया और जैन-संघ का प्रचार किया। कुछ समय बीतने पर ये लोग मगध राज्य को फिर लौटे। ३. समय उत्तर के जैनियों में उनका मत-भेद हो गया, जिसमें दक्षिण के जैनी दिगम्बर और उत्तर के जैनी श्वेताम्बर—अर्थात् सफेद वस्त्रवाले कहलाये। भारत में कुछ काल तक दिगम्बरों का प्रचार बहुत बड़ा-बड़ा रहा। दक्षिण में दिगम्बरी जैनियों की संख्या अधिक है और उत्तर में या पुराना आदि प्रांतों में श्वेताम्बर जैनी अधिक हैं। तीर्थ-स्थानों में दोनों सम्प्रदायों की धर्मशालाएँ बड़ी सुविधा-जनक बनी हैं। जैन मतानुषाङ्ग इस देश में सभी प्रांतों, सभी जातियों और सभी भाषा-भाषियों में मिलते हैं। ये लोग स्वभाव में ही सात्विक, परोपकारी और व्यापार प्रवीण होते हैं। स्थान स्थान उनके विशाल देव मन्दिर और धर्मशालाएँ तथा लोकोपयोगी अनेक संस्थाएँ खुली हुई हैं। आवृ पहाड़ पर बने जैन-मन्दिर को जिसने देखा है वह तत्कालीन जैनियों शिक्षा-कला-साधनार्थी उन्नति का अनुमान कर सकता है। तीर्थ हिम्मा में बचने के लिए ये लोग दिन ही दिन में भोजन करते हैं। पर्यटन करने समय मुँह पर कपड़ा बांधने का इनका नियम ही है।







मर जाने के बाद उनके अनुयायियों ने पटना के समीप एक गुफा में भारी सभा करके उनके उपदेशों का संग्रह किया और उसे तीन भागों में विभक्त किया। इनको पिटक या करहक कहा है। इस मण्डली ने बौद्ध-धर्म का प्रचार पड़े ज़ोरों के साथ किया। इसके ठीक सौ वर्ष बाद बौद्धमतानुयायियों की दूसरी सभा वैडी। उस समय बौद्ध लोग दो दलों में बँट गये। इनमें एक पक्ष ने उत्तर में और दूसरे पक्ष ने दक्षिण में बौद्ध-धर्म का प्रचार किया। इसके सौ वर्ष बाद चक्रवर्ती मरेशा अशोक ने स० पू० २४२ में बौद्ध-विद्वानों की तीसरी सभा की और उस धर्म के प्रचार में एक नवीन उत्साह का सञ्चार किया। लगभग ४०० वर्ष बाद राजा कनिष्क ने बौद्ध-धर्म के विद्वानों को एकत्र कर एक चौथी सभा की। इस सभा में ग्रन्थ-संग्रह का कार्य किया गया। बौद्धों के प्रायः सभी पाली-भाषा में हैं। गौतम बुद्ध ने पाली-भाषा में ही लोगों को उपदेश दिया था। बौद्धों और जैनियों के ग्रन्थों का भांडार बड़ा है। इन दोनों के अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ बने और अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थकार हुए। यदि उनका संशोधन करने लिए भारत के बाहर के ग्रन्थ-भांडार की खोज की जाय तो के प्राचीन इतिहास की अपरिमित सामग्री मिल सकती है। इनमें जैनियों की वर्तमान संख्या लगभग १५ लाख है। जैन का इतना विस्तृत प्रचार भारत में नहीं हुआ जैसा कि बौद्ध का हुआ था।

(४) सिकन्दर का भारत पर आक्रमण—समस्त और सुसंस्कृति का प्रचार भारत के ही द्वारा अन्य देशों में



















१८८ से १० स० ५० अंकक रहा । पुनर्लिखित कालकाल अतिमिष्ट  
महाकवि कालिका के 'महाविश्वमिष्ट' कालक का नामक  
था । इसी के शासनकाल में महानायकता पंथमिष्ट प्रसिद्ध हुए ।  
गुर्जरों के शासनकाल में अनेक गुर्जरों देश में फैलकर हुए थे ।  
इनमें काशी और अनेक स्थान की गुर्जरों विभिन्न प्रसिद्ध हैं ।

गुर्जरों के अन्त होने पर काश्य नाम के राजा अनेक  
राज्यों में ५५ वर्ष तक काश्य पर शासन किया । इसके बाद  
काश्यराज अनेक देशों के शासन में चला गया । ये अनेक लोग  
पहले नैनीताल में रहते थे और इसी राजधानी इन्सानों के  
तुलने पर धनकटक में थी । इसके बाद इसी नाम के राजा का  
जोर पैदा । इसके बाद इसी राजधानी अतिमान अनेक  
काल के पैदा स्थान में आया । इसका राजा यहाँ शासितवान् पर  
शासितान् के नाम में प्रसिद्ध हुआ । इसी राजाजीन दूने  
बहुते नमों के उक्त नामका और अनेक नमों में १० स०  
५० के पहले राजा में अनेक का शासन । उनके अनेक  
नाम में फैल गया था । अनेक का शासन १५० वर्ष तक था  
जि समय में छोटे-बड़े नमों के राजा का इस देश के १० राज्यों में  
गल्य किया । अनेक का अन्त १० स० ५० के अन्त में हुआ  
१० स० ५० का पहली राजाओं में राजाओं के नाम अनेक  
प्रसिद्ध थी । इसी नाम के राजाओं में विजयविजय नाम के राजा  
में 'संज्ञ' संज्ञाओं का अन्त किया । पर राजा अनेक में  
उत्तरभारत में प्रसिद्ध है । यह विजयविजय राजा का नाम  
का था । इसका ठीक ठीक निम्न अन्त तक रहा हुआ है ।

( २ ) राजा, राजा इत्यादि के अन्त में राजा 'महाराज'





















ईसाई-स्तम्भ



























देश की प्रजा को अपनी उन्नति करने में कोई  
 थी। बड़े बड़े साम्राज्यों और सुधारों का उदय गंगा  
 आदि के प्रवाह-भाग में हुआ। सभी काल में व्यापार और  
 प्रचार के हेतु विदेशों में भारत के यात्री स्थल और जल-मार्ग  
 द्वारा पूर्व-पश्चिम दोनों दिशाओं में गेहन, मिथ्र,  
 द्वीप-समूहों में बराबर आते-जाते थे। इस आने-जाने  
 यहाँ से विद्या, कला, सम्पत्ति इत्यादि का प्रचार दूर-दूर  
 में हुआ। इसमें विदेशियों की दृष्टि भारत पर गड़ी गई। फारसी,  
 ईरानी, इण, अफगान, मुगल इत्यादि अनेक विदेशी इस देश में  
 अनेक बार आक्रमण करके यहाँ अपनी थोड़ी-बहुत  
 में सफल हुए। लेकिन इस देश के लोगों की बुद्धिमत्ता  
 संस्कृति सुसम्पन्न और शुद्ध बनी हुई थी। इसी लिए  
 विदेशियों के संसर्ग के योग से उन्होंने अपने जीवन  
 में अधिक विस्तृत और दृढ़ कर लिया। अपनी  
 उन्होंने विदेशियों पर अपनी छाप लगा दी। विदेशी  
 पर भारतीयों का अवश्य ही पराभव होता था,  
 नहीं है। क्योंकि ये हमारे जीवन राष्ट्र के उत्साह को नहीं  
 कर सके, यह बात अवश्य ही ध्यान में रखने योग्य है।  
 साम्राज्य, गुप्त-साम्राज्य, उत्तर-कालीन राजपूतों के राज्य  
 इत्यादि के दीर्घ कालीन शासन में विद्या, स्थानस्थ और वेद  
 का उपयोग भारतीय प्राणी ने ध्वंस किया और दूसरों  
 कराया। ई० स० पू० ६०० से ई० स० ११९३ तक कोई १५  
 वर्ष के दीर्घ कालीन इस्लाम-काल में भारत ने स्थानस्थ  
 और उन्नति का उपयोग किया। ऐसा समय इस पृथिवी  
 किसी दूसरे राष्ट्र को कभी नहीं प्राप्त हुआ। दो सौ वर्ष  
 तक में भारतीय समाज जीवन राष्ट्र

या कुछ सोचता था। सुनने के समय-समय में मगलों में हिन्दू-  
मता को पुनर्मज्जीवित कर दिया। और इसकी पूर्ति देने  
के लिये ही नियमवस्तु, सुलभतामयी, भाषाओं में प्रचलित  
अंग्रेज़-जानि का समकक्ष भाग में हो गया और अंग्रेज़ों की  
सार्वभौम सत्ता इस देश में स्थापित हो गई। देखी ही इस देश  
के इतिहास की परम्परा घली आ रही है।

मिला। उस समय अरुणाभिस्तान के पूर्व-भाग गांधार  
 विन्ध्य के किनारे गजान-प्रान्त में राजा जयपाल शासन  
 था। इसकी राजधानी पेशावर थी। सुयुक्तगीन ने इस  
 बड़ाई काफ़ी उसके राज्य का कुछ भाग छीन लिया। सु-  
 का बड़ाई गुल्गान महमूद या महमूद तुग़लनबी बहा-  
 निरुद्धा। उसने सन् १०१० में १०३० तक गुज़नी में।  
 भारत पर लगातार सत्रह बड़ाईयों की। उस समय।  
 गुज़नी के अनेक छोटे छोटे राज्य थे, जिनमें पामर  
 या महमूद बहादुर और बड़ निदरबी व्यक्ति होते  
 गुज़नी राजाओं को एक एक काफ़ी हथ दिया। यहाँ  
 पामर बड़ का उगने गुज़नी में पकड़ की। उस समय  
 में हिन्दुओं के बड़े प्रार्थन और धर्म संरक्षण अनेक।  
 इनका विवरण कर और अनेक बड़ाईयों को जीत  
 संगठित हिन्दुओं का मुन्धरमान बनाया। सन् १०२  
 ज्ञानी अन्तिम भास्करगयात्रा में दूर के काठियावा-  
 रमण जगता काठियावाड़ के दक्षिण में समुद्रतट पर  
 का बालूह सागर था। इसकी सन्ध्या भी अग्रा  
 स्थला नाम दूर दूर तक फैला था। यहाँ की सन्ध्या  
 अलग से महमूद बहादुर गुज़नी राजा गुल्गान  
 बनना हुआ दूर सामान्य पर बड़ा भव्य। लड़ाई  
 हिन्दुओं का हाथ का उगने मान्य पर अधिकार  
 अपने अग्रे नाम से दूर अग्रे का मान का तो  
 धर्मालोक का। सन्ध्या उगने था का पर मान्य था  
 का उगने नाम दूर लड़ाई में इसका कातक बड़ा  
 सन्ध्या अग्रे बड़ा बड़ाई का कला नाम में नहीं









है। दिल्ली के दक्षिण में कतुबमीनार नाम की जो मिनार थी  
वही अब कतुबमीनार में हो बनवाया था।

अलतमश ( सन् १२११-३६ ई० )—सन् १२१० ई०  
कतुबमीनार की मृत्यु हुई। उसके बाद उसके बेटे को गद्दी से उतार  
कर अलतमश बादशाह बन गया। अलतमश के समय में ही  
मराठों ने मराठवाड़ा में मुगल-शासनाय का विस्तार किया। उसे  
नाजबगान पर भी आक्रमण करने का विचार किया। पानुई  
में बलिया हो जाने के कारण उसे लौट जाना पड़ा। इसी समय  
अलतमश और मुगल के संबंधों में दिल्ली के बादशाह के विरुद्ध  
विद्रोह फैला। पानुई अलतमश ने इस विद्रोह को दमन करने  
दिया। अपने राजपूताने पर भी चढ़ाई की और कई स्थानों  
पर आक्रमण भी कर लिये।

अलतमश बड़ा योग्य बादशाह था। वह विज्ञानी और  
प्रजाप्रेमिणी था। उसके समय में कितने ही विद्वान् पानुई  
में आये। इनमें से हिन्दुस्तान में आये। सन् १२३३ में  
मृत्यु हुई।

राजराजराज ( सन् १२३३-५० ई० )—दिल्ली के अलतमश  
की मृत्यु के बाद अलतमश की यह इच्छा थी कि वह  
पानुई में ही मृत्यु की प्रार्थना करे। वह राजराजराज  
का पानुई अलतमश के बन्धुभावात्। कहीं की राजराज  
का राजा। अलतमश की मृत्यु के बाद अलतमश के बेटे को गद्दी  
पर बैठाया। पानुई की मृत्यु के बाद उसकी मृत्यु हो गई।  
पानुई की मृत्यु के बाद वह बड़ा बलवान् बन गया। अलतमश  
की मृत्यु के बाद राजराजराज भी मृत्यु हो गया। वह स्वयं राजराजराज  
की मृत्यु के बाद पानुई में ही मृत्यु हो गया। अलतमश





(— — — — —)

बख्तन के सिक्के







































































































साध्य कार्य किये। धर्म के मामले में यह आसही न था। शत्रु अपने घर्मान्तर में यह दृष्ट था। उसने हीरो इत्यादि मणियों में जड़ा हुआ एक मयूरामन तैयार करवाया था। उसके बनने में ३ करोड़ से भी अधिक रुपये खर्च हुए थे। शाहजहाँ के समय में बादशाहों के ज्ञानान्तरों की शान विशेष रूप से बढ़ गई थी। तोपखाने की शान के कारण उसने उसके बाद पर अनेक युद्ध जीते थे। तोपों के द्वारा उन्होंने यूरोपियों को भर्ती किया था। उन्होंने अपने आपसी कामों में तैयार नहीं किये। यूरोपीय युद्ध-कला की ओर कुछ ने ध्यान नहीं दिया। इसीसे इस देश में यूरोपियों का जो महत्त्व में हो गया। दिल्ली और आगरे में अनेक इमारतें बन कर इन शहरों की बड़ी उन्नति की। शाहजहाँ का इमारत आ उसकी प्यारी बेगम मुमताज़ महल की कब्र अयोध्या कावरी राजमहल यमुना के किनारे आगरे से दक्षिण की ओर बेंगलूर पर बना हुआ है। इसके बनने में ३० करोड़ रुपये खर्च हुए १० वर्ष में बन कर तैयार हुआ था। मर्जी काम भी कार्यवाही ने किया था। इसकी सुन्दर और गुम्बदाकार छत यूरोपीय पर दृश्य नहीं है। शाहजहाँ के राज्य में २० लाख उसकी आय ३५ करोड़ रुपये वार्षिक थी। अकबर की आठ लाख मुल्की की पड़ति शाहजहाँ ने दक्षिण में भी बढ़ाई। मीर जयसिंह ने १६५२ ईसादि पारसी शाहजहाँ के शासनकाल में आय १० लाख में जो बढ़ाई दिया है वह सिवाकाल शाहजहाँ का मुल्क २० जनवरी सन् १६५९ में आगरे के नष्ट





2





अहमदनगर, प्रहसपुरी इत्यादि स्थानों में उसके किराने ही से निकल गये। अन्त में उसे बड़ा दुःख हुआ। शाहजहाँ तक उसके भय में भाग छड़कर ईगन चला गया, वही उसके मृत्यु-हुर। उसके अन्य तीन शाहजहाँदे मुअज़्ज़म, अज़ीम और कामरुद्दौल आधम में एक दूसरे से घिगड़े और स्वयं राज्य के लिए प्रयत्न करने लगे। यादशाह को पता लगा कि कहीं लड़के भी मेरे कार्यों का अनुसरण कर मेरी दुर्दशा न करें, इसलिए उसने अपनी मृत्यु होने तक अपने किसी लड़के को आधम तक न फटकने दिया। उसके समी उदेरा अमरल में अपने हाथों बढ़े बढ़े अनर्थ हो जाने से उसे परलोक की भी आशा न रही। यह विचार करके कि मेरा राज्य यही ज़रूरी हो जायगा और भूतों को दुरुस्त करने का अब समय भी नहीं। उस बड़ा कष्ट हुआ। अन्त में मराठों के आक्रमण और अधिक ज़ोरदार होने लगे। इसमें उसे युद्धों में अत्यंत कष्ट और इस प्रकार यह अन्तिम मुगल-सम्राट् २० ज़ार्वरी १७०७ को अहमदनगर में मर गया। उसकी कब्र उ म्हाफिन किये हुए औरंगाबाद नाम के शहर में रीज़ा के मश्रफ़ में है।

(६) औरंगज़ेब की योग्यता—इतिहास में औरंगज़ेब शासन बड़े माफ़े का गिना जाता है। औरंगज़ेब ने अपने प्रबल शासकीय शक्ति, हिन्दू धर्म के नाश करने के व्यर्थ मनोव्यय को पूरा करने में पूर्ण की। अत्याचार, दुराचल, अविद्याम और कपटाल। इन्होंने अपने राज्य को अपने हा शासन-काल में नष्ट कर दिया। औरंगज़ेब का एक व्यवहार और आचरण बहुत ही सुन्दर है।















































१. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \cup B$  का अर्थ  $A$  और  $B$  के सभी  
 अवयवों का समुच्चय है। अर्थात्  $A \cup B = \{x : x \in A \text{ या } x \in B\}$ ।  
 २. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \cap B$  का अर्थ  $A$  और  $B$  के  
 सामान्य अवयवों का समुच्चय है। अर्थात्  $A \cap B = \{x : x \in A \text{ और } x \in B\}$ ।  
 ३. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A - B$  का अर्थ  $A$  में  
 वे अवयव हैं जो  $B$  में नहीं हैं। अर्थात्  $A - B = \{x : x \in A \text{ और } x \notin B\}$ ।  
 ४. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \setminus B$  का अर्थ  $A$  में  
 वे अवयव हैं जो  $B$  में नहीं हैं। अर्थात्  $A \setminus B = \{x : x \in A \text{ और } x \notin B\}$ ।  
 ५. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \Delta B$  का अर्थ  $A$  और  $B$  के  
 अलग-अलग अवयवों का समुच्चय है। अर्थात्  $A \Delta B = (A - B) \cup (B - A)$ ।  
 ६. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \times B$  का अर्थ  $A$  और  $B$  के  
 अवयवों के क्रमित युग्मों का समुच्चय है। अर्थात्  $A \times B = \{(a, b) : a \in A \text{ और } b \in B\}$ ।  
 ७. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \cup B$  का अर्थ  $A$  और  $B$  के  
 सभी अवयवों का समुच्चय है। अर्थात्  $A \cup B = \{x : x \in A \text{ या } x \in B\}$ ।  
 ८. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \cap B$  का अर्थ  $A$  और  $B$  के  
 सामान्य अवयवों का समुच्चय है। अर्थात्  $A \cap B = \{x : x \in A \text{ और } x \in B\}$ ।  
 ९. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A - B$  का अर्थ  $A$  में  
 वे अवयव हैं जो  $B$  में नहीं हैं। अर्थात्  $A - B = \{x : x \in A \text{ और } x \notin B\}$ ।  
 १०. यदि  $A$  और  $B$  दो समुच्चय हों, तो  $A \setminus B$  का अर्थ  $A$  में  
 वे अवयव हैं जो  $B$  में नहीं हैं। अर्थात्  $A \setminus B = \{x : x \in A \text{ और } x \notin B\}$ ।































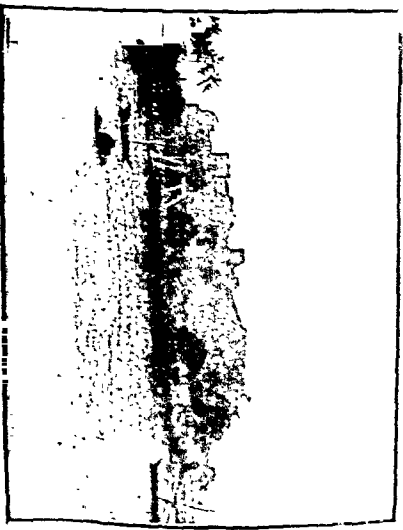
“बाँदवह” स्थान में मराठों व मुगलों की लड़ाई हुई। इसमें मुगलों की हार हुई। सन् १६७१-७२ में स्थान देश पर मराठों के आक्रमण हुए। यहाँ साल्टेयर के पनघोर युद्ध में भी मुगलों की हार हुई। अन्त में पुरन्दर वाला स्वन्ध्र को बादशाह ने स्वीकार किया और शिवाजी की स्वतन्त्रता भी उसने स्वीकार की। इसी प्रसङ्ग में समभाजी को पंचदज़ारी का मनमथ मिला और बरार की जागीर भी बादशाह से मिली।

(२) शाहजी की मृत्यु और राज्य-स्थापन—इसी बीच में सन् १६६४ वर्ष की भाग में शाहजी हरिहर के समीप होडि-कैरी स्थान में ता० २३ ११६६४ के दिन घोड़े से गिर पड़ने के कारण मर गये। शाहजी ने १०-११ वर्ष तक निज़ामशाही का कार्य करने हुए प्रत्यक्ष बादशाह की भी कुल परचा नहीं की। यह देश वर तत्कालीन शासक वर्ग में शाहजी को अपने पक्ष में खाने के लिए अनेक शासक सदैव लालायित रहते थे। आगे चलकर आदिलशाही में भी उसने अनेक पराक्रम के कार्य किये थे। फर्नाटुक में तंजौर का महाराष्ट्र सत्ता उसी ने स्थापित की थी। यह बड़ा शूरवीर और प्रबन्ध करने में अत्यन्त चतुर था। शाहजी के मरने के बाद शिवाजी ने खुल्लमखुल्ला राज्य स्थापित कर अपने नाम के सिर्फे प्रचलित किये (सन् १६६८)। किन्तु शिवाजी का विधिवत राज्याभिषेक बाद को हुआ।

(३) बीजापुरवालों के साथ दूसरा युद्ध (सन् १६७२-७३)। सन् १६७२ में बीजापुर के अली आदिलशाह की मृत्यु हो गई। उसके मरने ही दरबार में कूट फैल गई। इससे शिवाजी के साथ फिर युद्ध होने लगा। शिवाजी ने बीजापुर वालों के पन्हाल गढ़



சாவு குளம் ( வியாபாரிகளின் கால் )



























मुगलों के हाथ में जाते हो रामचंद्र पंत ने विशालगढ़ और पन्हाल के बीच में रह कर महागढ़ को रखा की। राजाराम ने प्रह्लाद निवाजी और खंडो बल्लाल के साथ जिंजी जाकर राज्य का शासन-कार्य देखना शुरू किया और मन्ताजी घोरपड़े व धनाजी जिंजी और महागढ़ के बीच में घूम-फिर कर आदेशों का पालन करने लगा। इस क्रम के चलते ही कार्य ठीक होने लगा। शंकराजी मल्हार व परशुराम त्रिंबक कुन्दकर्णी कित्वाकर प्रतिनिधि के मूल-पुरख रामचन्द्र के साथ काम करने में प्रसिद्ध हुए। राजाराम ने जिंजी में नदी को स्थापित कर अधिप्रधान मंदार की फिर में स्थापना की। प्रह्लाद निवाजी का बचुर, कर्त पत्नील और राज्य का एकमात्र आधार-स्तम्भ समस्त और अपना दुसरा स्वरूप मान राजाराम ने उसे "प्रतिनिधि" का नया पद दिया। प्रतिनिधि का पद अधिप्रधानों से भी ऊंचा रक्खा। इस तरह राज्य में एक प्रबन्ध स्थापित किया। इसके सिवा गढ़ को रक्षा के लिए उसने एक नई बात यह की कि जो व्यक्ति पराक्रम से राज्य को स्वतंत्रता कायम रखे या हरान में सफल होवे और सिद्धि के समय धर्म व सत्य आज रह कर राज्य को सदा पराधीन रह पुनश्च पराधीन, इनमें इत्यादि में सन्तुष्टि प्राप्त होवे। इस प्रकार का राजा का प्रकार होना ही उनके लोगों ने राज्य का पालन कर अपना बल-बलवान किया और उनके प्रकार के राज-सम्भालने में ही "सर्व-सर्व" यह प्रमत्त तब तक सरकारी में लागू है।

(२) मन्ताजी घोरपड़े व धनाजी जायद...  
 दोनों में पाली पड़ी प्रकृत का। सर्वप्रथम उनके संबंध यह था कि



























इस प्रकार पेशवाओं-तारा शुभ किया गया। उद्योग उद्योग होने लगा। पान्थु मराठे सदाय स्वयं एक मन लिए न रहते थे। इसलिए उनकी सत्ता निरन्तरही न रही। बाजीराव को पेशवा की बड़ी अद्वयन पहचान थी। उसके ऊपर फर्ज भी अधिक हो गया था। सन् १७४० में उत्तर-भारत पर आक्रमण करने के लिए जाने समय मार्ग में नर्मदा के तट पर अकस्मात् उसने शरीर त्याग किया। यह "गुनीला" दह की लड़ाई लड़ना गुरु जानता था। वह गुरु और गुरुजी योजा था। उसके समय में अनेक लोगों की प्रसिद्धि हुई। बाजीराव के दो पुत्र—बालाजी राव और रघुनाथ राव थे। चिमणाजी अपा भी इसी वर्ष दिसम्बर मास की १७ तारीख को मर गया। उसके लड़के का नाम सदाशिव राव था। ये तीनों ही आगे चलकर प्रसिद्ध हुए।

(४) पेशवा नाना साहब—इसके समय में गुरुजी भोंसले और जनहसिंह भोंसले ने कर्नाटक पर आक्रमण करके त्रिचनापल्ली पर अधिकार किया। वहाँ मराठाओं को प्रबन्ध के लिए नियुक्त करके तथा तंजौर के महाराष्ट्र-राजा को तंग करने वाले कर्नाटक के नवाब दोस्तअली को मार कर उसके दामाद चंद साहब को सत्ता लाकर बैठा कर दिया था। बाजीराव के मरने पर उसके यह लड़के बालाजी उर्फ नाना साहब को शाह ने पेशवाई का पद दिया। वह भी अत्यन्त चतुर था। अपने पूर्वजों के द्वारा किये हुए कार्य को उसने ज़ोरों के साथ आगे बढ़ाया। नागपुर के भोंसले और बड़ोदे के गायकवाड़ ये दोनों ही नाना साहब के विरुद्ध थे। ये चाहते थे कि पेशवा के प्रतिबन्ध में न रहकर उसका नाश करके स्वतंत्रता से राज्य करें। गायकवाड़ ने गुजरात-प्रान्त पर अपनी सत्ता जमाई थी और भोंसलों

















अपने ऊपर ले लेने । तथा मैं अफगानों और इरानियों से मदद  
 दोनों ओर से मददों का भार दिल्ली के बादशाह का सदैव बना  
 रहता था । दोनों ओर से भार-प्रदान होने के कारण बादशाह  
 को अपनी रक्षा का उपाय खोजना पड़ा । नादिरशाह-तागा  
 की गाँ दिल्ली की गेट की दुर्गवासी रोकने के लिए  
 बादशाह ने यह निश्चय किया कि अहमदशाह अब्दाली के  
 जयजनों को रोकने के लिए मराठों से मेल किया जाय । उसके  
 वर्जित शाहीरहीन का मराठों से मेल था । उसके परामर्श से  
 बादशाह ने मिन्घिया और होल्कर को बुलाकर उनके साथ सन्  
 १७०० में सन्धि कर निम्न-गणित प्रान्तों की रक्षा और सुरक्षा  
 मुझ वस्तु करने का अधिकार उनको दे दिया । और इसके बदले  
 मैं मिन्घिया और होल्कर ने बादशाह के दुश्मन अब्दाली और  
 रहेलो का प्रबन्ध करने का भार अपने ऊपर ले लिया । वास्तव  
 में लड़क से प्रधान कारों तक के प्रदेश को सुरक्षित रखने का  
 काम बहुत बड़ा होने के कारण उन्हें नहीं साध गया था । क्योंकि इस  
 काम के लिए धन और फौज की अधिक आवश्यकता थी । यह  
 सन्धि जयाया मिन्घे और मल्हारराव होल्कर ने पेशवा के नाम  
 लिखा था । इस समय दिल्ली के बादशाह के दरबार में दो पक्ष  
 थे । एक पक्ष गाँजाउद्दीन और मराठों का था । इसका मत था कि  
 भारतीय लोग एक होकर विदेशियों के आक्रमणों से भारत की  
 रक्षा करें । दूसरे पक्ष में रहेलू व अन्य मुसलमान सरदार थे । ये  
 लोग यह चाहते थे कि सब मुसलमान एकत्र होकर हिन्दुओं से  
 दिल्ली को रक्षा करें, इस काम में विदेशी मुसलमानों की सहायता  
 भी यदि लनी पड़े तो कोई हानि नही । दिल्ली के मुसलमानों को  
 मराठों का इस प्रकार दिल्ली के बादशाह से मिल जाना अच्छा न



सका। कुम्भेरी पर घेरा डालने समय मल्हारराव का लड़का प्रसिद्ध अहिल्याबाई का पति खण्डेराव होल्कर १७-३-१७५४ को गोली लगने से मर गया। इससे होल्कर अत्यधिक चिढ़ गया। इससे जयाप्पा रुठ कर मारवाड़ की ओर चला गया। वहाँ राजपूतों ने नागौर में उसे मार डाला (३०-६-१७५५)।

इधर नजीबख़ाँ ये सब बातें अन्दाली को अच्छी तरह बता कर भारत पर उसे चढ़ा लाया। उसने आकर दिल्ली पर सन् १७५७ में अधिकार जमा लिया। इस प्रकार दिल्ली लेकर वह दक्षिण की ओर बढ़ा और उसने मथुरा के हिन्दू-देवालय को नष्ट कर दिया और उसे लूटा। इसी समय उसने दिल्ली को अपने अधिकार में रखने का पड़ा प्रयत्न करना चाहा, लेकिन उसकी फौज में महामारी फैल जाने से उसके सिपाही अफ़ग़ानिस्तान को लौटने लगे।

अन्दाली का प्रयत्न करने के लिए फिर भी रघुनाथराव को ही पेशवा ने दिल्ली भेजा। उसके दिल्ली पहुँचने तक अहमदशाह दिल्ली से निकल गया था। रघुनाथराव ने दिल्ली का प्रयत्न कर पञ्जाब पर चढ़ाई की। पञ्जाब की रक्षा उस समय अहमदशाह अन्दाली का लड़का तैमूरशाह कर रहा था। उनको भी मराठों ने मार भगाया और अटक तक उनका पीछा करके सिन्धु नदी का पानी दक्षिण के घोटों को पिलाया (सन् १७५८)। वस यहाँ मराठों के उन्कर्ष की सीमा का अन्त हुआ। मराठों का झंडा अटक पर फहरा गया। नजीबख़ाँ इत्यादि मुसलमान सरदारों को मराठों की यह विजय बेनगह खटकी। पञ्जाब का पड़ा प्रयत्न किये बिना ही रघुनाथराव दिल्ली को लौट पड़ा। वहाँ के गवर्नर-जनरल का कार्य उसने दत्ताजी सिन्धिया को सौंप दिया। इस

काम में होकर ने दस्ताजी की सहायता में की। स्थान  
 पर मगलों की छोटी छोटी कौमें थीं। उनमें वेध न होने  
 उनकी स्थिति निर्मूलक हो गई। इस स्थिति का ठीक ठीक ज्ञान  
 मान जाना साहस्य पेशवा को न हो पाया। स्थान तो कभी एक  
 भाग में उठाने पर रकने न थे। इसी में यहाँ पड़पड़ और ज  
 यस्या फैल गई और अंग्रेजी य नजीबानों का बल बढ़ने लगा।

( ३ ) दस्ताजी मिनिधरा का यध ( १०-१०-१३०० )  
 नजीबानों की मंत्रणा में प्रेरित होकर अहमदशाह अंग्रेजी  
 १३०० के अन्त में पन्नाय पर बहुत दौड़ा और यहाँ में मगलों  
 कीजा का भगा कर नीचा दुआँ में पहुँचकर दस्ताजी निधि  
 पर बार करन लगा। उस समय मन्दागार होकर जल  
 समाप्त था। इसलिए कुछ समय टहरकर अपना बचाव में  
 दस्ताजी ने पन्नायक अन्धारी का सामना करने का निधाय  
 इसका नतीजा प्रमाण का लड़का जनकाजी भी उसके का  
 इसका निधि मिनिधरा के साथ अन्य अनेक नजीबानों की  
 मिनिधरा के लिए प्राण त्याग करने में दिखने में थे। यहाँ  
 मन्दागार का अन्त नोज लाने के लिए दिया और सर्व  
 अन्धारी का सामना करने को निवृत्त। मोड़े दिनों के बाद  
 मन्दागार और काटता इन दोनों का सामना हुआ। दस्ताजी  
 का पराजय का समाप्त एक तर पर मिनिधरा और यहाँ के  
 का अन्धारी का पन्नाय पड़ा। १३ जनवरी सन् १३०० के  
 अन्धारी का नजीबानों की यहाँ पन्नाय पाकर दस्ताजी  
 का अन्धारी का जल जल। इस समय दस्ताजी उनको निधि  
 का का पन्नाय का अन्त नतीजा इन दोनों का सामना मन्दा  
 दस्ताजी का पन्नाय पड़ा। इस समय दस्ताजी अन्धारी होकर निधि  
 इसका अन्धारी का अन्त नतीजा मन्दागार का निधि। जनकाजी के

में गोली लग जाने से वह भी गिर पड़ा, लेकिन उसे लोगों ने घोड़े पर सवार कराकर भगा दिया। इस तरह सिन्धिया की पीछे हटी हुई फौज होल्कर से आ मिली। कुछ दिनों आराम करके फिर सिन्धे और होल्कर की फौजों ने मिलकर दुआवे पर अधिकार किया। किन्तु वहाँ सफलता न मिलने से ये सभी फौजें चंगल के दक्षिणी तट पर आ गईं। इन प्रकार अन्धाली ने मराठों का इतने दिनों का किया हुआ उद्योग निष्फल कर दिया। और इस समय स्वदेश वापस न जाकर वह दिल्ली के उस पार मालावाड़ के पास दुआवे में अपना घेरा डालकर बैठ गया।

(४) पानीपत का भीमरा संग्राम (१४-१-१७६१) —

ये सनावार नाना साहब पेशवा के पान पहुँचे। उस समय उनके स्वयं अहमदनगर में रहने के कारण उनकी फौजें निज़ाम पर बढ़ाई कर रही थीं। इन फौजों का आधिपत्य मद्रासिबराव को दिया गया था और पेशवा का बड़ा लड़का विदवास्तारा भी निज़ाम ने लड़ रहा था। इब्राहीम खाँ गार्दी इत्यादि तोपखाना चलाने वाले शूर सरदार मद्रासिबराव के साथ थे। इन सबों ने उद्गौर

\* गार्दी अर्थात् गान, पश्चिमी स्वच्छ मीमे हुए पैदल सिपाही बहुधा उत्तर के पञ्जाब आस पुरबिय इत्यादि जगति के लोग थे। इनमें मराठे न थे। हथियार बन्दूक और जन ( ) में ( ) घातकाम। उन्नपति रानी ने ये पदार्थ रहने महाराज में तैयार का था और उन्नपति रानी के भी काम मिलता था। इस विषय में उन्नपति ने अन्न निद्र के आदमी तैयार न कर क्या के सिवाये मुनश्चरने इत्यादि इत्यादि को अपनी मोहरी में रख लिया था। उन्नपति के कम कमनाम मिलानी देवे के लिए अनेक साहम के खान करते थे। उन्नपति ने मद्रासिबराव को मार डालने का भी उद्योग किया था।







अधाली को धन की कमी पड़ गई थी, इसलिए १९२३  
 बाद ही उसे महीने दो महीने के भीतर स्वदेश लौट जाना पड़ा।  
 वास्तविक अव्यवस्था के कारण ही मगडों का इतना संहरा हुआ  
 कौन मग और कौन बचा, इसी का पता लगाने लगाने उनके विषय  
 व्यर्थ चले गये। विद्वांसराय, सदाशिवराय तथा अन्य बड़े  
 समर्थों के मारे जाने से पेशवा को भारी धक्का लगा।  
 उसको चित्तभ्रम हो गया और पूना वापस आकर २३ जून १९२३  
 के दिन पर्यन्ती के बाड़े में उसने शरीर त्याग दिया। १९२३  
 उसकी अवस्था केवल चालीस वर्ष की थी।

यालाजी पन्त नाना, याजीराय, नानासाहेब  
 माधोराय—ये चारों पुरुष पेशवा-घराने में एक दूसरे के उभे  
 पराक्रम और कर्तव्यदर्श निकले। पहले व्यक्ति ने माधोराय  
 की जो जड़ जमाई उसके मित्र बनने का सच ने प्रयत्न किया  
 हिमाय की पद्धति मगड़ी राज्य में न चल पाई थी। उसे  
 साहय ने परिपूर्ण की। नाना फड़नवीस इत्यादि बाद की प्रवृत्ति  
 होने लगे व्यक्ति नाना साहय के समय में ही शिक्षित और  
 हुए थे। उसके बाद उसके लड़के माधवराय की जो मोल  
 का था, पेशवाई का भार संभाला गया। उसने पारंगत के  
 कार्य को पूरा किया।



१७६८ में नासिक के समीप धोडप किले के पास लड़ाई। इस लड़ाई में माधवराव ने रघुनाथराव को कैद करके दानिवार बाड़े में अच्छा प्रबंध करके रखा। यह कैद बाहर की राजनीति से रघुनाथराव को अलग रखने के लिए। इस प्रकार रघुनाथराव को ठीक ठिकाने बैठाकर माधवराव कार्य निर्विघ्न चलाते लगा। कैद में भी रहकर अनेक प्रशंसाकार्वाह्य कार्यों में रघुनाथराव ने कमी न की।

(३) बादशाही की दिल्ली में स्थापना—जब चार वर्षों में माधवराव का उद्योग निर्विघ्न रूप में बड़ी शीघ्र सफल होने लगा। नागपुर के भोंसले बहुधा मराठा-शक्ति उद्योग में सम्मिलित न होकर अपनी स्वतंत्रता उत्पन्न और मराठों के शत्रुओं से मिलकर हानि पहुँचाने के प्रयत्न को रोकने के लिए माधवराव ने नागपुर पर आक्रमण करके ज्ञानोजी भोंसले का अहंकार ढीला किया और कनकपुर में उसके साथ संधि कर आगे के उद्योग का मार्ग निश्चित किया। यह संधि माधवराव की कार्य कुशलता का चोख है। भोंसले पर गई हुई शक्ति यही से सीधा उत्तर भारत की ओर बढ़ी। इन कार्यों के साथ माधवराव ने चार मुख्य सरदार भेजे जिनके नाम महाराजी मिथिया, तुकोजी होल्कर, रामराव गणेश कानहे, और विमाजी कृष्ण शिनीयाने थे। इन सरदारों को आदेश दिया गया था कि वे उत्तर-भाग में मराठों का शासन स्थापित करें तथा करक बादशाह शाहजहाँ को शासन की दायित्व पर फिर बैठा दें और उससे पूर्व की प्रतिशत की













# ग्यारहवाँ अध्याय

## नारायणराव और सवाई माधवराव

सन १७७२-१७९५

- १—नारायणराव का वर                      २—अधेड़-मराठों का वरपंथ  
३—महाराजा-दारा शाहशाही का प्रबंध    ४—संधी की लड़ाई  
५—दोनों पक्षों की मृत्यु

( १ ) नारायणराव का वध और राज्य का हास-  
त्युनायगाव की यह इच्छा न थी कि यह स्वयं राज्य का राज्य  
करे । किन्तु माधवराव के जीने जी उसकी यह इच्छा फलफूल  
हो पाए । माधवराव ने उसका कर्ज चुका कर उसका वंशवर्ध  
दिया था । इस प्रकार यह कर वह राज्य का उद्योग बाना तो  
किन्तु शान्त की कमी न थी । लेकिन भाई-बन्धुओं द्वारा अल्प  
प्रगढ़ा गढ़ कर अपने राज्य की हानि की । वास्तव में वे  
राज्य उद्योगिक व नोकर थे, लेकिन छत्रपतियों में हम न रहने  
राज्य का भार पड़वाओं पर आ गया । यद्यपि देशों भी आने  
हा राज्य तो आ उनसे राजशासक के राज्य की दूरी कर  
करने का प्रयास हो सका । नाना साहब का सब में

१. १७७२-१७९५ नारायणराव ही काल इस समय जीवित था । ३

२. १७९५-१८१८ नारायणराव का वध प्रारंभ किया । स्वभाव का इति

अपनी बातों-द्वारा लोगों पर प्रभाव डाल कर शासन करने  
 योग्यता उसमें न थी। माधवराव के तेजस्वीपन का ही उसने  
 दुस्साहस किया। इसने अनेक लोग उससे नाराज़ या उदात्तान  
 किये। मार्च मास में यह अपनी माता से भेंट करने के लिए  
 गये। उसकी अनुपस्थिति में रघुनाथराव हैदराबादी से  
 दूरस्थ रहने लगा। उनका समाचार पाते ही नारायणराव तुरन्त  
 तम आया और उसने अपने खान्दा पर कड़ा पहरा देकर  
 दिया। इसमें उसकी पूजा इत्यादि के निरन्यनैमित्तिक कार्यों में  
 लगे रहने लगी। रघुनाथराव नियमित जीवन व्यतीत करने  
 लगे। उसका नित्य-धर्म समय पर न होने से उसने भोजन  
 बंद दिया। इसने उसकी स्त्री भी उपवास करने लगी।  
 नारायणराव धाष्ट इत्यादि कार्यकर्ताओं ने नारायणराव को पड़ी  
 प्रथा के साथ समझाया, लेकिन उसने हिम्मा की एक न सुनी।  
 उसी स्थिति में ही रात के राज्य-समय भी वाम की भी नमस्कार  
 की। उन समय रघुनाथराव और उसकी स्त्री ने अनेक लोगों से  
 दूर रह कर स्वयं बैठ न निकल भागने और नारायणराव को  
 दूर रहने का पदुच्छेद रखा। वेदों का दण्ड में गारद अथवा  
 दण्ड सीधे हुए रहने पर रहनेवाला व्यवहारों के समर्थ  
 निमित्त और मुहम्मद दुसरे की अपनी बातें मानने का  
 रघुनाथराव ने इसे लिए का दुस्साहस। १३ नवम्बर १८५०  
 को निष्पत्ति का तो ३० अगस्त १८५० का नमस्कार  
 १३ दिसम्बर के समय आगम का नमस्कार १३ दिसम्बर १८५०  
 का ही अपने घर का नमस्कार करने का नमस्कार १३ दिसम्बर १८५०  
 का ही अपने घर का नमस्कार करने का नमस्कार १३ दिसम्बर १८५०  
 का ही अपने घर का नमस्कार करने का नमस्कार १३ दिसम्बर १८५०  
 का ही अपने घर का नमस्कार करने का नमस्कार १३ दिसम्बर १८५०

भी जो उसे बचाने आये थे, मारे गये। इसके अतिरिक्त ४५ मनुष्यों का और भी गृह्त हुआ। शिव छत्रपति के गोदावरी प्रतिपालन के मत का चरितार्थ करनेवाले पेशवा के यों ही यह नर-हत्या देरा कर विचारवानों की यह धारणा हो गई कि मद्दागष्टों के अस्त का समय आ पहुँचा। इसके बाद रघुनाथ ने पेशवाई के वस्त्र लाकर दो-तीन मास राज्य का प्रबन्ध किया। इसी अवधि में गमशास्त्री ने शरको में अनुसन्धान करके निश्चय किया कि यह दुष्ट स्वयं रघुनाथराय ने करवाया। यह खबर फैलते ही लोगों में रघुनाथराय के प्रति कोपामि झुं उठी। उसने अग्रह्य हो पेशवाई के वस्त्र धारण किये थे। श्री-हत्या, शत्रु-हत्या व गो-हत्या के कारण उसे पेशवा के कार से ज्युत करने के लिए मखागम बापू ने बाहर की सड़ में लौट कर सारी कारंवाई का पता मुक्ति में लगा। और गर्मवनी गद्दावाई को पुनर्द ले जाकर जनवरी सत्र १७९५ में उसके नाम पर राज्य का प्रबन्ध करना शुरू किया। तब समय में गूर्नी अग्रगण्यियों को खोज खोज कर इन दि जाना शुरु किया गया। यह कार्य लगभग दस वर्ष तक चल चक वर्ष के बाद मुमैनिह बीमार पड़ कर मर गया। मर मुमुक तथा रघुनाथराय के दुश्मन में रहनेवाले अन्य अग्रगण्यियों को काटेज दण्ड दिया गया।

पेशवा के यहाँ वेमा गङ्गधर मुन निग्राम हैदरअली एवं की मंडला का बड़ा भानन्द हुआ। इनको पालन करने के रघुनाथराय दक्षिण को ओर गया। उसके साथ मल्हास वरिष्ठ कारवारी और हतिपंत पड़के व त्रिदकारा दे मी के बाद इन लोगों ने रायवा पर राज्य उठाया। १७९५ के दिन पंडापुर के धर्म लड़ाई हुई। इसमें त्रिद





माग गया, लेकिन हरिपन्त ने राघोबा का पीछा किया। रघुनाथ-राव भागता हुआ मालवा पहुँचा, लेकिन वहाँ सिन्धिया या होलकर ने उसे कुछ भी सहायता न दी। वहाँ से वह गुजरात पहुँचा। वहाँ सिन्धिया, होलकर और फड़के राघोबा का पीछा करते हुए पहुँचे। तब राघोबा ने सूरत पहुँच कर पेशवाई पाने की इच्छा से अंगरेजों की सहायता माँगी।

१५४ पुनर्दर में १८-४-१७७४ के दिन गङ्गाबाई की कोख से लड़का उत्पन्न हुआ। इसका नाम सवाई माधवराव रख कर कार्य-कर्त्ताओं की मण्डली ने उसके नाम से चालीसवें दिन पेशवाई के वस्त्र सत्तार के रामराजा से लाकर राज्य का कार्य भार चलाना शुरू किया। राघोबा ने आनन्दीबाई को धार में छोड़ दिया था। वहाँ ७-१-१७७५ के दिन उसकी कोख से जो बालक उत्पन्न हुआ उसका नाम सवाई बाजीराव पड़ा। रामराजा की मृत्यु १७७७ में हुई और उसका दत्तक पुत्र द्वितीय शाह गद्दी पर बैठा। राघोबा ने अंग्रेजों की सहायता माँग कर मराठों और अंग्रेजों के युद्ध का प्रारंभ किया। यह युद्ध “अंग्रेजों और मराठों का पहला युद्ध” के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है।

(२) प्रथम अंग्रेज-मराठा युद्ध—(१७७५-८२)—बंगाल और मद्रास के प्रान्तों को जीत लेने के बाद अंग्रेजों की सत्ता भारत में पूर्वी किनारे पर स्थापित होते ही उनका ध्यान पश्चिमी किनारे की ओर गया। मराठों की बढ़ती हुई शक्ति को देख और उन्हें अपना पथक समझ कर अंग्रेजों ने सन् १७७२ में मास्तिन को पूना में अपने एजेंट के रूप में नियुक्त किया। नारायणराव के बारे में जाने का काम उठाने हुए उन्होंने राघोबा को अपनी ओर मिला लिया। स. मा. ने. में आगे चल कर चार्ल्स ऐस्टिंग्स का सम्बन्ध हुआ।



विम्वर उठ खड़े हुए थे उनका भी ठीक ठीक प्रश्न कि  
इसके लिए महादजी ने फ्रेंच लोगों को नीकर रस उनमें प्रो  
मिगदियों को पाश्चात्य युद्ध-शिक्षा दिलाई और वागदाद में  
कर उनमें "यजोरी" का एक पेशवा के नाम लिया का  
पेशवा का नायक बना।

अपि दिग्गज के लिए भिन्न भिन्न सन्देश और प्रेषण  
दिल्ली में महादजी के अनुकूल हो गये थे, तथापि गुप्त काम  
महादजी के सख्ताना विम्वर थे। राजपूत और मुसलमान से  
एकत्र होकर महादजी के विम्वर पद्धति रखने लगे, क्योंकि  
का शासन राजपूतों को नहीं पसन्द था। और मुसलमानों  
लिए बंद हुए थे कि उनकी जागीरों महादजी ने जून कर ली  
किन्तु शायद लड़ाइयों में ही महादजी ने उनको शासन का  
इस मामले में महादजी के साथ अथवा ईंग्लिश, लायवा दाद  
गणस्थान स्वयंसेवक हरि, तुकोजी होल्कर और अली  
इत्यादि ने अच्छा पाकम दिया था। इनकी सहायता में  
न दिल्ली में अपना प्रबन्ध सलफता पूर्णक किया। राजपूतों  
मीन कर अतम एकर इत्यादि स्थान महादजी ने अपने  
का म किया पर मय कार्य कर यह सन १७९० की मही  
कल म पुना प्राया विषय प्राप्त कर पुना आने में उसकी  
बड़ाई हुई पुना में एक बड़ा दरबार करके बादशाह में  
लिखा और लिखित इत्यादि अपने पेशवा की अर्पित की।  
कल दिनी बाद नाला और महादजी के बीच राजकाज के  
में नाला नहीं था म। अर्थात् हरिदत्त वदके ने इन दोनों में  
मिल काम किया। इनके बाद महादजी के दुर्गम में महादजी नि  
दिल्ली तक जायित न रहा। १७९०-१७९१ के दिने  
होने पर पेशवा राजा वाजपेयी नामक स्थान में उनका



चिन्ह उठ खड़े हुए थे उनका भी ठीक ठीक प्रबन्ध बिना इसके लिए महादजी ने फ्रेंच लोगों को नौकर रख उनमें उन्हें निपादियों को पाश्चात्य युद्ध-शिक्षा दिलाई और बादशाह से यह कर उसने "पेशवरी" का पद पेशवा के नाम लिखा परन्तु पेशवा का नायब बना ।

यद्यपि दिखावे के लिए मित्र मित्र सन्धार और जीर्णोद्धार दिल्ली में महादजी के अनुकूल हो गये थे, तथापि गुप्त रूप से महादजी के सर्वथा विरुद्ध थे । राजपूत और मुसलमान ऐसे एकत्र होकर महादजी के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे, क्योंकि उन्हें का शासन राजपूतों को नहीं पसन्द था । और मुसलमानों के लिए रुठे हुए थे कि उनकी जागीरें महादजी ने ज़प्त कर ली थीं किन्तु दो चार लड़ाइयों में ही महादजी ने उनको पराजित कर दिया । इस मामले में महादजी के साथ अंबाजी इंगले, लखवा दादा साहेब राणेखान, खंडेराव हरि, तुकोजी होल्कर और अली खाँ इत्यादि ने अच्छा पराक्रम दिखाया । इनकी सहायता में मराठों ने दिल्ली में अपना प्रबन्ध सफलता पूर्वक किया । राजपूतों की ओर से अजमेर, पुष्कर इत्यादि स्थान महादजी ने अपने कब्जे में किये । यह सब कार्य कर वह सन् १७९२ की गर्मी में पुनः पुना आया । विजय प्राप्त कर पुना आने में उसकी सहायता हुई । पुना में एक बड़ा दरबार करके बादशाह से शरण ग्रहण और स्थिरावन इत्यादि उसने पेशवा को अर्पित की । कुछ दिनों बाद नाना और महादजी के बीच राजकाज के मामले में नाना तर्जनी हो गई । लेकिन हरिपत पट्टे ने इन दोनों में मेल करा दिया । इसके बाद मराठाओं के दुर्दैव से महादजी भी कुछ दिनों तक ज़ायिन न रहा । १७-२-१७९४ के दिन वह मर पाईवन होकर यानवड़ी नामक स्थान में उसका दे



















पैयों को परान्त करने का ही अभिप्रेत था। उन्हीं के  
 युद्ध में जनरल नेक और दक्षिणके युद्ध में जनरल वेनेज़ली  
 अंग्रेज़ी फौजों के मुख्य सेनापति थे। अगस्त सन् १८०३ में वेने-  
 जली ने अहमदनगर के जिले पर अधिकार कर लिया। इधर  
 गुजरात में अंग्रेज़ी फौजों ने भद्राचल नगर ले लिया। सिन्धु  
 नाम में बसाहट नगर में बड़ी घनामान लड़ाई होने के बाद  
 वेनेज़ली ने सिन्धिया को परान्त किया। अन्य फौजों ने अर्ना  
 नद व हुग्लानपुर भी सिन्धिया से ले लिये और बंगाल की फौजों  
 ने भोमले के कटक नगर पर अधिकार कर लिया। उत्तर में  
 जनरल नेक ने अलीगढ़ और दिल्ली की सिन्धिया की फौजों को  
 हराकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अतः वृद्ध मुगल  
 एदशाह शाहजालम अंग्रेज़ों के अधीन हो गया। बाद को लास-  
 बादीने फिर घनामान लड़ाई हुई और सिन्धिया की फौजों पर  
 नेक को विजय मिली। इधर बंग में चरगांव में सिन्धिया  
 और भोमले की सम्मिलित फौजों को वेनेज़ली ने फिर हराया।  
 पूरे बंग नहीं ले लिये के बाद अंत में सन् १८०३ के डिसेम्बर  
 मास में देवगांव में अंग्रेज़ों और भोमले की संधि हुई। इसकी  
 शर्तें ये थीं—(१) बर्धा नदी के पश्चिम ओर का बंग-प्रान्त व  
 कटक-प्रान्त भोमला अंग्रेज़ों को दे (२) निज़ाम के ऊपर जो  
 एक है उसको भोमला छोड़ दे (३) अन्य राजवाड़ों के साथ  
 झगड़ा खड़ा होने पर जो निर्णय अंग्रेज़ करें वह भोमला स्वीकार  
 करें और (४) अंग्रेज़ों का रेज़िडेंट नागपुर में रहे। इस प्रकार  
 की संधि अजुनगांव में सिन्धिया के साथ अंग्रेज़ों ने की। वह  
 यह थी—(१) गंगा-यमुना के बीच का भूभाग और दक्षिण के कटक



गोम ही फर्नखाबाद में फिर हार जाने से होलकर वापस आया और लेक ने भरतपुर पर घेरा डाला (१८०५)। इसके बाद भरतपुर के राजा ने अंग्रेजों के साथ संधि की। इतने में ही गवर्नर जनरल वेलेज़ली स्वदेश को वापस चला गया और उसकी जगह पर लार्ड कार्नवालिस आया। मराठों के साथ चलने हुए युद्ध अंग्रेजों को नहीं पसंद आये। इसलिए कार्नवालिस ने होलकर के साथ एकदम संधि करके युद्ध बन्द किया। इस युद्ध में हार जाने के दुःख से यशवंतराव होलकर निधिल हो गया और वही वह सन् १८११ में मर गया। यशवंतराव बड़ा पराक्रमी और शूर था।

---



यह स्वभाव से ही डरपोक और कपटी था। उसने अपना इच्छा में अंग्रेजों ने सहायता न ली थी। उसका भ्रम था कि राघोबा को जैसी सहायता अंग्रेजों ने की थी, उन्नी प्रकार वे मेरी भी सहायता करेंगे, अथवा पेशवाई के मिल जाने पर वे निकल जायेंगे। लेकिन वसई में लिखी हुई संधि ने उसका यह भ्रम दूर कर दिया। यद्यपि बाजीराव राज्य का कार-बाग करने में विलकुल अयोग्य था, तथापि उस समय जिस नीति में अंग्रेज लोग काम ले रहे थे उसके सामने चतुर नीतिज्ञ पुरुष भी न टिक सकता था। क्योंकि अपने राष्ट्र में सब ओर से इतनी दुर्घटना आ गई थी कि अंग्रेजों के प्रभाव के सामने उसका टिकना सम्भव न था। अधिक से अधिक इतना ही सम्भव था कि यदि चतुरता से काम लिया जाता तो १०-१५ वर्ष और भी चलता, लेकिन उसका पतन आगे-पीछे अवश्यम्भावी था।

बाजीराव और अन्य रजवाड़ों के बीच जो झगड़े खट्टे होते, उनका निर्णय करना अंग्रेजों ने प्रारंभ किया। इसमें गायकवाड़ और बाजीराव का वाद बहुत दिनों चला। उसका फैसला करने के लिए गंगाधर शास्त्री पटवर्धन अंग्रेजों की मर्यादकता में पूना आया (सन १८१६)। उसके जीवन की जिम्मेदारी अंग्रेजों ने ले रखी थी। पूना में बाजीराव और गंगाधर शास्त्री पंढरपुर गये। एक दिन वहाँ गंगाधर शास्त्री का मृत्यु किया गया। त्रिंबकजी डोंगले नामका एक व्यक्ति बाजीराव का बड़ा कृपा-पात्र था। उसने बाजीराव के कहने पर यह हत्या की थी। अंग्रेजों को यह बात विदित होने पर उन्होंने त्रिंबकजी को अपनी अधीनता में करने के लिए बाजीराव से उसे माँगा। बाजीराव ने पहले तो उसका पता ही न दिया, लेकिन अन्त में उसने त्रिंबकजी को अंग्रेजों के हवाले कर दिया। अंग्रेजों ने उसे हवालानामे में बन्द कर दिया।





अंग्रेजों के साथ जो युद्ध किया इससे उनकी अधीनता में रह कर जो छोटा सा राज्य उसे मिला था वह भी उससे छिन गया। स्वयं जिस प्रकार सिंधिया और होलकर के राज्य दीख रहे हैं, उसी प्रकार एक छोटा सा राज्य पेशवा का भी आज बचाव दीख पड़ता।

अंग्रेजों ने त्रिविक्रम डोंगल को पश्चिम चुनार के जिले में बंद कर दिया। वहीं उसकी मृत्यु हुई। पूना के अंग्रेजी राजदूत एलफिन्स्टन ही अंग्रेजों द्वारा जीते हुए प्रदेश का शासन करने के लिए नियुक्त किया गया। उसने पेशवा के दरबार में आनेवाले सरदारों को उनकी पहले से मिली हुई जागीर, वार्षिक वसूल और जिनको जो जो पेंशने मिलनी थी वे सब ज्यों की त्यों वापस रखी। इससे पेशवा दृष्टने का दुःख किसी को न खला और सम्मान के साथ रहने के लिए उनका प्रयत्न हो गया। शाह, देवरघान, धर्मादा इत्यादि कुर्बं जिन तरह पेशवा के समय में दिये जाते थे, उसी प्रकार एलफिन्स्टन ने भी वापस रखवा और देश में शान्ति तथा सुप्रबन्ध स्थापित किया। इसी में एलफिन्स्टन की कासि का महाराष्ट्र लोग गान करते हैं

(२) भोमले और होलकर के साथ युद्ध (सन १८१७)

राजाराव को सहायता देने के लिए नागपुर के भोसले और होलकर ने उद्योग किया था। होलकर के दरबार में बड़ा बुझबुझ था। दशरंजराव का दण्ड एक मलहारराव ताला उग्र का था और गैरजवान बड़े प्रचल हो गये थे। यह चेज राजाराव के सहायता करने के लिए जिस समय मारा गया कि वह जल गया, उसका सामना बर्जल मातंग और 'हमरा' ने किया। इस लड़ाई में होलकर की शक्ति हार गई। (सन १८१७)







उमई की लड़ाई में सेनापति बिंदकराव दामाडे मारा गया। अतः दामाडों का गुजरात का काम गायकवाड़ को दिया गया। इसी प्रकार अधिक उद्योग करके इन्होंने गुजरात में अधिक देश जीता। उमई की सुलह होने के पूर्व अंग्रेजों की तैनाती फौज को स्वीकार कर गायकवाड़ों ने अंग्रेजों का सार्वभौमत्व स्वीकार किया। गायकवाड़ों के घराने में पहले सदाजीराव (मृत १८१९-४३), गणपतराव (मृत १८४३-५६), खण्डेराव (१८५६-७१) और मल्हारराव (मृत १८७१-७५) ने क्रम से राज्य किया। वर्तमान सदाजीराव मृत १८७५ में गद्दीनशीन हुए और अपने घराने की प्रतिष्ठा अने प्रकार से गढ़ित किये हुए हैं।

गायकवाड़ों की तरह ही सिन्धिया के घराने में जयजीराव और उनका लड़का माधवराव बड़ा प्रसिद्ध हुआ। जयजीराव सिन्धिया, मुकोजीराव होलकर और खण्डेराव गायकवाड़ परस्पर समकालीन थे और अंग्रेजी अलमदारी में प्रधान समझे जाते थे। माधवराव सिन्धिया मृत १९२५ में मरा और उनका लड़का जार्ज जयजीराव गद्दी पर है।

(५) मराठा-गद्दी के छम्प होने के कारण—मृत १६६४ में शिवाजी ने मराठों का स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। यह लगभग १५० वर्ष रहकर अस्तमय हो गया। इस काल में राज्य व्यवस्था में अनेक रोग फैले हुए। प्रायः में शिवाजी का इस राज्य स्थापन में क्या उद्देश था और इसमें किस प्रकार विकास हुआ, ये बातें ऊपर नहीं लांछि समझा दी गई हैं। शिवाजी जानता था कि राज्य प्रजा के पालन के लिए होता है मगर लोग कहने और सुनने के लिए नहीं। यह लोगों का मुख देने का एक माध्यम है प्रजा का पालन-पोषण करना ही राजाओं का मुख्य कर्तव्य है उसने किसी स्थापना-स्थापन के लिए यह सब स्थापन नहीं किया



[illegible]









am

am

( 2000000 )

am

am

( 2000000 )

am

am ( 2000000 )

am

( 2000000 )

am ( 2000000 )

( 2000000 )

( 2000000 )

am

( 2000000 )

(1001-1111) Elizabeth

(i)-(iii) Chittenden

(b) (5) DPP

11-15-19

(1)

1

100

1

15

**SECRET**

Abbildung 1.1: Die drei Hauptbestandteile

Die drei Hauptbestandteile sind:

1. Die Basis (Fundament) - Das Fundament bildet die Grundlage für alle weiteren Konstruktionen.

2. Die Säule (Stütze) - Die Säule trägt die Lasten der darüber liegenden Konstruktion.

3. Die Decke (Dach) - Die Decke schließt das Bauwerk nach oben ab und schützt vor Witterungseinflüssen.

Die Basis ist das Fundament.

Die Säule ist die Stütze.

Die Decke ist das Dach.

Die Basis ist das Fundament.

( १ ) विद्यमान आस्थापना

दिवानो

अध्यास सार

( मूल १९१४ )

प्रत्यक्षिण अथ सार

( मूल १९२५ )

मार्ग प्रकाश

# शाल्लोपयोगी-भारतवर्ष

१९०५

१९०५

महाराष्ट्र-प्रदेश विमिश्रित, मद्रास







केंची के साथ दूसरा पुत्र ५५५  
कलकत्ते का काल ५५५  
जानी की लुपारी... ५५५

जेनिंग्स का सामन्य	...	...	...	४३
कदम की योग्यता ...	...	...	...	४८
लार्ड हेल्डिंग्स के शासन काल के युद्ध...	...	...	...	४९
हैदर अली की उन्नति	...	...	...	५०
पहला मैसूर-युद्ध...	...	...	...	५१
दूसरा मैसूर-युद्ध...	...	...	...	५२
हैदरअली के सन्धु और उनकी योग्यता	...	...	...	५३
हेल्डिंग्स की योग्यता	...	...	...	५४
हेल्डिंग्स के कामों की जाँच...	...	...	...	५६

### पंचम अध्याय

#### कार्नेवालिस और सर जान शोर

अन्त और पिट के दिव	...	...	...	५८
कार्नेवालिस	...	...	...	६०
पहला मैसूर-युद्ध	...	...	...	६१
कार्नेवालिस का सामन्य-सुधार	...	...	...	६४
सामन्य शोर ..	...	...	...	६५
कार्नेवालिस में वादविवाद	...	...	...	६७

### छठा अध्याय

#### लार्ड वेल्डोली

वेल्डोली के समय की परिस्थिति	..	...	...	६८
वेल्डोली की सामन्य-नीति ...	...	...	...	७०
पहला मैसूर-युद्ध	...	...	...	७२
महाराज मेना का राजदरों में भेजना	...	...	...	७५
राज्यों की ज़मीनी ..	...	...	...	७७



दसवीं अध्याय  
नार्ड जस्टीस और एलिनरी

रिजिस्ट्रार ऑफ...	...	...	...	114
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	115
रिजिस्ट्रार ऑफ...	...	...	...	116
रिजिस्ट्रार ऑफ...	...	...	...	117

दसवीं अध्याय  
नार्ड जस्टीस और एलिनरी

नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	118
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	119
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	120
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	121
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	122
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	123
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	124
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	125
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	126
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	127
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	128

दसवीं अध्याय

नार्ड जस्टीस और एलिनरी

नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	129
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	130
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	131
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	132
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	133
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	134
नार्ड जस्टीस ऑफ...	...	...	...	135



































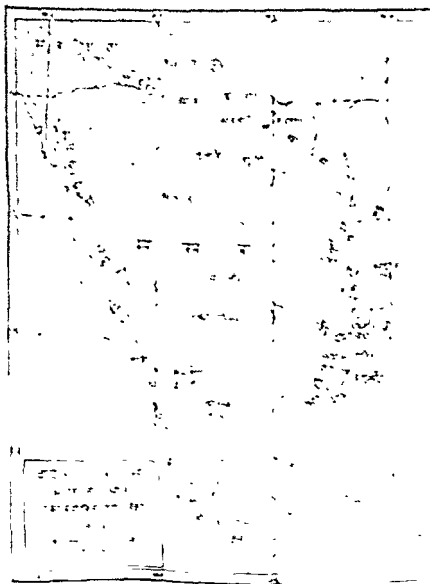


















थे उनको गिरा देने के लिए और मृत्युदार्ता में कोई विदेशी व्यक्ति युद्ध की तैयारी न करे—इस प्रकार की आज्ञा मिराजुद्दौला ने लिखकर अंग्रेजों के पास भेजी ( सन् १७५६ ) । कलकत्ते के गवर्नर डेक् माहय ने किम्पनदास के मामले में कोई जवाब न देकर दीवार बनाने के सम्वन्ध में यह लिख भेजा कि हमने कोई नई बात नहीं की है । जो पुर्तगी दिवारें थीं, केवल उन्हीं को मरम्मत की है । इस मामले में यही लिखा-पढ़ी के बाद शांति में झगड़ा मिटना न देख मिराजुद्दौला ने नागाज होकर एक बड़ा फौज लेकर कलकत्ते के अंग्रेजों पर चढ़ाई की । उस समय अनेक अंग्रेज छिप-छुकर हरद्वारी-नदी में खड़े जहाजों पर बैठ कर भाग गये । बाद को मिराजुद्दौला ने किले पर अधिकार कर लिया । वहाँ अंग्रेजों के सजाने में अधिक धन न मिला । यह देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ । लड़ाई में १४६ अंग्रेज कैद किये गये थे । संख्या के समय ये लोग शराब पीकर नशे में एक दूसरे से दंगा करने लगे । इस लिए रात भर इनको एक कोठरी में बंद रखने का आवश्यकता पड़ी । भाणिकचंद नाम के एक आदमी को ये अंग्रेज कैदी मापे गये थे । उसने इन कैदियों को जेल की एक २० फुटवाली चौगुन कोठरी में बंद कर दिया । इस कोठरी में एक छोटा दरवाजा छोड़ कर हवा के आने का अन्य कोई मार्ग न था । जिन महीने की कड़ा गर्मी पड़ रही थी । इन कैदियों को कोई पानी देनेवाला तक न था और रात्रि के समय किसी ने इनकी मृत्युदार्ता तक खबर भी न की । सवेरे दरवाजा खोलने पर देखा तो केवल २३ आदमी अधमरे मिले । यह घटना इतिहास में “ कलकत्ते की काल कोठरी ” के नाम से प्रसिद्ध है । वास्तव में यह दुर्घटना हुई या नहीं, इस सम्वन्ध में अभी मतभेद है । जिन कैदियों को नवाब ने



*[A page from a manuscript showing musical notation on staves.]*

[illegible]













उसके पास सहायता भेजी। उस समय क्लाइव ने मीरजापुर से बादशाह को कुछ धन दिलवा दिया। इसके बदले में बादशाह ने क्लाइव को ११ हजार का मनसब और अनौर की उपाधि दी। इस समय भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में हलचल मच रही थी। क्लाइव की इच्छा थी कि बङ्गाल में कम्पनी अपना राज्य स्थापित करे और इस प्रयत्न के लिए वह सन् १७६० में दूसरी बार स्वदेश गया। लेकिन भारत में राज्य-स्थापन करने का उसका विचार उस समय अंग्रेजी सरकार को नहीं रुचा।

(२) मीरफ़ासिम, (सन् १७६१)—क्लाइव के बाद चेन्नि-टाई बङ्गाल का गवर्नर हुआ। मीर जाफ़र की शासन-समस्याओं शिकायतें सुनकर वह स्वयं मुर्शिदाबाद गया। वहाँ उसने भली भाँति जाँच करके मीरजाफ़र को गद्दी से उतार दिया और मीर फ़ासिम नामक उसके दामाद को बङ्गाल का नवाब बनाया। मीरजाफ़र पर अंग्रेजों का अत्यधिक क्रोध बढ़ गया था। वह सब मीरफ़ासिम ने दे डाला और यदवान, चटर्गाँव और मेदनापुर कुल ५० लाख की आमदनी का राज्य कम्पनी को दिया। मीरजाफ़र कलकत्ते में जाकर रहने लगा।

इसी बीच में बादशाह शाहजालम और अवध के बज़ीर नवाब गुजाऊल्ला ने बंगाल पर दूसरी चढ़ाई की (सन् १७६१)। उस समय फ़ासिम ने अंग्रेजों की सहायता से बादशाह को परास्त किया। कारनक नाम का एक अंग्रेज फ़ौज का सेनापति था। उसने बादशाह को पटना में लाकर उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। एक बड़ा दरबार किया गया। इस दरबार में मीरफ़ासिम ने बादशाह को नज़र दी और बादशाह ने उसे नगदी की पशाक दी। बादशाह यह चाहता था कि अंग्रेज लोग मुझे



उसके पास सहायता भेजी। उस समय क्लाइव ने मीरजाफ़र से बादशाह को कुछ धन दिलवा दिया। इसके बदले में बादशाह ने क्लाइव को ११ हजार का मनसब और अनौर की उपाधि दी। इस समय भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में हलचल मच रही थी। क्लाइव की इच्छा थी कि बङ्गाल में कम्पनी अपना राज्य स्थापित करे और इस प्रयत्न के लिए वह सन् १७६० में दूसरी बार स्वदेश गया। लेकिन भारत में राज्य-स्थापन करने का उसका विचार उस समय अंग्रेज़ी सरकार को नहीं रहा।

(२) मीरकासिम, (सन् १७६१)—क्लाइव के बाद वेन्सिटार्ट बङ्गाल का गवर्नर हुआ। मीर जाफ़र की शासन-सम्वन्धी शिकायतें सुनकर वह स्वयं मुर्शिदाबाद गया। वहाँ उसने भली भाँति जाँच करके मीरजाफ़र को गद्दी से उतार दिया और मीर फ़ासिम नामक उसके दामाद को बङ्गाल का नवाब बनाया। मीरजाफ़र पर अंग्रेज़ों का अत्यधिक फ़र्ज़ बढ़ गया था। वह सब मीरफ़ासिम ने दे डाला और बर्दवान, चटर्गाँव और मेदनापुर कुल ५० लाख की आमदनी का राज्य कम्पनी को दिया। मीरजाफ़र कलकत्ते में जाकर रहने लगा।

इसी बीच में बादशाह शाहआलम और अवध के बज़ीर नवाब शुजाउद्दौला ने बंगाल पर दूसरी चढ़ाई की (सन् १७६१)। उस समय फ़ासिम ने अंग्रेज़ों की सहायता से बादशाह को परास्त किया। कारनक नाम का एक अंग्रेज़ फ़ौज का मनापति था। उसने बादशाह को पटना में लाकर उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। एक बड़ा दरबार किया गया। इस दरबार में मीरफ़ासिम ने बादशाह को नज़र दी और बादशाह ने उसे नवाबी की पशाक दी। बादशाह यह चाहता था कि अंग्रेज़ लोग मुझे





मुर्ती की आगमनी कम हो गई। उनमें अंग्रेजों की बहुत बुरा समझाया, परन्तु अंग्रेजों ने उसकी तक न मनी। अन्तिमपर हाकर उसने अपने राज्य में सभी स्थानों पर मुर्ती केना पकड़ने पद का दिया। इसमें अन्य व्यवहारियों को जो बहिष्कार भी था वह हो गई और उनका व्यवहार भी बन्द निबन्ध। लेकिन अंग्रेज व्यवहारियों को इसमें होंनेवाला लाभ पद हो गया। अब कारखानों की कार्यवाही ने यह प्रकट किया कि नगर को वह पद करने का कार्य अधिकतर हा नहीं है। इस बात को लेकर दोनों पक्षों में समझा देने करने लड़ाई की औरत आ गई। पटना में अंग्रेजों की कोठी का मुस्लिम उस समय मुस्लिम था यही दंगाल के सुरुवात का रोज। देर भी था। उनमें पटना राज्य और फिर पर पता डाला। उस समय कलकत्ते में हरिद्वारों में भी वह का नाव पटना जा गई थी। उन सब की मोरकारिमि न मुंसिर में लान का लिया और अंग्रेजों में काला भजा कि पालिस का हमे नारा तो ये नाव तुम्हें वापस का लाना, पर बात अंग्रेजों ने न मनी। यह बात उनके मास्करामन ने सभी अंग्रेजों को पकड़ने की आवाज दी। उस समय उनके पास उनके यहां में आ गया। इस कलकत्ते की कार्यवाही ने एक प्रस्ताव लाना। मास्कारिमि को पदच्युत किया और उनके जगह में वह मास्कारिमि के मुर्शिदाबाद में न जाकर मुददा पनावा। उन सब १७९१ : अंग्रेजों के आने हा मास्कारिमि अपने सब बहिष्कार का साथ लेकर दूसरे स्थान पर चला गया। बाद की कारिदा नमक स्थान में वही पनावा लड़ाई हुई। इनमें मास्कारिमि का गया अकृषक में मुंसिर गहर अंग्रेजों ने ले लिया। इसमें मास्कारिमि



की आशा मुसलमानों में न रह गई। बंगाल अब सत्य तरह से अंग्रेजों के अधिकार में आ गया।

(४) क्लाइव की व्यवस्था (१७६५-६७)—गवर्नर वेन्सिस्टार्ट का कार्यकाल समाप्त हो जाने और अन्य कोई योग्य व्यक्ति न मिलने के कारण कम्पनी के डायरेक्टरों ने क्लाइव को वेन्सिस्टार्ट की जगह पर तैनात करके भेजा। उस समय क्लाइव ४० वर्ष का था। उसकी इच्छा थी कि बंगाल-प्रान्त पर अपनी सत्ता कायम करके उसका उचित प्रयत्न करे। लेकिन कम्पनी के डायरेक्टरों ने उसे इस काम का अधिकार न दिया। कम्पनी के नौकरों में घृत्तरोगी, भेद इत्यादि लेना, मौज करना और उहड़ना का व्यवहार करना इत्यादि दुर्गुणों का प्रवेश हो चुका था। क्लाइव ने भागन में आने पर यह दुरवस्था सुधारने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन उस समय उसे अपने काम में विशेष सफलता न मिली। क्लाइव ने दो मुख्य सुधार किये। एक कम्पनी और अंग्रेज नौकरों में सम्वन्ध रखनेवाला और दूसरा बंगाल का शासन-सम्वन्धी सुधार।

(अ) कम्पनी के नौकरों के सम्वन्ध में क्लाइव ने तीन कड़े नियम बनाये—(१) कम्पनी के नौकर अपना निजी व्यापार न करें। (२) पैसें और अन्य नौकरों को लड़ाई के समय का भत्ता अर्थात् अधिक वेतन न दिया जाय। (३) कम्पनी का नौकर न झराना, धूम इत्यादि बिलकुल न ले। इन मामले में तत्कालीन सभी नौकरों के अत्यन्त पतित और नीति-व्यर्थ हो जाने से सारी व्यवस्था बिगड़ गई थी। इस व्यवस्था को सुधारने का हा प्रयत्न क्लाइव ने किया था। धन हटाने की आदत जिन नौकरों का पड़ गई थी उन्हें वे पाने अच्छी न लगी। आतङ्क जमाने के लिए

अनेक नौकरों ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। ह्वाय में इनके इस्तीफे मंजूर किये और विद्रोहियों को कलकत्ते भेज दिया। लौटों में अंग्रेज सिपाहियों ने बग़ायन की। इनकी बग़ायन को ह्वाय में देशी सिपाहियों की मदद से शांत किया। मीर कासिम के नाराज़ होने का एक-मात्र कारण कम्पनी के नौकरों की यह धन हड़पने की आदत ही थी।

(आ) बङ्गाल का शासन—इस प्रांत का मालिक बादशाह और उसकी ओर से सूबे की रक्षा करनेवाला सूबेदार था। इनमें सूबेदार और बादशाह को हराकर अंग्रेजों ने यह प्रांत लिया था। लेकिन शासन की बागडोर को खुदमबबुला अपने हाथ में रखने की इच्छा कम्पनी के दारोगरों की न थी। इसलिए अपना प्रमुख कायम रखकर वहाँ की आमदनी अविशिष्ट-रूप में भेजे के लिए बादशाह, सूबेदार और उनका सहायक अवध का नवाब परज़ार—इन तीनों के साथ अलग अलग संधि का एक ही मौकल में इन तीनों को बाँधने और फिर कमी एक दूसरे में न मिलने देने के लिए उक्त संधि में निम्न लिखित शर्तें रखी गई थी—

( १ ) बङ्गाल के सूबेदार के साथ की हुई संधि—मीर जाफ़र बुद्धा होकर मार चुका था। उसके स्थान पर कम्पनी ने उसके लड़के निज़ामुद्दीन को बैठाया था। उसका कार्य-भार सम्भालने के लिए महम्मद रज़ाख़ां को मुशिंद्दाद में और राजा मितावराव को पटना में तैनात किया। इन दोनों को मालगुजारी और शासन सम्बन्धी सभी काम सौंपे गये। सूबेदार को स्वयं के लिए ५० लाख रुपये सालाना दिया गया और बाँकी की मालिक कम्पनी बनी। इसमें से ५० लाख रुपये स्वयं करके प्रांत की रक्षा के लिए राजा रखने का प्रबंध हुआ। इन प्रकार बार करोड़ की आम-

दनों का बङ्गाल-प्रान्त अंग्रेजों को मिला। इसमें से दो करोड़ को बचन ब्राह्म ने कम्पनी के लिए रखी।

( २ ) अरध के नवाब बर्ज़ार के साथ दुइरा ने इलाहाबाद जाकर यह निश्चय किया कि ( अ ) कम्पनी के विरुद्ध अकारण लड़ाई छेड़ने के लिए ५० लाख रुपये दण्ड के रूप में बर्ज़ार कम्पनी को दे। ( आ ) कड़ा और इलाहाबाद के सूबे वह बादशाह को सूच्य के लिए दे। ( इ ) अरध-प्रान्त में कम्पनी के व्यापार पर अंग्रेजों में चुट्टी न ली जाय। ( ई ) काशी का राजा बलबन्तसिंह, जो अब तक अरध के नवाब बर्ज़ार का मानहत्त था और जिसने उसके विरुद्ध अंग्रेजों को मदद दी थी, नवाब बर्ज़ार की मानहत्ती में न समझा जाय। इस तरह यह बर्ज़ार भी बादशाह से अलग होकर कम्पनी को सत्ता के अधीन हुआ। इस विषय में बाद को उसे बड़ा पध्यान्ताप हुआ। लेकिन उसके पास इस गल्ती के सुधारने का कोई उपाय न था।

( ३ ) बादशाह के साथ सन्धि और दुइरा सामन (दी इषल गवर्नमेन्ट)—( अ ) पहले बङ्गाल-प्रान्त में बादशाह को एक करोड़ रुपया मिलता था। उसके बदले में २६ लाख रुपया कम्पनी ने बादशाह को प्रति वर्ष देना स्वीकार किया और कड़ा व इलाहाबाद के प्रान्त उसे दिये गये। इतनी हा आमदनी से बादशाह अपना सूच्य चलावे। ( आ ) बंगाल के सम्पूर्ण प्रान्त की दीवानी अर्थात् मालगुजारी वसूल करने का अधिकार बादशाह अंग्रेजों को दे। निज़ाम का उत्तरी मरफार प्रान्त भी अंग्रेजों ने उस समय जीत लिया था। वह भी अंग्रेजों के कब्जे में रहे। ( ई ) इसके बाद किसी राजा के साथ कम्पनी झगड़ा न करे। ( १०-८-१७६५ )।

इन सब संधियों के अनुसार जो व्यवस्था बंगाल के शासन



# लार्ड क्लाइव के पश्चिम ब्रिटिश भारत

















ਦੀਪੁ ਲੁਧਿਆਣਾ















संशोधन

नैपट किया और ललित  
यह फाक्स इस मन्त्र  
इस मन्त्रविद का नाम  
लिखित पाते थे—

(१) नगर वरं नर  
भारत का सर्वप्रथम  
कराया जाय, और नगर  
न रहे। (२) नगर  
समिति खोली जाय, और  
हो। (३) कर्मन्त्र  
कर्मन्त्र नाम नर  
की देखभाल को

उपर्युक्त मन्त्रों  
सब काम ले लिए जाय  
क्योंकि राजा नर  
लगानेवाले नर  
थी, इसलिए नर  
कवल जनमानस  
फाक्स का मन्त्र  
अपने पद से नर  
नाम का एक नर  
वना जो नर  
फाक्स के नर  
मन्त्र को नर  
नर मन्त्रिण

गजवाड़ों के कार्यों में  
न ही प्रयत्न करना।  
गसन में दो मार्के की  
शासन-सुधार।

२०-२२) —मंगलोर  
न पर चढ़ाई करके  
उसके साथ युद्ध

उस समय टीपू  
म को देने का  
(२) ब्रावन-  
में टीपू और  
मालाबार में  
र या केरल  
के राजे इसी  
उ समय तक  
जमा लिया था।

॥ मार्तण्ड वमां  
मन १७७६ में हैदर  
र ब्रावनकोर को भी  
न अंग्रेजों ने ब्रावनकोर  
टीपू के विरुद्ध बाद  
न ली इसलिए टीपू  
थ कि कोर्चीन का  
गान्य के दो

टीपू के अधीन था, उस ज़मीन से कोर्बान-गञ्ज के दो गहरे  
 इन गञ्ज से नमाले गए। इनो समय जब कि कोर्बान की गञ्ज  
 को छोड़ते-वाले युद्ध में उससे नष्टपाना हो। इसलिए टीपू  
 के गञ्ज को अपने पास में मिलकर टीपू के विरुद्ध गढ़  
 अपने अधीन करना चाहता था लेकिन अंग्रेजों ने गढ़नकोर  
 ने जीतकर अपने अधीन कर लिया। हैदर गढ़नकोर की भी  
 ने स्वतन्त्र किया। लेकिन कोर्बान-गञ्ज की सन् १७९६ में हैदर  
 गढ़नकोर गञ्ज की सन् १७९९ में गढ़नकोर मानवद्ध गढ़  
 पुनर्गठ और उस ज़मीन से अपना अधिकार उभार लिया था।  
 काल-गञ्ज के बंधन है। इन गञ्जों पर कुछ समय तक  
 के गञ्ज में थे। वर्तमान गढ़नकोर और कोर्बान के पुरे इसी  
 एक दूसरे में मिल चुके थे। पहले ये दोनों गञ्ज बेर या कोरन  
 अंग्रेजों में असन्तोष उत्पन्न हुआ। ये दोनों गञ्ज मालबार में  
 कोर और कोर्बान गञ्जों के मामले के सम्बन्ध में टीपू और  
 विचार किया। यह बात टीपू को अच्छी न लगी। (२) गढ़न-  
 के अधिकार में था। अंग्रेजों ने उसे लेकर निजाम को देने का  
 (१) कानिफ में गालाबार नाम की गन्त उस समय टीपू

काल के निम्नलिखित कारण थे—

अपनी दो कि अधिक वहां ली थी। उस समय उसके साथ युद्ध  
 की संधि के बाद टीपू सुल्तान ने गंजौर के देश पर चढ़ाई करके  
 (३) तीसरा मैसूर-पुर्त (सन् १७९०-९२)—मालबार

गान है। (१) तीसरा मैसूर-पुर्त और (२) गालन-सुधार।  
 उसने सान वर्ष तक गालन किया। उसके गालन में दो भाग की  
 हस्तक्षेप करना और न अधिक देश जीतने की ही प्रयत्न करना।  
 उससे कह दिया गया था कि न दो देशों राजाओं के कारणों में



करझनूर और आयकोर खरीद लिये और वहाँ अपनी किलेबंदी की। इसी कारण कोचीन के राजा ने थावनकोर के विरुद्ध युद्ध छेड़ा और उसकी सहायता करने के लिये टीपू भी थावनकोर पर चढ़ दौड़ा। सन् १७८९ में २९ दिसम्बर को उसने थावनकोर राज्य में प्रवेश किया। स्थान स्थान को जलाता, लूटपाट मचाता और लोगों को कैद करता हुआ यह देश को जीतने लगा। इसलिए अंग्रेजों ने भी अपने मित्र थावनकोर राज्य की मदद के लिए टीपू के विरुद्ध हथियार उठाये। भारती माण्डविक राजाओं को उनके संरक्षकों से छुड़ाकर अपने मित्राने के अंग्रेजों के उद्योग का खुलासा इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है।

तीन शक्तियों का मेल ( सन् १७९० )—सन् १७८९ टीपू ने थावनकोर पर हमला किया। अतः गयनर जनरल ने युद्ध की तैयारी करके मराठों और निज़ाम के साथ सन्धि की ( सन् १७९० )। इस सन्धि में यह बात निश्चित की गई कि स मिलकर टीपू से युद्ध करें, और जो कुछ लाभ इस युद्ध के अंत में हो उसे आपस में बराबर बराबर बाँट लें। बिना किसी मदद लिए टीपू को जीतना अंग्रेजों के विचार में शक्य न था। इसीलिए उन्होंने मराठों और निज़ाम को भी टीपू के विरुद्ध स्वहा किया। ( १ ) लड़ाई ( सन् १७९० )—जनरल मेडो मराठा लेकर मद्रास की ओर से मैसूर-राज्य में घुसा। लेकिन टीपू ने उसे परास्त कर दिया। उसकी एक टोली को तोर्ट ने घिराकर ही तहस-नहस कर दिया। इनने में ही बर्माई अ बहल्ल की सेनारों भी आ गई। ( २ ) लड़ाई ( सन् १७९१ )—गयनर जनरल स्वयं युद्ध में आया। उसने मद्रास

अधिकार कर लिया और श्रीरंगपट्टन पर चढ़ाई की। निजाम की १०,००० सेना ने उत्तर-मैसूर में अच्छा काम किया। मराठों की फौज परशुराम भाऊ पटवर्धन व हरिपंत फडके के साथ धारवाड़ पर चढ़ाई करने लगी। टीपू के उन मजबूत किले को लेने में मराठों को बड़ी देर लगी। इधर कर्मबालिस के साथ आरिकेर में टीपू का बड़ा घनघोर युद्ध हुआ। इस लड़ाई में टीपू की हार हुई ज़रूर, लेकिन उससे कुछ अधिक लाभ कर्मबालिस को न हुआ, क्योंकि उनकी सेना में जंग्र का कमी पड़ गई और गेन फेल गया। इधर मराठा-फौज को न आता देख कर्मबालिस मद्रास को लौटने लगा। ऐसे कठिन अवसर पर मराठों की फौज आ पहुँची। उन समय के जानन्द को प्रकट करने के लिए गवर्नर जनरल ने तोपें दगवाईं। मराठों ने अपनी मारी सामग्री जंग्रों को दे दी। नाना फडनवीस ने यह युद्ध शुरू किया था। अब: महापट्टनतिहास में इस युद्ध का महत्व विशेष है। ( ३ ) नड़ाई ( मर १७९२ ) तीनों निजों ने अपनी फौजों की व्यवस्था करके श्रीरंगपट्टन पर घेरा शरू दिया। उन्होंने टीपू के राज्य को ध्वंस कर दिया। इनके साथ युद्ध न कर सकने पर टीपू ने मंघि की शर्तचीन शुरू की। अब: श्रीरंगपट्टन में दोनों पक्षों के बीच जो मंघि हुई उसकी शर्तें निम्न लिखित हैं :—

( १ ) टीपू अपने राज्य का आधा भाग तीनों गवर्नों को दे। ( २ ) युद्ध में जो घन लगा है उसे दूर करने के लिए टीपू तीन करोड़ रुपये दे। और ( ३ ) अपने दो लड़कों को ज़मानत के रूप में जंग्रों को दे। इस प्रकार मंघि की शर्तों के अनुसार काम करने पर युद्ध घट्ट किया गया।



(४) कार्नेवालिस का गामन-सुधार—(१) पचासवीं सदी के लोगों का धर्म लेना, सरकारी धन को खर्च जाना इत्यादि बातें बंद करने के लिए कार्नेवालिस ने कठोर नियम बनाये गये। कर्मचारियों की वेतन-वृद्धि हुई। (२) पहले जिलों में कलकत्ता ही तहसील-तहसील का काम करते थे, साथ ही अदालत में न्याय का भी काम करते थे। इसमें जो अन्याय होता था उसे बंद करने के लिए उगने कलकत्तों में न्याय का काम न लेकर नये न्यायाधीश प्रत्येक जिले में नियत किये। बंगाल प्रान्त में उमरे अदालत करने की चार अदालतें स्थापित की। (३) पचासवीं सदी के फौजदारी कानून में कुछ सुधार कर उसे बंगाल में लागू किया। यह कानून "कार्नेवालिस का कोड" कहकर पुकारा जाता है। (४) इस्लामगरी बंदोबस्त के लिए कार्नेवालिस का नाम इतिहास में विशेष प्रसिद्ध है। अकबर के समय में बंगाल में जमींदारी की प्रथा प्रचलित थी। इससे सरकारी भूजमी मालगुजारी बंद बंद जमींदारों की मारपीत बगल काफ़ी थी। इस प्रथा से जन-संख्या और ज़मीन में तो अवश्य प्रगति होती थी लेकिन इसी परिमाण में सरकारी मालगुजारी न बढ़ पाती थी। क्योंकि फिर इसमें कोई हेरफेर न होता था। ये जमींदार यज्ञ-याचना के अनुसार राजा बहू का पुकार करते थे, एवं १७८३ में कलकत्ता में इस मामले के सम्बन्ध में हुए अजर्ज मीठी थी। इसके अनुसार इस मामले का इज्जती निर्णय करने के बाद से कार्नेवालिस ने निम्नलिखित प्रणाली स्थापित की—

(१) जमींदार जमीन के इज्जती स्वामी है। इसकी ज़मीन उनके नाम दर्ज होगी। (२) सरकार एक बार मालगुजारी के लिए इच्छा करता है—

लुगुजारी स्थिर कर देगी। यह निश्चित भालगुजारी ज़मींदार  
तक़र देते हैं। इसमें सरकार आगे कभी फेर-फार न करे। यह  
स्ताव इंग्लैंड में स्वीकृत हुआ और भारत में सन् १७९३ की २१  
जून को प्रजा में प्रकाशित किया गया। परिसराम—इस क़ानून  
का लाभ-हानि क्या हुई? इस सम्बन्ध में लोगों का बड़ा मन-भेद  
। यदि कहा जाय कि एक प्रकाश में भारत का कल्याण हुआ  
तो इसमें कोई हानि नहीं। इन्तनगरी बन्दोबस्त से ज़मींदार लोग  
ख़ुशी हुए। ये लोग ज़मीन के सदा के लिए भालिक बन गये।  
सरकार का काम केवल उनकी रक्षा करना रह गया। इस सिद्धान्त  
को मान लेने पर लोगों को अपने धर्म का पूरा पूरा फल  
मैलने लगा। लेकिन किसानों पर अन्याय हुआ और सरकार की  
समदर्नी की वृद्धि मारी गई। किसानों पर ज़मींदारों का अत्या-  
चार रोकने के लिए सन् १८०९ में और १८८२ में बङ्गाल टेनेसी  
एक्ट और बङ्गाल लैंड एक्ट बने।

( ५ ) सर जान शोर ( सन् १७९३-९८ )—कौंसिल के  
जवाबद सर जान शोर को अपना पदाधिकार सौंप कर कार्ने-  
वालिस स्वयं लैंड गया और सर जान शोर की तैनाती उस  
पद पर स्वीकृत हुई। अन्य राज्यों के शाहदों में न पड़ और लड़ाई  
में लड़कर शान्ति के साथ शासन का काम चलाने के लिए  
उसमें, कहा गया था। इस अज्ञात का उसने अक्षरशः पालन  
किया। मराठों और निज़ाम के साथ कार्नेवालिस ने स्थायी  
सन्धियों की थीं। सन् १७९५ में मराठों ने लड़ाई की लड़ाई में  
निज़ाम के साथ युद्ध कर उसकी बड़ी हानि को उस युद्ध में  
निज़ाम ने अंग्रेज़ों से सहायता माँगी। लेकिन सर जान शोर ने  
उस सहायता देने में स्वीक़र किया। अब उसी समय न

निगम का मन अंग्रेजों की ओर से मिला हो गया और उन्हीं फौजों ने मित्रता करने की कोशिश की। इस दोष का भार जान शोर बनाया जाता है। उसने पक्का विचार कर लिया था कि जब तक कम्पनी के राज्य को कोई हानि नहीं पहुँचती तब तक अन्य किसी के मामले में यह हाथ न डालेगा। उसके शासन काल में दो घटनाएँ मार्को की हुईं उनमें एक बङ्गाल के धर्म में समन्वोध है। भारत में फौजें अंग्रेजों की थीं। उन पर स्थापित दो पक्षों का था। कुछ पलटने कम्पनी की थीं और कुछ ब्रिटिश सरकार की थीं। कम्पनी की पलटने काम करके ब्रिटिश सरकार की को अंग्रेजसदाधिकारी बढ़ाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त धर्म मित्रताओं का ध्यान भी कम था। इसलिए ध्यान बढ़ाने के लिए इन पक्षों ने अपनी माँग पेश की। यह पूरी न हुई। हमने उन्होंने बागी हो जाने की धमकी दी। मगर उन जनता का चरक्रमधी की मदद से यह बगावत गेली। दूसरी है अन्ध ब्राह्मण वक्तीर का मामला—अवध के नयाब वक्तीर आसफ़ुद्दीन ने अंग्रेजों की सहायक सेना अपने यहाँ रक्की थी। इस सेना के लिये उसे ५० लाख रुपये सालाना देने पड़ते थे। इसकी हदसे या इस बहुत कम का देने के लिए नयाब वक्तीर आग्रह कर रहा था। कानूनवादिम ने राज्य का सुप्रबन्ध करने के लिए इस रकम में ३० लाख रुपये घटा दिए। लेकिन न कम्पनी का। इसकी मूल्य मन २५०० में हुई। बाद को उस दानी-दुब वक्तीरचाली अंग्रेजों द्वारा मारा पर कैदना गया। कुछ निकला। इसलिए इस पदस्थित करके मूल नयाब के। मगर उन प्रती के आग में बंधि करके अंग्रेजों ने उसे मारा बिटला। इस बंधि के अनुसार मगर उन प्रती ने सहायक।

का फिर ७६ लाख रुपये देना स्वीकार किया और उस सेना के रहने के लिए इलाहाबाद का किला भी दिया ( सन् १७९८ ) । इस नई व्यवस्था से वजीरखली को बड़ा दुःख हुआ । बाद को उसने बगावत करके बड़ा गड़बड़ किया ।

( ६ ) पार्लामेंट में वाद-विवाद ( १७९३ )—बारेन हेस्टिंग्स के समय में कौंसिल और गवर्नर जनरल के बीच अनेक मत-भेद हुए थे और उनके कारण झगड़े भी उठ खड़े हुए । इन झगड़ों को फिर कभी न होने देने के लिए कौंसिल की राय के विरुद्ध अपने निजी उत्तरदायित्व पर काम करने का अधिकार गवर्नर जनरल को देने के लिए पार्लामेंट में एक कानून बना ( सन् १७८५ ) । जब गवर्नर जनरल शासन के कारबार का ज़िम्मेदार है तब उसे घैसा करने का पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए । इस नीति के माने जाने पर ही कार्नेवालिस ने गवर्नर जनरल का पद स्वीकार किया था । इसी प्रकार सन् १७९३ में कम्पनी को जिस समय आशा-पत्र दिया गया उस समय बड़े कड़ों की यह सब पार्लामेंट में हुई थी और कम्पनी का व्यापार पर जो एकाधिकार था वह इस बार छिन गया । प्रत्येक व्यक्ति को ८ हजार कौड़ी तक व्यापार करने का अधिकार मिला । भारत में ईसाई-मत और शिक्षा का प्रचार करने की आशा अनेक लोगों ने माँगी थी, लेकिन पार्लामेंट ने आशा न दी । क्योंकि वेस कार्या से भारत में लोगों के चित्त के दुःखित होने की आशंका थी । सन् १७९८ में सर जान शोर का कार्यकाल समाप्त हुआ और वह स्वदेश वापस गया । वहाँ उसे नार्थ टेन्मथ की उपाधि मिली ।

# छठा अध्याय

## लार्ड वेलेज़ली

३० म० १७९८-१८०५

- १—वेलेज़ली के समय में भारत की अवस्था      २—वेलेज़ली की नीति  
३—चीना में मूत-युद्ध      ४—महायुद्ध मेला का प्रचार  
५—राज्यों की ज़रूरी      ६—हिंदी राजनीति  
७—बिनाई और योग्यता

( १ ) वेलेज़ली के समय की परिस्थिति ( म० १७९९ )—प्रथम-देश में बड़ी विकसित राज्य-शक्ति हो गई। वेलेज़ली ने चीन में बड़ी हस्त-क्षेपण हो गया था। नेपोलियन की ताकत का घटने का बादशाह बन गया था और उसने सारे यूरोप में राज्यों का ज्ञानना शुरू किया था। यह अंग्रेजों ने भी देख रखा था। यह वह भी समझता था कि भारत में अंग्रेजों की प्रभावशाली शक्ति बिना उनका सफल नहीं हो सकता। गिज़ेन में अंग्रेजों ने फ्रेंच लोगों को भारत में हथ दिया था। यह बात नेपोलियन के मन में गहक रही थी। अतः वेलेज़ली ने जो न्यायवादी राज्य उस समय तक भी सोचें बहुत दिके हुए थे। नेपोलियन ने सन्धि की। टीपू सुल्तान तथा अंग्रेजों ने सम्झौता बहा हो गया। टीपू सुल्तान नेपोलियन को म

यता लेकर अपनी हार का बदला अँग्रेज़ों से लेना चाहता था। निज़ाम को भी जब अँग्रेज़ों ने छोड़ दिया तब उसने १४ हजार फ्रेंच सिपाही अपनी फ़ौज में रखे थे। मराठों का पेशवा जिस समय कमज़ोर और चंचल हो रहा था उस समय महादजी ने भी अपनी फ़ौज को यूरोपीय ढंग से युद्ध की शिक्षा देने के लिए फ्रेंच अफसर नियुक्त किये थे। दिल्ली का सारा राज-काज उस समय सँधिया के हाथ में था। पेरोन नाम का फ्रेंच सिपाही सँधिया की फ़ौजों का प्रधान सेनापति था। उसी प्रकार यह अफ़वाह भी फैल रही थी कि टीपू का मेल अफ़ग़ानिस्तान के अमीर ज़मानशाह से है और टीपू उसे भारत पर आक्रमण करने के लिए बुला रहा है। इधर कलकत्ते का खज़ाना खाली था। इससे फ़ौजें अस्तन्वुष्ट थीं। ऐसे कठिन समय में जिस पुरुष ने भारत में अँग्रेज़ों की गिरती हुई दशा को संभाल कर उसे फिर से उठाया और सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने राष्ट्र का प्रभाव भारत में स्थापित किया उसकी नीति, धैर्य, चानुर्य और दृढ़संकल्प की प्रशंसा सभी अँग्रेज़ करते हैं। भारत में ग़ज़वाड़ों के परस्पर व्यवहार अनिश्चित रहने से अँग्रेज़ राजपुरुषों को समय के अनुसार उनके साथ व्यवहार करना पड़ता था। इस नीति को नष्ट कर सभी ग़ज़वाड़ों को अपने वंश में करके भारत का सार्वभौम एक प्रबल आधार पर स्थापित करने का निश्चय कर वेल्लेज़ली ने उसको अमल में लाना शुरू किया। इसीलिए "भारत में अँग्रेज़ों के सार्वभौम राज्य का स्थापक" के नाम से वेल्लेज़ली इतिहास में प्रसिद्ध है। इसके शासन में दो बातें स्पष्ट दीख पड़ती हैं, पहली तो भारतीय ग़ज़वाड़ों के शासन में सम्यन्ध रखने वाली बात, दूसरी भारत में बाहर के राज्यों के साथ नीति स्थिर करने वाली बात। इन दोनों का खुलना यहाँ पर किया जायगा।



हो। बगलाना ' बृहद्देशीय विचारों को पालनो को सुयोग्य  
 पूर्णता प्राप्त देकर देखा कर लिया था। ये पूर्णता पर ही  
 कार्य है। यह को देशी राजाओं में धन लेकर अपनी राज्याद  
 संस्था हुई थी। उनके पास करने का काम धारण हेमिन्ग्वे ने  
 कर दिया। लेकिन इस मामले में जिन जिन राज्यों का मानना  
 होने परों के लिए आवश्यक था उन राज्यों को सहाय्य रूप से  
 निर्दिष्ट कर उनका प्रचार सभी देशों राज्याओं में करने का काम  
 हेमिन्ग्वे ने किया और लार्ड हेमिन्ग्वे ने उसे समझा दिया। य  
 नारे थे हैं—

१—इन राज्यों को सम्बन्धित अंग्रेजों को सार्वभौम समर्थ  
 और अपने को उनका माण्डलिक राजा मानें।

२—य लोग किसी से मनमाने रूप से न तो युद्ध करें और  
 न संधि करें। उनके आदर्श अंग्रेजों का जो पैसला अंग्रेज करें  
 वही व मानें।

३—अंग्रेजों के यूरोपीय राज्यों को कोई देशी राजा अपने  
 राज्य में नौकर न रखे और न उनके साथ किसी प्रकार का  
 सम्बन्ध ही रखे।

४—सहायक सेना का वनन समय पर बढ़ने के लिए, उत्तर  
 रुद्ध को पूरा करने के लिए, उनका ही आभारनी का भुगतान देशी  
 राज्य अपने राज्य में से अंग्रेजों को दें।

५—अंग्रेजों का उत्तरत बढ़ने पर जहाँ और जिस समय व  
 वह सहायक सेना उनका हो जाय।

६—इस प्रकार इस सहायक सेना का पद्धति का पालन  
 न जाय किया अंग्रेजों में इस पद्धति का सञ्चाहिकारी  
 मिस्टर ... कहने हैं इसकी सहा



यता से अंग्रेजों का स्वार्थ भी अधिक न हुआ और एक बड़ी व्यापक इच्छाओं ने तैयार कर ली। इस कीज के साथ अक्सर अंग्रेजों के और उनको संगत भी सीधा अंग्रेजी सरकार से मिलता था। अंग्रेजी राज्य की स्थापना भारत में इसी पद्धति के आधार पर हुई है, भव. यह पद्धति बड़े मार्कों की है।

( ३ ) श्रीवाधेपुर-युद्ध ( सन् १७९९ )—बेलेज़ली के शासन में दो बड़े युद्ध हुए। पहला टीपू के साथ और दूसरा मराठों के साथ। मराठों के साथ जो युद्ध बेलेज़ली ने किया उसका वर्णन तृतीय भाग के चारहवें अध्याय में दिया जा चुका है। वहीं वंग टीपू के साथ किये गये युद्ध का हाल दिया जाता है।

( अ ) युद्ध का कारण और तैयारी—जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारत में क्रैमों का शासन उभर चुका था उस समय टीपू को मरु कर क्रैमों का मूलोत्पत्ति करने में तैयारी तब तक में बड़ी अच्छी तरह की। उसने अंग्रेजवालों को भी अपने पक्ष में मिलाने का प्रयत्न किया। इस पक्ष के निज़ाम के पास जो क्रैम कीज थी उसे अलग बाधा तब तक तब तक न अपनी सहायक सेना निज़ाम के यहाँ निरुद्ध कर दी। इस काम में निज़ाम के दीवान मर्जीदमुशक ने अंग्रेजों को अच्छी मदद मिली। इस तरह टीपू के पक्ष में निज़ाम निज़ाम जान पर टीपू का पक्ष हलका हो गया। मोघिया के मोघिया के पास भी क्रैम कीज थी। व लोग अंग्रेजों के पक्ष में न मिले। कच्छ वेतना ने सहायता देने का वचन दे दिया। अंग्रेज निज़ाम के तमाम राज्य में टीपू की थी। इसके अनुसार यह भी युद्ध शुरू हो

गया। यह युद्ध करने लगा था। क्रैम सजा टीपू की मदद के

के लिए मारिशस के द्वीप से मङ्गलोर आ पहुँची। उस समय गवर्नर जनरल लुइस मद्रास जा पहुँचा। युद्ध की तैयारी होती देख टीपू ने प्रकट में अंग्रेज़ों के साथ मित्रता दिखाकर और भी अधिक सेना आने की आशा में वह उस समय चुप रहा। वेल्लेज़ली ने यह मौका ठीक समझ कर टीपू से सहायक सेना की पद्धति स्वीकार करने के लिए कहला भेजा। उसे टीपू ने न स्वीकार किया। अतः टीपू का जवाब मिलते ही गवर्नर जनरल ने उसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की और जनरल हेरिस को २० हजार सेना का सेनापति बना उसे २०० तोपें देकर मैसूर पर चढ़ाई करने को भेज दिया।

( आ ) संग्राम. टीपू की मृत्यु—इस युद्ध में बड़ी लड़ाइयाँ नहीं हुईं। टीपू ने अब की बार यह पक्का इरादा कर लिया था कि या तो मैं जीतूँगा या लड़ाई में मरूँगा। युद्ध भी अधिक दिनों तक न चला। पहले स्टुअर्ट के साथ जो फौज बम्बई से आ रही थी उस पर टीपू ने हमला किया। लेकिन उसका हमला असफल हो गया। इसके बाद उसने मद्रास की सेना पर हमला किया ( सन १७९९ )। इस लड़ाई में गवर्नर जनरल के भाई आर्थर वेल्लेज़ली ने बड़ी वीरता दिखाई। यहाँ भी टीपू को वापस लौटना पड़ा। इतने समय में हेरिस ने बड़ी युक्ति से अपना फौज एकत्र शोरङ्गपट्टन के सामने ला खड़ी की। इसमें टीपू बिल्कुल डर गया। ३ अप्रैल को हेरिस ने किले को घेर लिया। ३ मई को अंग्रेज़ों के पास की सामग्री चुर गई। इसलिए एकदम हमला कर देने के अलावा उनके पास कोई दूसरा उपाय न रह गया। ऐसे मौके पर जनरल थेपर्ड ने लड़ाई का बिगुल

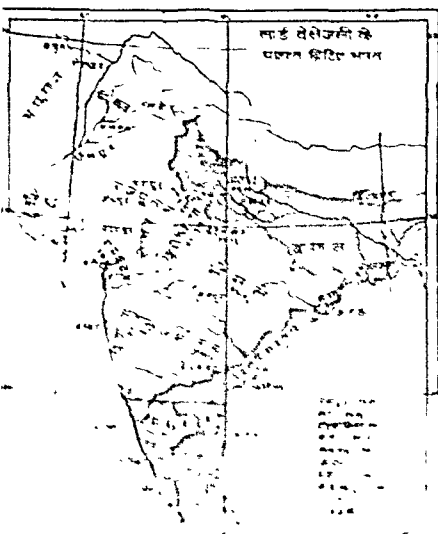


में बाँट लिया। टीपू के कुटुम्ब को ९ लाख रुपये सालाना पेंशन देकर उसे बेलोर में रखने का प्रयत्न हुआ। जिस संधि के अनुसार ये सब काम हुए उस संधि को “मैसूर की विभाग-कारिणी संधि” कहते हैं (सन् १७९९)। टीपू के चतुर दीवान पूर्णय्या को अंग्रेज़ों ने कृष्णराज का दीवान तैनात किया। पूर्णय्या ने अपने काम-काज को बड़ी सावधानी से चलाया।

( ३ ) मैसूर के राज के साथ संधि (१७९९)—(१) यह राज्य-दान कृष्णराज को दिया गया है। राजा अंग्रेज़ों की सहायक सेना अपने पास रखे। उसका एर्च चलाने के लिए ३० लाख रुपये दे। (२) यह रफ़्तक समय पर न मिलने पर राजा को अपने राज्य की उतनी आदमनी का भूभाग अंग्रेज़ों को देना पड़ेगा।

( ४ ) सहायक सेना का रजवाड़ों में भेजना—( १ ) निज़ाम ने सहायक सेना किस प्रकार अपने यहाँ रखी, इसका वर्णन पहले दिया जा चुका है। ( २ ) गायकवाड़—निज़ाम के समान ही बग़ैठ सरदारों के साथ भी सहायक सेना-सम्वन्धों संधि करने का गवर्नर जनरल ने प्रयत्न किया। सन् १८०२ में बाजीराव ने अंग्रेज़ों के साथ बर्सा की संधि की थी। इससे कुछ ही दिन पहले खम्मयत या खम्मात में गायकवाड़ ने अंग्रेज़ों के साथ संधि की और उनकी सहायक सेना अपने यहाँ रखी। लेकिन गायकवाड़ और पेशवा का जीवन अल्पकालिक था। सन् १७६८ में दमाजी गायकवाड़ का मृत्यु हो गई। उसके मरने ही उसके लड़के गोविन्दराव, मयारजीराव, पन्तहमिंदराव















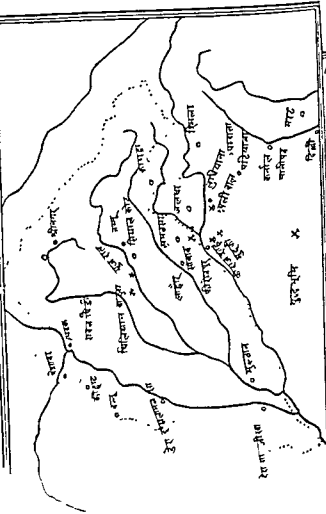
महर्षि मिह











गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ों का स्थान। यह नक्शा भारत के उत्तर-पूर्व हिस्से में स्थित है।





कंसलरींग कम्पनी के विरुद्ध था। कम्पनी का यह कहना था कि भारत में जीना हुआ देश कम्पनी का है। यहाँ यह जैसा माल की परिपाटी चाहे वैसी वह माल कर सकती है और कम्पनी के सहायता के बिना भारत का काम-काज ठीक ठीक चलाने में कठिन है। लेकिन कम्पनी के इस कथन का सम्मान वहाँ की प्रधान मंडली ने अक्षरशः कर दिया। इस तरह छ मास तक यह सब हो चुकने के बाद नीचे लिखी बातों पर जो भीम वर्यो के लिए कम्पनी को नवीन आश-पत्र दिया गया—

( १ ) कम्पनी-द्वारा जीते हुए राज्य का स्वामित्व राजा से कम्पनी का एक समान समझा जाय। ( २ ) कम्पनी के पत्र की अवधि अगले बीस वर्ष तक बढ़ा कर मौकर-याकों के नियुक्ति का काम उसके हाथ में दिया जाय। ( ३ ) भारत चाहे जो व्यक्ति व्यापार कर सकता है, परन्तु चीन से व्यापार का अधिकार एक-मात्र कम्पनी को है।

सन् १८१३ में भारत में ईसाई-धर्म का प्रचार करने का प्रस्ताव मंजूर हुआ और कलकत्ते को धर्म-पीठ में एक दिया। नियुक्ति हुई। सन् १८१३ में लार्ड मिण्टो का कार्य-काल समाप्त हुआ और उसके स्थान में लार्ड हेम्टिंग्स का तैनाती हुई। हेम्टिंग्स का नामन हर तरह से प्रशंसनीय समझा जाता है।

( ४ ) लार्ड हेम्टिंग्स, ( सन् १८१४-२२ )—यह सब जनरल बड़ा अनुमोद और पुरस्कार समझा जाता था। जिस में यह ईश्वर में था राज्य-गृह के लोभ में भारतीय राजाओं अंग्रेजों के राज्य उठाने के काम का यह बहुत विरोध करना। बंगाल के जयों को अन्यायपूर्ण बना कर हमने उनकी नी की थी और जिस समय यह बिलायत से भारत के लिए।

हुआ, उस समय इसकी इच्छा शान्ति के साथ भारत में शासन करने की थी। किन्तु यहाँ आने पर इसका निश्चय बिलकुल बदल गया। यहाँ तक कि इसकी भी गिनती उन्हीं लोगों में होने लगी जिनका विरोध वह पहले किया करता था। प्रजा के हित के लिए इस गवर्नर जनरल ने दो काम किये—(१) भारतीय प्रजा को सुशिक्षित बनाने के लिए इसने एतद्देशीय शिक्षा की पाठशालायें खोलीं। और (२) छापेखाने तथा समाचार-पत्रों को प्रोत्साहन देकर चाहे जिस विषय को प्रकाशित करने की आज्ञा दी।

(५) नैपाल-युद्ध (सन १८१४-१६)—लार्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में युद्ध अधिक हुए हैं। पिंडारियों और मराठों के साथ युद्ध करके उसने लार्ड वेलेज़ली का अधूरा काम भी पूरा कर दिया। इन युद्धों का हाल महाराष्ट्र-इतिहास में दिया जा चुका है। इन युद्धों के अलावा उसने एक दूसरा युद्ध नैपाल के साथ भी किया। (अ) नैपाल का पूर्व वृत्तान्त—भारत के उत्तर हिमालय के दक्षिणी ढाल पर नैपाल नाम का एक उपजाऊ प्रान्त है। आठवीं सदी में भारत में वैदिक धर्म का फिर से प्रचार हुआ। इसलिए वैदिक धर्म का उत्तर और दक्षिण की ओर हटना पड़ा। उस समय गंगा-यमुना के किनारे के मठों को छोड़ बौद्ध हिमालय-पर्वत के प्राकृतिक शोभा से भरे स्थानों में जा बसे। तिब्बत में लासा उनका मुख्य धर्म स्थान बना। नैपाल के दक्षिण में हिमालय के नीचे एक बड़ा लम्बा-चौड़ा वन है। उसके आगे एक मैदान है, जिसमें दलदली भूमि है। इस मैदान को तराई कहते हैं। नैपाल में मुसलमानों की बस्ती नहीं है। वहाँ पहले छोटे छोटे राज्य थे। उनका नाश होकर वहाँ

तीन प्रबल राज्य थे। १७६३ ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज्य था। उसी को ईस्ट इंडिया कम्पनी नेपाल का नेवार राजा कह कर पुकारती थी। ये नेवार लोग खेती और व्यापार से अपना जीवन बिताने थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी का व्यापार नेपाल के साथ अच्छा होता था। कम्पनी के व्यापारी तिब्बत से बंगाल में सोना लाते थे। काश्मीर में गारखे नाम के लड़ाके लोग रहे थे। उन्होंने सन् १७६७ में नेपाल पर द्रव्य और राज्य के मोह से चढ़ाई की। उन्होंने काठमांडू के राजा को हरा दिया। इस राजा ने अंग्रेजों से मदद माँगी। अंग्रेजों ने कुछ फौज भी भेजी लेकिन परसात के दिन थे, इसलिए जो फौज यहाँ गई, वह तपान में मटक गई तथा सिपाही भी बीमार पड़ गये। उन योद्धों को रोग ने मार डाला। इसलिए इस फौज को वापस लौटना पड़ा। पृथुनारायण गोरखों का सरदार था। इसे “महाराज” कह कर लोग पुकारते थे और इसके साथ भारदार कहलाने थे। इन भारदारों की सहायता से पृथु नारायण ने नेवारों को जीत लिया और नेवार-राजा और इसके सरदारों को भी मार डाला। उनकी सम्पत्ति जप्त करते अपने भारदारों में पृथुनारायण ने बाँट दी। इसके बाद उसने सन् १७६७ से स्वयं काठमांडू में राज्य करना शुरू किया। राज्य के शासन के काम में राजा की मदद करने के लिए इन भारदारों की एक समझौदा थी। नेपाल को स्वर्ण फौज बाँट दी गई थी। वह प्रति वर्ष बदल जाती थी। प्रति तीन वर्ष बाद वह लोग फिर सैनिक बनाये जाते थे। इस तरह १२ हजार को वेतन मिलता, पर ३६ हजार सैनिक राज्य की रक्षा

के लिए सदा तैयार रहने थे। जिस प्रकार भारत में दशहरा का उत्सव बड़े ठाठ से होता है, उसी प्रकार यहाँ पंजाबी का मेला होता है। इसी अवसर पर नई फौज की तैनाती और सरकार के सब पुगने नौकर बदल कर नये तैनात किये जाते। सारांश यह कि प्रत्यक्ष महाराज को छोड़ कर प्रति वर्ष सब कुछ बदल दिया जाता था। इस शासन-पद्धति को ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि सरदारों की सम्मति से शासन चलाने की यह प्रथा पूर्व देशों में से इसी एक देश में मिलती है।

सन् १७७१ में पृथुनारायण की मृत्यु हुई। तब उसका लड़का रणबहादुर केवल एक वर्ष का शिशु था। उसको लोगों ने गद्दी पर बैठा कर उसके चाचा को उसका संरक्षक तैनात किया। इस चाचा के मन में राज्य हड़पने की इच्छा पैदा हुई। इसलिए इसने रणबहादुर को अनेक घुरी घुरी बातें सिखाईं। इस समय गोरखों की फौजें काश्मीर, भूटान, शिकम और तिब्बत इत्यादि देशों को जीतने में लगी थीं। इन लोगों ने लासा का पवित्र देवालय लूट लिया। इस बात पर नाराज होकर चीन के बादशाह ने ७० हजार फौज नेपाल पर भेजी, उस समय घबरा कर गोरखों ने अंग्रेजों से मदद माँगी। लेकिन उस समय गोरखों और अंग्रेजों में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा चल रही थी, इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें कोई मदद न दी। चीन की फौज ने गोरखों को हरा दिया और प्रति वर्ष कर देने का वादा नेपाल के राजा से लेकर वह चीनी फौज अपने देश को वापस चली गई। बाद को रणबहादुर ने बड़े होकर अपने चाचा को क़ैद किया और सब राज-काज अपने हाथ में ले लिया (सन् १७९५)। यह रणबहादुर बड़ा कर

पुरुष था। उसको दामोदर पांडे नाम के एक सरदार की सहायता से नेपाल के लोगों ने काशी भेज कर देश निकाले दण्ड दिया।

काशी में रणबहादुर का लाईं घेलेज़ली ने बहुत सत्कार और उसके स्वर्ण के लिए भी बहुत सा धन दिया। उसके एक चतुर अंग्रेज़ नौकर रख दिया। यही अंग्रेज़ दूत बन काठमांडू के दरबार में रणबहादुर की ओर से बात-चीत करने को गया। इस अंग्रेज़-दूत ने नेपाल-दरबार के सामने यह पेश की कि जो धन अंग्रेज़-सत्कार ने रणबहादुर को दिया वह अंग्रेज़ों को वापस मिले और रणबहादुर को अच्छी पेंशन जाय। लेकिन इससे कुछ लाभ न हुआ। बाद को रणबहादुर नेपाल वापस गया। वहाँ उसकी हत्या हो गई।

(घा) युद्ध के कारण—गोरखे लोग अपनी राज्य-सीमा दक्षिण की ओर बढ़ाने लगे। उन्हें इस काम से रोके जाने के लिए बालों और मिष्टी ने बड़े प्रयत्न किये। लेकिन गोरखों ने एक न मानी। पछले २० वर्षों में गोरखों ने लगभग दो सौ गाँव ब्रिटिश राज्य-सीमा से ले लिये। यह बात हेस्टिंग्स को विदित हुई तब उसने पहले भीज भेज कर भुटान शहर ले लिया। यह खबर जब काठमांडू पहुँची तब दरबार में यह विचार होने लगा कि अंग्रेज़ों से मेल करना चाहिए या नहीं करना ठीक है। अंत में लड़ने का निश्चय हुआ और युद्ध की तैयारी गोरखों ने कर ली। उन्होंने पहले भीज भेज कर भुटान पर अधिकार कर लिया। यहाँ के अंग्रेज़ अफसर और पुलिस १८ लोगों को जान से मार डाला। हेस्टिंग्स ने यह समा

पाते ही युद्ध-घोषणा कर दी। गोरखों का सामना करने के लिए सतलज-नदी की घाटी से कर्नल जिलेस्पी को भुटवल की राह से, बुड को पश्चिम की ओर से शिमला की राह से, प्रधान सेना-पति आस्टरलोनी को और जनरल माले को काठमांडू पर भेजा इस प्रकार उसने चारों तरफ से नेपाल पर चढ़ाई की।

( ६ ) पहली लड़ाई ( सन् १८१४-१५ )—जनरल जिलेस्पी कलुंग किले पर हमला करने समय गोर्खा से भाग गया और उसके ५०० सिपाही घायल हुए ( ३१-१०-१८१४ )। दिल्ली से मदद लाकर कर्नल माँचे ने जिला लेने का प्रयत्न किया। लेकिन उसके साथ के भी ६०० ५०० लोग मारे गये और उसे वापस आना पड़ा। उसकी जगह पर जनरल मार्टिन्डेल तैनात हुआ और उसने जयठक स्थान लेने की कोशिश की। लेकिन वह भी सफल न हुआ। जनरल बुड की सेना की भी यही दशा हुई। जनरल माले तो और भी अधिक कमजोर हो गया। काठमांडू पर हमला करने के लिए वह जिस समय मौका देख रहा था उन्ना समय गोर्खों ने उसकी भारी पीछ काट डाली और उसकी तोपें वगैरह सब सामान छीन लिया। उसकी मदद के लिए दूसरी पीछ आई। उसका भी कोई उपयोग न हुआ। अगले मई के दसरी सन् १८१६ के दिन वह छिप कर दानापुर की ओर भागा। केवल आस्टरलोनी का दृष्टा का मोटा बहुत सफल मिली। उसने सन् १८१५ की १८ वीं अप्रैल को गोर्खा का एक बड़ा मजबूत किला छीन लिया। इस किले का नाम माल्दीन है। वह उसका धीरे से नारति अनगन्त काठमांडू गया।

# आठवाँ अध्याय

## लार्ड एमहर्स्ट

सन १८२३-२८

१—ब्रिटिश सत्ता की अवस्था में अंतर

२—पहला बामी युद्ध

३—जाट लोगों से युद्ध

४—युद्ध का नतीजा

(१) ब्रिटिश सत्ता की अवस्था में अंतर—सन १८२३ के जनवरी मास में लार्ड हेमिंग्स वापस गया और लार्ड एमहर्स्ट गवर्नर जनरल बना। जिस समय यह आया उस समय यहाँ शांति थी। लार्ड हेमिंग्स के समय में मराठों का राज्य अंग्रेजों को मिल जाने से भारत का बहुत बड़ा भूभाग उनके अधिकार में आगया था। भारत के एक एक करके सभी देशी राज्यों के अंग्रेजों के अधिकार में धीरे धीरे गले जाने की बातों पर ध्यान देने से बिदिन हागा कि सन् १७५५ से ब्रिटिश सत्ता का प्रारम्भ हुआ। पहले तीन वर्ष अर्थात् १७५५-५६ तक ब्रिटिश सत्ता यहाँ के अन्य राज्यों की आशा अधिक दुर्बल रही। योरेन हेमिंग्स के समय में यह बिदिन शक्ति अन्य राज्यों के समान प्रयत्न होगा। यह समान अवस्था ३० वर्ष तक चली १७७५-१७७६ तक रहा। अंग्रेजों के समय में यह बिदिन सत्ता सर्व-नाम शक्ति बन गई। यह बिदिन शक्ति मिलनेवाली थी कि अंग्रेजों का उस समय में और बिदिन के अन्य राज्यों में प्रधान

पद मिलने में उन्हें और ५०-५५ वर्ष लग गये ( १८०४-५० ) ।  
 इस पिछले काल में (१) मराठे, राजपूत और मुसलमान राजाओं  
 पर ब्रिटिश सत्ता की सार्वभौमिकता का प्रभाव पूरी तौर से  
 जन गया । (२) बाहर के प्रदेशों में अपना राज्य बढ़ाने की इच्छा  
 होने पर सिंध के अमीर, अफगानिस्तान के राजा और पंजाब के सिखों,  
 अफगानों इत्यादि अनेक तरह की लोगों के साथ अंग्रेजों का  
 झगड़ा हुआ । इन झगड़ों में अंग्रेजी राज्य की सीमा स्थिर हुई  
 और वह मजबूत बनाई गई । सारांश यह कि इन ५० वर्षों में  
 राज्य की भीतरी शान्ति और बाहरी वृद्धि दोनों ही बराबर जारी  
 रही । इस काल के बाद जो युद्ध हुए वे सभी राज्य-सीमा से  
 बाहर हुए । जिस नेपाल-युद्ध का वर्णन पिछले अध्याय में  
 हुआ है वह भी सीमान्त युद्ध में सम्मिलित है ।

( २ ) पहला बरमा युद्ध, ( अ ) पहले युद्ध का हाल—

बंगाल के पूर्व में दक्षिण से उत्तर तक एक प्रायद्वीप फैला हुआ  
 है इस प्रायद्वीप का नाम अरुणदेश या बरमा है । इस देश का  
 पश्चिम से होकर इरावदी-नदी बहती है । इस नदी के आस-  
 पास का प्रदेश बहुत ही उपजाऊ है बरमा का उत्तरी भूभाग  
 'उप-बरमा' और दक्षिणी भूभाग 'लोअर बरमा' के नाम  
 से प्रसिद्ध है वहाँ के निवासी हिन्दू-बौद्ध मिश्रित गोत्रधर हैं  
 वे बौद्ध धर्म का मानते हैं पहले वे बौद्ध धर्म का ही  
 पालन करते थे उनमें जाति भेद बाल विवाह परदा इत्यादि का  
 प्रचार नहीं है व्यवहार और राजा का सब काम सिखाया  
 जाता है उनका रहन-सहन राजपूतों के समान है उनमें  
 धार्मिक प्रेम अधिक है प्रत्येक गाँव में कम से कम एक बौद्ध  
 मंदिर और उसी के साथ एक विद्यालय अवश्य ही मिलता

बरमा में पहले अनेक छोटे छोटे राज्य थे उनमें से आठ



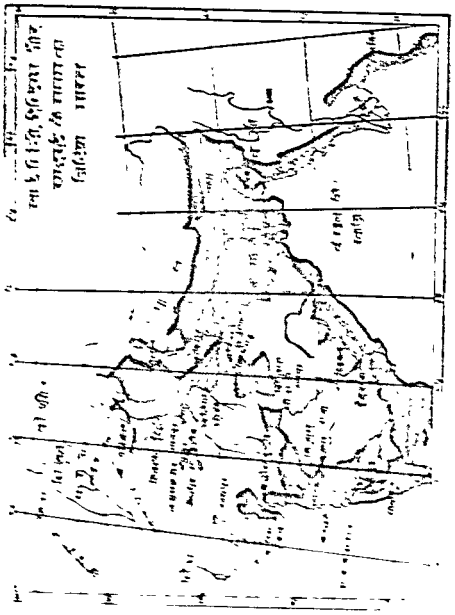


आये हुए आदमियों को वापस करना स्वीकार कर लिया था। लेकिन लाहौर के लोगों ने इन भागकर आये हुए आदमियों को वापस करने से इनकार कर दिया और यही राजा के साथ संधि करने के लिए अपने हुत भेजे। राजा अपनी बात पर अड़ा रहा और अपने आदमी वापस माँगे। सन् १८१२ में उसके सेनापति महाबधुल ने आसाम, मणिपुर इत्यादि राज्य जीत लिए। इनसे बर्मा-राज्य की सीमा अब अंग्रेजी राज्य-सीमा में आगई। शाहपुर नामक एक छोटे से द्वीप को अपना समझ कर बर्मी लोगों ने वहाँ से अंग्रेजी जैजों को निकाल बाहर कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। लेकिन अंग्रेजों ने फौज भेज कर उसे फिर ले लिया और आया के राजा को एक पत्र लिखा। इन पर राजा ने अंग्रेजों के साथ युद्ध करना निश्चित कर महाबधुल को मना देकर अंग्रेजों के विरुद्ध भेजा।

(६) लड़ाई और संधि (सन् १८२४-२६)—मार्च सन् १८२४ में बर्मा पर अंग्रेजी फौज ने बड़ाई की। जल-मार्ग होकर कुछ फौज सर आन्निबाल्ड कैम्पबेल के साथ रंगून पहुँची। बंगाल की सीमा पर कैप्टन नार्टन के साथ कुछ फौज थी। उस पर महाबधुल ने हमला करके उसे हरा दिया। केवल मद्रास की फौज का हावड़ी नदी के पार में विजय मिली। रंगून शहर बर्मा लोगों ने घेरी कर दिया था। उसे अपने अधिकार में कर और वहाँ छावनी बना अंग्रेज डहर गये। उनको जमाने के लिए राजा ने महाबधुल को आसाम से बुलाया। और जिस समय अंग्रेजों का जवाबी बड़ा उत्तर की ओर आगे बढ़ रहा था, महाबधुल ने शोनाथ न मोर्चाबंदी करके अंग्रेजों का सामना किया। सन्

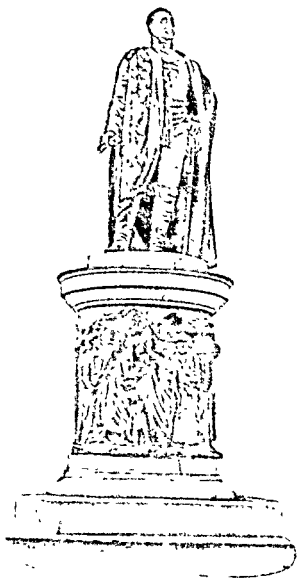
डेविड आक्टरलोनी उस समय उस प्रान्त में अंग्रेजों की ओर से एजेंट था। भगतपुर के दंगे में भारत भर में गड़बड़ फैली। इस भय से अपना रोय जमाने के लिये उसने बलवंतसिंह को ओर से वहाँ फौज भेजी। लेकिन गवर्नर जनरल ने भगतपुर के मामले में हाथ डालना ठीक न समझ फौज वापस मुल्तान वा हुकुम भेज दिया। यह अपमान आक्टरलोनी के लिए असह्य हुआ और उसने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उसी दुःख से दो मास बाद उसकी मृत्यु हो गई। बाद की दुर्जनसाल का जगड़ा अधिक बढ़ने देख गवर्नर जनरल ने अपनी मूल मन कर भगतपुर पर काम्बेरमिया के साथ फौज भेजी। बहुत सदा तक तो किले की चिकनी दीवारों पर तोपों का कुछ असर ही न हुआ। अन्त में बाकू भगकर दीवार उड़ाने से दीवार पड़ गई। इसी राह से अंग्रेज लोग किले में घुसे। उन्होंने दुर्जनसाल को कैद किया और बलवंतसिंह को गरीब पिटाकर अपने हाथ में शासन का काम ले लिया (सन् १८२६)। भगतपुर के इस युद्ध से अंग्रेजों का सारे देश में प्रभाव जम गया।

( ४ ) कुटकर—मद्रास के लोकप्रिय गवर्नर सर टामस मोर ने इस समय मद्रास आदालत में मालगुजारी बमूल करने की रीय्यतगारी पद्धति का प्रचार किया। जमींदार का बाग में न रख सारी धरती जाय कर उसे किसानों के नाम चढ़ा देना और उनसे स्वयं सरकार का मालगुजारी बमूल करना ही रीय्यतगारी प्रथा है। बम्बई आदालत में पलफिम्प्टन ने मालगुजारी की जा प्रथा जहाँ जैसी चढ़ रही थी उसे वहाँ वैसी ही इलाज रक्खा। क्योंकि इस आदालत में मालगुजारी बमूल करने की कड़ा



UNITED STATES  
Map of the United States





लार्ड विलियम बेंटिक







और कार्य-क्षम था। कृष्णराज जब बड़ा और काम सँभालने के योग्य हुआ तब सन् १८११ में उसने अपना काम अपने हाथों में ले लिया। इसके बाद ही पूर्णिया की बहुत शीघ्र मृत्यु हो गई। कृष्णराज घुरे स्वभाव का पुरुष निकला। उसके हाथ से शसन का काम ठीक ठीक नहीं होता था। इसलिए उसको वार्षिक साढ़े तीन लाख रुपये और राज्य की आय का पाँचवाँ भाग देने का निश्चय कर मैसूर का शासन रेज़ीडेंट-द्वारा होने की आज्ञा गवर्नर-जनरल ने सन् १८३१ में दी। यह व्यवस्था अनेक वर्षों तक चम्पी ही चलती रही। अन्त में सन् १८८१ में मैसूर का राजकाज वहाँ के राजा को वापस सौंप दिया गया। इसी तरह अपने राज्य में सुधार करने की चेतावनी निज़ाम को भी दी गई।

(३) राज्यों की ज़रूरी—(अ) कच्छार (सन् १८३०)—आसाम और बरमा की सीमा पर कच्छार का प्रान्त है। जिस समय बरमा के साथ अंग्रेज़ों का युद्ध चल रहा था, यह प्रान्त भी अंग्रेज़ों के आश्रय में था। यहाँ के राजा गोविन्दचंद्र की मृत्यु सन् १८३० में हुई। उसके राज्य का कोई हकदार न था। इससे उसका राज्य अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया। (आ) कुर्ग (१८३४)—मैसूर और मालाबार के बीच में कुर्ग या कोडुगा नामक एक पहाड़ी प्रदेश है। उसका कुछ भूभाग बहुत उपजाऊ भी है। वहाँ हाथी तथा अन्य जंगली जानवर बहुत रहते हैं। यहाँ के निवासी घोर हैं। इनमें एक भाग आर्य और ३ भाग अनार्य हैं। सोलहवीं सदी में यह प्रान्त विजयनगर-राज्य का एक भाग था। उस समय एक साधु इकरी प्रान्त से निकलकर कुर्ग में धर्म प्रचार के बहाने से आया और उसने वहाँ अपने









करके खेती इत्यादि के काम दिये गये। ( ३ ) विद्यादान—  
 भारत के सार्वभौम बनने पर अँग्रेजों के सामने दो बड़े कठिन प्रश्न  
 पेश थे पहला यह कि भारत की प्रजा को विद्या पढ़ाकर उन पर  
 शासन करना सुलभ है कि उनको अज्ञानी बनाये रखकर शासन ठीक  
 ठीक चलाया जा सकता है। इस प्रश्न पर बहुत दिनों तक विचार  
 होता रहा। अन्त में बेंटिक ने भारत की प्रजा को शिक्षित बनाना  
 निश्चित किया। इस निश्चय के पक्ष में विलायत के लोग भी थे।  
 इसलिए बेंटिक को इस प्रश्न के सुलझाने में देर न लगी। दूसरा  
 प्रश्न यह था कि जिस शिक्षा का प्रचार भारत में किया जाय  
 उसकी प्रणाली क्या होनी चाहिए। यूरोपीय प्रणाली या भारत की  
 प्राचीन शिक्षा-प्रणाली। इस समय यूरोप के कितने ही विद्वानों ने  
 संस्कृत-साहित्य का अच्छा अध्ययन कर लिया था। अतः उन्हें  
 भारत के ज्ञान-भांडार का अच्छा पता था। वे भारतीय ज्ञान को  
 बड़े आदर का दृष्टि से देखते थे। उन विद्वानों में एक का नाम  
 होरेस विलियम था। यह उनका अनुयायी था। उसने कहा  
 कि भारत के लोगों को उनका प्राचीन विद्या की ही शिक्षा दी  
 जानी चाहिए। उनका पाश्चात्य प्रणाली में पाश्चात्य विद्या का  
 ज्ञान देना व्यर्थ है। 'हिन्दुओं के प्राचीन संस्कृत-ग्रंथ किसी तरह  
 कम योग्यता के नहीं हैं। उनमें ना उन्नत विचारों का समावेश  
 है किन्तु दूसरा पक्ष इन ग्रंथों के विरुद्ध था। इस पक्ष के लोग  
 चाहते थे कि भारत में अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य ज्ञान का  
 शिक्षा दी जाय। इस पक्ष का प्रभाव ना बहुत ही अधिक था।  
 सर चार्ल्स ट्रिवेलिन, हावर्ड हफ, और मैकाले इत्यादि  
 इन पक्ष के अनुयायी थे। उनका कहना था कि पाश्चात्य लोगों के  
 साधन-शोध और उनके स्वतन्त्र विचार दृढ़ महत्त्व के हैं, इनके



( ५ ) सुधार और योग्यता—वैटिक ने ( १ ) मार्गारी कर्मचारियों का घनन और उनकी तरफों का एक निश्चित नियम बना दिया और पूँज के कर्मचारियों को जो भला मिलता था उसे बन्द कर दिया । ( २ ) अर्जीम का प्रकार रोहने के लिए घननेवालों को परवाने देने का नियम बनाया । ( ३ ) आगम और अवध प्राप्त का फिर से नया बन्दोबस्त कर लगान का निश्चय किया ।

योग्यता—राज्य-शासन की व्यवस्था, प्रजा-हित, और विदेशी राष्ट्रों की नीति इत्यादि में वैटिक की कार्यवाहियों ने क्रांति उत्पन्न कर दी । रणजीतसिंह और सिंध के अमीरों के साथ हमने संधियाँ कीं । इनकी चर्चा आगे के अध्याय में की जायगी । कलकत्ते में हम गवर्नर जनरल की एक स्मारक मूर्ति है, उसके नीचे लाहें मेकाले का लिखा एक लेख है । उसके पढ़ने में हमकी योग्यता का पता लगता है । हमने लिखा है—“लाहेंविलियम वैटिक ने सात वर्ष तक बड़ी चतुरता से, भलाइ और उदारता के साथ भारत का शासन चलाया । उसकी स्मृति के लिए यह स्मारक खड़ा किया गया है । इतना उच्च पद प्राप्त होने पर भी हमने अपने सौंदर्य सहन और नम्रता का त्याग कभी न किया । हमने भारतीय लोगों का हम कल्पना का अपने आचरण में दूर कर दिया कि राजा मनमाना व्यवहार कर सकता है । हमकी जगह हमने पाश्चात्य स्यन्ध का बनाव दिया । प्रजा का कल्याण करना ही शासन करने का उद्देश है । हम तन्त्र को हमने सदैव अपने ध्यान में रखा । हमने दृष्ट प्रथाओं का बन्द किया । निन्द्य मेरांमेद तोड़ दिये । और प्रजा का बर्द्ध तथा













में लुधियाने आया और अंग्रेजों की शरण में रहने लगा। बाद  
को कुछ दिनों में उत्तर भाई शाहशुजा भी हाकर अरुण-  
निलाल से भारत में अंग्रेजों के पक्ष जा गया। फ़तहसी चतुर  
और वीर था। उसने अरुणनिलाल की बड़ी वफ़ाति की। फ़तह-  
सी सन् १८२८ में मारा गया और उसके भाई दोस्त महम्मद  
को अरुणनिलाल का राज्य मिला। इसके समय में अरुणनिलाल  
शाह हुआ। ईरान के शाह और मराठों के द्वार की निगाह  
इस देश पर थी। पेशवा इत्यादि पूर्वी अरुणनिलाल पर शाह-  
शुजा की ही अधिकार था। इसी प्रकार पश्चिमी अरुणनिलाल  
पर भी अधिकार होने के लिए राजसीनसिंह को कोहनूर हीरा  
देकर और उसकी मदद लेकर शाहशुजा ने दोस्त महम्मद पर चढ़ाई  
की। परन्तु उनकी हार हुई जिस समय वह वापस जा रहा  
था, राजसीनसिंह ने उनका पेशवा प्रत्यक्ष भी रोक लिया। इन  
निगाहों होकर वह फिर सन् १८३० में अंग्रेजों की शरण में  
लुधियाने पहुँचा और दोस्त महम्मद अरुणनिलाल की गद्दी  
पर बैठा।

पेशवा प्रत्यक्ष राजसीनसिंह के अधिकार में था। उस समय  
जैसे के लिए शाहशुजा महम्मदशहा ने मराठों और अंग्रेजों से मदद  
की। राजसीनसिंह ने समझा कि मराठों से मदद अंग्रेजों से  
केप्टेन एमिलीयडर शर्मा को दण्डित करने के लिए दोस्त  
महम्मद के पक्ष में। उस समय पेशवा प्रत्यक्ष के पक्ष में उभर  
उठे। उस दोस्त महम्मद ने कहा कि जो कोई मराठों  
पर मारा पेशवा प्रत्यक्ष विरुद्ध। उस के पक्ष में मैं नहीं।  
उस में मराठों ने उसे पेशवा प्रत्यक्ष विरुद्ध का दण्डित किया। उस  
ने दोस्त महम्मद लुधियाने मराठों के पक्ष में ही मारा मराठों





अकबर की















सर्क ब्रिगेड दाने लिए भेजी। गवर्नर जनरल एलिनबरो इन बातों पर ध्यान न देकर सिन्ध-प्रान्त का प्रयत्न करने लिए सर चार्ल्स नेपियर को दीवानी और फौजदारी के कर्तव्य देकर वहाँ भेजा (३९-१८४२)। तैनाती फौज के सर्व के साथ अमीरों से अंग्रेजों को ३ लाख रुपये कर के रूप में मिलने। इसके बदले में नेपियर ने उनका २० लाख का राज्य छीन लिया। इनके अलावा उनको कहा कि वे अपने नाम के सिक्के चलावें, अंग्रेजी जहाज़ों को ईंधन दें। लेकिन ये बातें अमीरों ने नास्तुंड की।

मुटु (सन १८४३) —झौटूम के साथ अमीर अमीरों की सन्तुष्टि चल ही रही थी कि नेपियर ने उनका मज़बूत क़िला नामगढ़ जीत लिया। इससे अमीरों का धैर्य झूट गया और उन्होंने अंग्रेजों का सभी भागें स्वाधिकार कर लीं। (५-१-१८४३) लेकिन बन्दूकी लोगों को अमीरों की यह बात पसन्द न आई। उन्होंने नाराज़ होकर रेज़ीडेंसी पर अचानक हमला कर दिया तब झौटूम वहाँ से जहाज़ पर बैठकर भाग निकला और नेपियर से जा मिले। १७ परवरी को मियानी में बड़ी घमासान लड़ाई हुई इस लड़ाई में बन्दूकी लोगों को हार हुई नेपियर ने हैदराबाद पर अधिकार कर लिया और वहाँ का सज़ाना मूट लिया। ३ मार्च को हैदराबाद के पास दुश्मन फिर अमीरों को हार हुई इसके बाद अंग्रेजों ने सिरदुर्ग के अलावा अन्य सभी राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया। अंग्रेजों ने सर्वोच्च सत्ता के कालम होने पर जो भाग के राजाओं का बड़ा बड़ा फौजों के रहने अंग्रेज निभंय नहीं रह सकत। १८५० के अमीर राजा के सिक्के इत्यादि में मुटु करने का अर्थ













भारत की जनता में बड़ा शोभ हुआ और सन् १८५७ का बलवा हुआ, जिसमें असंख्य प्राणहानि हुई। इस ग़दर की जड़ लार्ड डलहौसी के शासन में पड़ी। डलहौसी बचपन से ही बड़ा चतुर था और उसकी प्रसिद्धि भी हो चुकी थी। जिस समय वह केवल २५ वर्ष का था, उसका प्रवेश पार्लियामेंट में हुआ। तत्कालीन प्रधान मंत्री पील उससे बहुत प्रसन्न था। उसने डलहौसी को व्यापार-विभाग का प्रधान पदाधिकारी बनाया। बाद को जय रसेल प्रधान मंत्री हुआ तब उसने उसे भारत का गवर्नर जनरल बना कर यहाँ भेजा। इस समय वह ३५ वर्ष का था। लेकिन उसका शरीर बहुत कमज़ोर था, और यहाँ का काम बड़ी मेहनत से करने के बाद जब वह विलापित लौटा तब २-३ वर्ष से अधिक न ज़िन्दा रह पाया। इसके शासन के तीन विभाग हैं। वे यों हैं— (१) सिक्ख और दरमी युद्ध (२) प्रजा-हित के काम, (३) राज्यों को ज़म्मी।

(३) दूसरा सिक्ख-युद्ध (सन् १८४८-४९)—कारण—मुलतान-प्रान्त पंजाब का एक भाग था। वहाँ का सूबेदार सावनमहल जब सन् १८४४ में मरा तब उसका लड़का मूलराज सूबेदारी का काम करने लगा। इस काम के लिए जो नज़राना लाहोर-दरबार को देने देना चाहिये था वह उसने नहीं दिया था। मूलराज पराक्रमी था। उसका निजी व्यापार भी बहुत बड़ा-बड़ा था। इसलिए वह एक प्रकार से स्वतंत्र राजा हो था। पहला सिक्ख-युद्ध जब बढ़ हुआ तब लार्ड्स कामकाज देखने लगा। उसने मूलराज से नज़राना माँगा और पिछला हिस्सा भी पेश करने के लिए कहा। मूलराज खुद लाहोर गया और उपर्युक्त माँग स्वीकार करने में उसने अपना मानहानि समस्त सूबेदारी के



श्रीवृक्ष के नीचे होने के कारण उस पर हमला करने में असमर्थ  
 हो तो भी सर हनुम ने उस पर हमला करने का हुक्म दे दिया।  
 २४ वीं जंगली पलटन आगे गई। शत्रु ने उसको घिरा हुआ  
 कर डाला। सभी शत्रुओं को तिरछों ने घेर लिया। इस  
 लड़ाई में ८९ जवान और कर्ण हज़ार बिगड़ी गये। रात हो  
 जाने से लड़ाई रुक गई। (१४ जनवरी १८५९)। फिर शाम  
 होकर तिरछे सरदार एकत्र हुए। जवानों ने भी उन्हें मदद  
 दी। लेकिन सुभाष का किला लेकर शत्रुओं की सैन्य भी सेना-  
 पन से आगिरा। इसमें जंगली का बल बड़ा गढ़ और गुराण  
 की लड़ाई में जंगली लोगों की मदद करके तिरछे सेना भग  
 ली हुई। शेरसिंह जंगली के अधीन हुआ और लड़ाई बन्द  
 हुई। (२० २३ फरवरी १८५९)।

दुध का परिणाम, पञ्जाब राज्य—श्रीवृक्ष के नीचे होने के  
 बाद राज्य में अन्तर्गत अन्तर्गत में विभिन्न राजा-सैन्य का प्रभाव  
 राज्य की सीमा पर राज्य में विभिन्न राजा-सैन्य का प्रभाव  
 लड़ाई करने अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह राज्य की सीमा अन्तर्गत  
 अन्तर्गत का अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत  
 लड़ाई अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत में ही यह अन्तर्गत अन्तर्गत



के समान था। उसने अंग्रेज़-दूत से भेंट भी न की। तब लार्ड हार्डिज ने सभी यूरोपीय व्यापारियों को अपने जहाज़ पर बुला लिया और परमी राजा का जो जहाज़ खड़ा था उसे उसने पकड़ लिया। उसी समय युद्ध शुरू हुआ। गवर्नर जनरल को यह बात विदित होने ही उसने नई फौज दरमा को भेजी और आवा के राजा के पास निम्न लिखित माँगें लिख भेजी—(१) रंगून के अधिकारी निकाल दिये जायँ और (२) राजा दस लाख रुपया दंड दे। जयापदेने के लिए ५ सप्ताह का समय दिया गया। गवर्नर जनरल ने जनरल गाह्विन को मुख्य सेनापति बनाया। दरावदी-नदी में संधि का पत्र ले जाते समय उस पर परमी लोगों ने तोपें छोड़ीं।

अप्रैल सन् १८०२ में मातांयान शहर पर अंग्रेज़ों ने धावा किया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। १२ वीं अप्रैल को रंगून पर अंग्रेज़ों ने गोलाबारी शुरू की। यहाँ का शिवा बिन्दु के समान एक बड़ा मन्दिर है उसपर हमला करके उन्होंने उस छीन लिया। १४ वीं को रंगून पर भी उनका अधिकार हो गया। बाद को शीघ्र ही वेमिन बंदर के तने पर पैगु प्रान्त व समुद्र तट पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। उसे गवर्नर जनरल ने प्रिटिदा राज्य में मिला लिया। छोड़ दिने में अंग्रेज़ों ने प्रोम शहर भी ले लिया। इल्लामी राज्य परमा गया जोर सन् १८०० के नवम्बर तक सभी स्थानों पर अधिकार करके लार्ड हार्डिज परमा उसने प्रिटिदा राज्य में प्रोम राज्य और लार्ड हार्डिज परमा पर उसने आवा के राजा का राज्य लार्ड हार्डिज परमा के राज्य का समस्त राज्य समान कर दिया।

प्रिटिदा राज्य का क्षेत्रफल ६६०० वर्ग मील था। प्रोम राज्य का क्षेत्रफल १००० वर्ग मील था। इल्लामी राज्य का क्षेत्रफल १००० वर्ग मील था।





के जहाज़ से उतरने की सुविधा बम्बई में की। ( ३ ) उम्मेने भारत में रेल-पथ जारी करके व्यापार और फौज के आने-जाने की सुविधा का प्रबन्ध किया। पहले रेल-पथ कलकत्ते के पास और बम्बई से शाना तक फैला हुआ। सन् १८५२ में रेल-गाड़ी चल निकली। यह रेल-पथ बढ़ते बढ़ते अब १९२५ में ३८ हजार मील लम्बा होकर सारे देश में फैल गया है। पहले केवल नदियों में नावों-झाग माल ढोया जाता था। यह अब बंद हो गया है और रेल-पथ-द्वारा व्यापार गन्ध बढ़ा है। ( ४ ) भारत में तागपत्ती का काम भी डलहौसी ने शुरू किया। इसमें सबसे एक कोने से दूसरे कोने को घड़ी जल्दी भेजने का प्रबन्ध हुआ। ( ५ ) हिन्दुस्तान से इंग्लैंड का व्यापार बढ़ाने का उसने उद्योग किया। ( ६ ) बंगाल के पश्चिमोत्तर में संथाल नाम के लोग रहते हैं। ये लगभग तीस हजार लोग अपनी शिकायतें पेश करने के लिए कलकत्ते को चले और राह में उन्होंने दंगा किया। गवर्नर जनरल ने संथाल लोगों पर फौज भेज कर उनके झुण्डों का प्रबन्ध किया। ( ७ ) इस देश के गांवों में अनेक प्रकार के काटिन और प्रर दण्ड-विधान थे, उन्हें उसने बंद किया। ( ८ ) मार्ग, नहरें इत्यादि प्रजा के उद्योग के काम करने के लिए पब्लिक वर्क्स नाम का विभाग खोला। इस विभाग ने अनेक लाभ के काम किये। ( ९ ) पहले डाक-विभाग की व्यवस्था ठीक नहीं थी। इसमें लोगों को बड़ा कष्ट होता था। डलहौसी ने डाक-महसूल आध आना कर दिया और आध आना में चाहे जहां न्युट्री भेजने का सुविधा हो गई। इसमें डाक-विभाग का काम बहुत बढ़ गया। १८०० लाड बोटिक के शासन काल में केवल अंग्रेज़ी पढ़ाने के स्कूल खुले थे, लेकिन डलहौसी ने शिक्षा-विभाग की अलग स्थापना करके लोगों को शिक्षित बनाने का प्रबन्ध किया। ( ११ ) सिविल सर्विस की परीक्षा पहले



लिया। ये दत्तक विधि-विधान से हुए थे। यह बात भी रेजीडेंट ने गवर्नर जनरल से प्रकट की। किसी भी व्यक्ति के मरने पर उसका कोई उत्तराधिकारी न होने पर उसकी संपत्ति सरकार ले लेती है, इस नियम के अनुसार डलहौसी ने कोर्ट आफ डायरेक्टर्स को यह लिख भेजा कि "संधियों में दिये गये" वारिस और 'अनुगामी' राज्यों का अर्थ केवल औरस संतति माना जाय और दत्तक विधान को मंजूर करना या न करना सरकार की इच्छा पर रक्खा जाय। डायरेक्टर्स ने डलहौसी की इस व्यवस्था को स्वीकार कर लिया। इसलिए औरस पुत्र के न होने के कारण सतार का राज्य अंग्रेजी अमलदारी में मिला लेने का हुक्म हुआ। इस हुक्म से सतार का राज्य समाप्त हो गया। (आ) पेशवा की पेंशन झूठ (सन् १८१२) — यार्जाराव पेशवा १४-१-१८११ को अश्वार्थ में मर गया। मृत्यु के समय उसने अपने गोत्र के घोड़ों पंत उर्फ नाना साहब को गोद लिया। इस नाना साहब ने पेशवा की पेंशन पाने की प्रार्थना अंग्रेज-सरकार से की। गवर्नर जनरल ने उसे अस्वीकार करने हुए कहा कि वह पेंशन सिर्फ यार्जाराव की ज़िन्दगी भर के लिए थी। और उनकी २७ लाख की संपत्ति नाना साहब के लिए काफी है। इस उत्तर में नाना साहब बहुत चिड़ गया और बाद को होने वाले दलख में वह दलखियों का सरदार बन गया। (इ) झाँसी १८१२ — झाँसी-प्रान्त पहले यार्जाराव को मुन्देलखण्ड के राजा छत्रसाल ने दिया था। उस राज्य का प्रधानकर्त्ता पेशवा की ओर से उसका सुदेशर ग्युनाथ हरि नेवालकर सन् १७९६ में मर गया। तब उसका भाई शिवराम भाऊ सुदेशर बना। शिवराम ने



का राज्य भी अंग्रेज़ों के अधिकार में मिला लिया गया। रातों रात सीमाएँ भी सन् १८५७ के सुदूर में शामिल हुई।

(२) लावारसी राज्य—(अ) अर्काट. ( सन् १८५३ )—

अर्काट के नवाब के द्वारा ही अंग्रेज़ों का प्रथम प्रवेश भारत में हुआ था। लार्ड वेलेज़ली के समय में ये नवाब केवल नाम-मात्र के रह गये और उन्हें जागीर के रूप में कुछ पेंशन दी जाने लगी। वहाँ का नवाब सन् १८५३ में मर गया। उसके कोई लड़का न था। इसलिए महारान-सरकार ने निम्नलिखित की कि नवाब की पदवी छीन कर उसकी जागीर ज़ूम की जाय। नवाब के कुटुम्ब के निर्वाह-भार के लिए वेतन निश्चित कर दिया जाय। उलहौसी ने यह सिखारिश मानकर नवाब की जागीर और नवाब की पदवी ज़ूम कर ली। (आ) तंजौर। सन् १८५५।—सन्

१७९९ में तंजौर का राज्य ज़ूम करके राजा के कुटुम्ब को एक अच्छी पेंशन दी गई थी और उनके राजा की पदवी भी रखने की आज्ञा मिली थी। सन् १८५५ में राजा शिवाजी निम्नस्तान मर गया। उलहौसी ने उनको तीन लाख की जागीर ज़ूम कर ली। (इ) सम्भलपुर—इस छोटे से राज्य का राजा भी निम्नस्तान मर गया। इसलिए उनका राज्य भी लावारसी के रूप में ज़ूम हुआ।

(३) नागपुर. सन् १८५३।—इन लम्बे-चौड़े राज्यों को उलहौसी ने ज़ूम किया उनमें से एक नागपुर का भी राज्य है। इस राज्य का अवकल ७१,००० वर्ग मील था। इसकी जन-संख्या ७६ लाख से भी अधिक थी। सिंधिया, हालकर इत्यादि राज्यों की भाँति यह राज्य भी अंग्रेज़ों के आने से पूर्व स्थापित हुआ था। नागपुर बराबर प्रान्त का द्वार था। सन्













# चारहवाँ अध्याय

## सन् सत्तावन का गढ़र

मई १८५७—नवम्बर १८५८

- |                           |                      |
|---------------------------|----------------------|
| १—लार्ड कैनिङ्ग           | २—गढ़र के पर्यन्तारण |
| ३—साबरमती का तट           | ४—गढ़र का हाल        |
| ५—राज्यपालन का नया बान्धन | ६—राजी की प्रतिज्ञा  |
| ७—कैनिङ्ग की योजना        |                      |

(१) लार्ड कैनिङ्ग (सन् १८५६-६२)—लार्ड डलहौसी के बाद लार्ड कैनिङ्ग गवर्नर जनरल बनाया गया। कैनिङ्ग शान्त और गम्भीर स्वभाव का पुरुष था। वह अपने काम में मेहनत भी बहुत करता था। डलहौसी के शासन-काल में अनेक नवीन बातें जारी की गई थीं, उनके जारी रखने और उत्पत्ति करने के काम लार्ड कैनिङ्ग के सामने थे। इस समय किसी नवीन सुधार की आवश्यकता नहीं थी। अतः इस काम का करने में कैनिङ्ग सवधा योग्य था। जिस समय वह भारत में आया उस समय भारत में जहाँ-तहाँ शांति शांति देखी थी। लाहौर डलहौसी की प्रशंसा और उच्च नीति में अनेक फेरफार हो गए थे। लार्ड कैनिङ्ग का यह विश्वास था कि वह एक पुरुष था, तथा और भी ऐसा पुरुष था जिससे वह भी असंकोच हो रहा था। इसका मतलब यह हुआ कि सन् १८५७ में एक बड़ा भयानक गढ़र हो गया। इस गढ़र में अनेक काम-काज काम हुए। जिस समय में एक बड़ा हादसा हुआ।













का भोग दिया। इसमें बाद जंगलों ने जंगली पर हमला किया। इस हमले में गनी की हार हुई और वह गनी में निवास भगी। बाद की तात्याटोपे, गनी, दांडा का मरण और नामा का पहाड़ का मरीजा राय। राटमाहद इत्यादि ने मिल कर ग्यालियर पर हमला किया। इसमें जयार्जुन विधिदा की हार हुई और वह आगरे को भग गया (१ जन मन् १८५८)। इसमें बाद ग्यालियर पर बाल्गायों का अधिकार हुआ। १६ जन को गोज ने ग्यालियर पर हमला किया। इसमें गनी तार्जोदाय के मोली लगी और वह मर गई। मन् १८५९ के अंग्रेज नाम में तात्या टोपे को जंगलों ने पकड़ लिया। इस तरह इस नाम में बलाय का अन्त हुआ। पंजाब-प्रान्त का प्रबन्ध सर जान लारिंस ने यही शान्ति के साथ सिक्ख लोगों की सहायता में किया। सिक्खों ने भी अपने पहले अरमान को भुलकर जंगलों का साथ दिया। इसी में दिलों पर जंगलों का आधिकार हो गया। इसी प्रकार बंधर और मद्रास की फौजों ने भी यही वकाशवादी दिखाए। अन्य गये-जवाहों ने तथा निजाम ने भी इस बलाय को शान्त करने में जंगलों की पूरी-पूरी सहायता का जनरल हेंडलरफ सर कालिन कैम्पबेल और सर एडमंड डी. डी. इस बलाय का शान्त करनेवालों में अग्रगण्य थे। मन् १८५९ के अन्त में यह जंगल शान्त हो गए थे।

(४) भारत के शासन का नया कानून मन्

१८५९ भारत के इस नयेकाल के कानून इंग्लैंड के लोगों का ध्यान इधर किया। मद्रास रोडने के निष्ठ जैज को नुकान भेजा हो डी. ए. नाकिन लोगों को शान्त रखने के लिए भी बहुत स

















1. 1945년 8월 15일 일본 제국 패망 후, 우리 민족은 해방을 맞이하게 되었다. 그러나 이 해방은 완전한 민족 해방이 아니라, 일본 제국주의 지배에서 벗어나게 된 것일 뿐, 여전히 미국의 지배 아래에 있었다.

一、關於我國經濟建設的方針。我國經濟建設的方針，是發展生產，繁榮經濟，改善民生，增加就業，這是我們黨的一貫方針。在抗戰時期，我們必須堅持這個方針，才能鞏固後方的經濟基礎，支援前方的抗戰。

स्थान नहीं दिया। इसके बाद अन्त में २०—२—१९१९ को हथी बुल्ला की हत्या की गई और उसका लड़का अमानुल्ला गद्दी पर बैठा। उसके साथ उसी समय अंग्रेजों का एक छोटा सा युद्ध हुआ लेकिन शीघ्र ही यह युद्ध बंद हो गया और अफ़्ग़ानिस्तान में प्रश्न का रूप पहले की अपेक्षा बिलकुल ही बदल गया। यूरोपीय युद्ध ने पृथिवी की राजनीति को एक दम बदल दिया। इस राज्य-क्रान्ति हो गई और यहाँ सोवियट प्रजातंत्र की स्थापना हो जाने से पहले की रूसी-शक्ति का भय भारत की साम्राज्य सीमा पर नहीं रह गया। दूसरी ओर तुर्की का खलीफ़ा पदच्युत किया गया, जिससे मुस्लिम राष्ट्रों में एक नये परिवर्तन की लहर आ गई।

## (४) आगे के चार दायसंगय

(१) लार्ड-रिपन (सन् १८८०-८४)—यह दायसंगय १८८० में भारत आया। सन् १८८१ में अफ़्ग़ानिस्तान का युद्ध हो जाने पर शान्ति स्थापित हुई और भारत में अनेक सुधार का अवसर लार्ड रिपन के हाथ लगा। लार्ड रिपन ने देश समाचार-पत्रों पर पुनः नियंत्रण जारी करके राजनैतिक विषय पर प्रकाश डालने का निषेध कर दिया था। इसे रिपन ने रद्द कर ग़रीबों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए उसने एक जाँच-कमान तैनात किया और उसकी सिफ़ारिशों के अनुसार “ग्रामिक स्कूल खोले जाने के काम में प्रोत्साहन देने के लिए” “शिक्षा-विभाग” में अनुकूल फेर-फार कर दिया। पहले यूरोपियन अपराधियों मुकद्दमा केवल यूरोपीय जज की इजलास में चलाने का नियम था। किन्तु रिपन ने इस नियम को भी रद्द किया और भारत

उन्हीं की ओर उस धर्म के अधिकांशों को अधिक अधिकार देने का प्रस्ताव किया, किन्तु यह संभव न हो सका।  
 मैं इतना ही दिन बहते हैं। इस दिन के कारण अंग्रेज लोग  
 उसमें बहुत नापसन्द हुए। रिचमन ने सम्राज्ञी सम्राज्य की  
 सम्पूर्ण स्वीकृति का मुनिस्त्रिगैलिटियाँ खोलने का निश्चय  
 किया। बड़े-बड़े शहरों में मुनिस्त्रिगैलिटियाँ खुली। उनके  
 प्रत्यक्ष का काम भारतीय लोगों के हाथ में दिया। इस तरह  
 भारतीय लोगों को अपना काम-भार देने की योजना उन्हीं की।  
 हमने भारतीय प्रजा उनमें बड़ी संतुष्ट हुई और उस पर अपना  
 विशेष स्नेह प्रकट किया।

(२) लार्ड डफ़रिन ( सन् १८८४-८८ ) यह बड़ा  
 विद्वान् था और राजनीतिज्ञों की ऊँची धेनी में गिना  
 जाता था। इसके शासन-काल में उत्तर पश्चिम के राजा दीक्षा  
 ने अंग्रेजों के प्रति अपना द्वेष व्यक्त किया। इसमें इतने उसके  
 देश को जीत लिया और उसको पदच्युत कर म्नागिरि में रहने  
 का स्थान दिया। दीक्षा १६—१२—१२१६ को वहीं मर गया।  
 ब्रिटिश सरकार ने सन् सत्तावन के ग़दर में खालियर का ज़िला  
 वहाँ के राजा में ले लिया था। वह ज़िला १ जनवरी १८८६ के  
 दिन सिंधिया को वापस दे दिया गया। सन् १८८७ में महागाना  
 विक्टोरिया की ५० वीं वर्षगांठ का स्वर्ण-उत्सव सारे भारत में  
 मनाया गया। सन् १८८८ में लार्ड डफ़रिन के वापस जाने पर  
 लेडी डफ़रिन के नाम से भारतीय स्त्रियों के लिए दवाखाने  
 खोलने का एक फंड खोला गया।

(३) लार्ड लेन्स हाटन—( सन् १८८२-९४ )—सन्

१८८५ से भारतीय लोगों की एक नैशनल कांग्रेस खोली  
इसका हाल आगे दिया जायगा । ३३३ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

( ४ ) लार्ड एल्लिंगन ( सन्

लार्ड एल्लिंगन का लड़का था । इसके शासन-काल में  
सीमा पर अफ्रीकी लोगों के साथ अंग्रेजों का युद्ध हुआ ।  
१८९५ में भारत में भयंकर दंगे फैला । सन् १८९५ में  
प्रान्त अंग्रेजी अमलदारी में आ गया । सन् १८९७ में महाराष्ट्र  
विकटोरिया के शासन के ६० वें वर्ष का अंत होने  
रत्न जुबिली का महोत्सव सारे भारत में मनाया गया ।

३३३ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

३३३ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

# चौदहवाँ अध्याय

बादशाह सातवें एडवर्ड और पंचम जार्ज

सन् १९०१-१९१९

१—सातवें एडवर्ड (१९०१-१०)

२—लार्ड कर्जन

३—लार्ड मिंटो

४—पंचम जार्ज

५—लार्ड हार्डिज

६—यूरोप का महायुद्ध

(१) सातवें एडवर्ड—सन् १९०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु हुई। अतः इंग्लैंड की राजगद्दी पर उनके बड़े लड़के सातवें एडवर्ड बैठे। उन्होंने भारत के सम्राट् की पदवी भी धारण की। इसका उत्सव मनाने के लिए सन् १९०३ की पहली जनवरी को दिल्ली में दरबार किया गया। इसमें उनका भेजा हुआ “स्नेह-सन्देश” पढ़ा गया। इस संदेश में बादशाह ने लोकहित की बातों से अपनी सहानुभूति दिखाई। सन् १९०८ की दूसरी नवम्बर को महारानी के सन् सत्तावन के संदेश को दिये हुए ५० वर्ष या आधी शताब्दी बीत चुकी थी। अतः उस अवसर को पुनः स्मरण करने के लिए जो उत्सव यहाँ मनाया गया उसमें बादशाह ने अपना सहानुभूति-प्रदर्शक संदेश भेजा था। इसमें उन्होंने अपने शासन की उदार नीति को स्पष्ट किया था। इस बादशाह के शासन-काल में दो बायसगय भारत में आये।

(२) लार्ड कर्जन—(सन् १८९८-१९०५)—बड़ा बड़ा-



कराये। इसके लिए उसने इस पहाड़ी प्रदेश का एक स्थान ही जलदा बना दिया। यह स्थान चिमटे के दोनो तिरों के बीच में दार के समान पड़ा उपयोगी है। ऐसे ही राज्य को बड़ा स्टेट करने हैं।

४—सर मैक्सिम दंग हमबोर्हनेन की अधीनता में उसने निम्न को एक कमीशन प्यारर बढ़ाने के लिए भेजा, लेकिन वह सफल न हुआ।

५—रैनों की उन्नति करने के लिए भी लार्ड कर्जन ने कितने ही उपाय किये। अकाल या बाढ़ आ जाने पर लगान में कमी या मुझाफ़ी करने का कानून बनाया। साहसियों से पंजाब के किसानों को बड़ा कष्ट होता था। उन्हे दूर करने के लिए ज़मीन की मिलकियत गिरवी रखने या बेचने के बारे में भी उसने कानून बनाये। किसानों को धन की मदद देने के लिए सहयोगी बैंकों का चलन चलाया। विरत-ग्रस्त में पूता का हाथ-काँच खोला। इनमें वैधानिक ढंग से खेती के काम की सोज़ की जाती हैं। इस प्रकार कुल दान्ह बढ़े-बढ़े उद्योगों के विषय कर्जन ने बढ़ाये।

६—पुरानी इमारतें और अन्य बनाये गये कामों के खडहर इस देश में प्रायः सर्वत्र हैं। उनकी रक्षा करने के लिए कर्जन ने पुरानी वस्तु के रक्षक का नया कानून बनाया और उसका उपयोग कर प्रायः सभी पुरानी ऐतिहासिक इमारतों की रक्षा का काम शुरू किया। उनके ये सब काम बड़े लाभ-प्रद थे। अब प्रजा उसकी धन्यवाद देती थी। वह बड़ा मेहनती और महत्वाकांक्षी था। उसकी अधीनता में जितने छोटे-बड़े सरकारी काम काज करनवाने मौजूद थे उन सब पर उसका नियंत्रण जमा रहता था। सभी विभागों का निरीक्षण वह स्वयं करता और उन सब में परोक्षित सुधार





भारतीयों का अधिक प्रवेश होने लगा। लेकिन बेगम इनमें ही अधिकार से प्रजा को सम्मोद न हुआ।

६ मई सन् १९१० को बादशाह मातर्वे एडवर्ड की मृत्यु हुई। अतः इंग्लैंड की राजगद्दी पर उनके ज्येष्ठ राजकुमार एडम जॉन बैठे। लार्ड मिंटो का कार्य-काल नवम्बर सन् १९१० में समाप्त हो गया था। इसलिए उसके स्थान पर लार्ड हार्डिङ्ग की तैनाती हुई। बादशाह की नवीन उदार नीति का अधिकार था लार्ड हार्डिङ्ग को है। इसका साग जीवन पर-राष्ट्र-विभाग के कार्यों में ही दीता है। पहले लार्ड हार्डिङ्ग रूस-सम्राट के दरबार में इंग्लैंड का राजदूत था। जिस समय स्वर्गीय बादशाह मातर्वे एडवर्ड ने यूरोप में स्थायी शान्ति रखने के लिए बड़ा परिश्रम किया था उस समय उन्हें "शान्ति-स्थापक" की पदवी मिली थी। उन्होंने यूरोप की मुख्य-मुख्य शक्तियों के पास स्वयं जाकर शान्ति बनाये रखने के लिए मित्रता की संधियों की। उस समय यही लार्ड हार्डिङ्ग उनके साथ रह कर उनके दाहने हाथ बन रहे थे। इसी नीति की दृष्टि से उसको भारत के वायसराय का पद दिया गया था। एडवर्ड के परलोक वार्त्ता होने पर उनके ही काम अथवा नीति का पोषण वर्तमान बादशाह कर रहे हैं।

( ४ ) बादशाह पंचम जॉन—ये सन् १९१० के मई मास में राजगद्दी पर बैठे। इसका उत्सव इंग्लैंड में जून सन् १९११ में हुआ। स्वयं भारत आकर इन्होंने दिल्ली में १२ दिसम्बर सन् १९११ को एक बड़ा दरबार किया और अपने राज्याभिषेक का विशिष्ट भारत में प्रकट की। इस दरबार में भारत के १३०





अयदुर हमान



लाड रिपन







प्रान्तों या संस्थाओं से बनने का अधिकार भी गवर्नर-जनरल को दिया गया। इनके चुनने का अधिकार प्रजा को मिलाना नहीं दिया गया। लोगों की रूढ़ि या आवश्यकता जानने या उसकी सुविधा अथवा सुख के साधन इत्यादि बनाने की सरकार के पास एक भी हस्तें पहले उपर्युक्त प्रक्रिया न थी। लोगों के पास अपनी अभिप्राय प्रकट करने के लिए एकमात्र साधन प्रान्ति बनना ही था। जब प्रान्ति बनते तभी सरकार की आँखें भी खुलती थी। यह प्रष्टि उनके सामने प्रकट हुई। उपर्युक्त प्रजापक्ष के १२ सदस्यों की कौंसिल में वहाँ खुली चर्चा होने से उभय पक्ष की नासमझी दूर करने की आवश्यकता उस समय थी। इसी प्रकार उस समय बम्बई, बंगाल, मद्रास और आगरा में स्वतंत्र कानून बनाने के लिए उन-उन प्रान्तों में कौंसिलें खुली। सन् १८६१ का यह कानून लोगों की माँग उपस्थित करने पर नहीं बना। उसे तो सरकार ने केवल अपनी सुविधा की दृष्टि से बनाया था—यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।

(३) लोकमत का पहला स्वरूप—प्रारंभ में सर्व साधारण को अपने अधिकारों की जानकारी न थी और अपना कार-बार स्वयं देखने व चलाने अथवा सरकार से अपने कुछ अधिकार माँगने की इच्छा भी उनमें न थी। सन सत्तावन के ग़दर की हलचल जिस समय जारी थी, उस समय बम्बई, मद्रास और कलकत्ते में विध्वंसिचालय (गुनिवासिटियाँ) स्थापित किये गये। उनका सहायता से विद्या का प्रचार होने पर लोगों में अपने हज़ों की जानकारी होने में बहुत समय लग गया। पहले थोड़ी ही शिक्षा प्राप्त कर लोगों को ऊँची-ऊँची नौकरियाँ मिल





[illegible][illegible]





















निम्नलिखित एक मस्यौदा तैयार किया। उस समय देश के अन्य विभिन्न दल भी उसमें सम्मिलित हुए। मिर्मेज, वॉमेट, गांधी, तिलक और शिवाजी आदि नेताओं और पक्षों में ऐक्य हुआ। इनमें १९१६ की राष्ट्रीय सभा की माँग अधिक ज़ोर के साथ हुई और युद्ध में फँसे रहने के कारण सरकार को भी इन माँगों पर विचार करना पड़ा। भारत में बड़ा आन्दोलन होने पर सभी पक्षों के नेताओं द्वारा स्वराज्य की माँग एक स्वर से प्रकट की गई। वह सरकार को भी स्वीकार करनी पड़ी। सन् १९१७ के जुलाई मास में मांटेग्ज़ु भारत-भ्रमरी बना और उसने प्रधान-मंडल की अनुमति से २० अगस्त सन् १९१७ को पार्लियामेंट में अंग्रेज़ सरकार की ओर से यह सूचना प्रकाशित की कि "भारत के शासन में उत्तरोत्तर भारतीय लोगों को अधिक प्राधान्य देकर स्वराज्य की संस्था धीरे-धीरे परिपूर्ण बना दी जायगी और इसके द्वारा भारत ब्रिटिश साम्राज्य में रहकर अपना शासन स्वयं अपने उत्तर-दायित्व पर करेगा। इस अन्तिम अवस्था में पहुँचाने के लिए उसे समय-समय पर क्रम-क्रम से अधिक अधिकार दिये जायेंगे। यह सूचना भारत-सरकार और इंग्लैंड-सरकार दोनों की सम्मति से प्रकट की जाती है।" यह सूचना इस प्रकरण में अत्यन्त महत्व की है। सन् १८५७ के ग़दर के महारानी के संदेश प्रकाशित होने के बाद राज्य-शासन-सम्यन्धी आग की महत्व की बात इस सूचना से प्रकट हुई। इनमें लोगों का आन्दोलन भी कुछ उँडा पड़ा और युद्ध का भी अन्त हुआ और भारत के शासन-प्रकरण में एक नया ही रंग पकड़ा। एक दृष्टि से राष्ट्रीयसभा का पहला उद्देश्य सिद्ध हो गया और उसके आगे के उद्योगों में बड़ा रुझान हो गया।

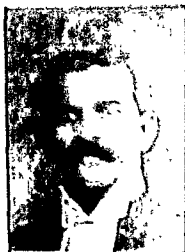








1911 1911



1911 1911









कपड़ा पहनना आदि धार्मिक महात्मा गान्धी के उपर्युक्त आन्दोलन में शामिल हैं। सन् १९२० में लोकमान्य तिलक परलोक-वासो हुए तब लोकपक्ष का नेतृत्व गान्धी को मिला। उन्होंने ऊपर लिखे अनुसार अपना आन्दोलन चलाया। इससे सरकार की सुधार-योजना का यथावत् प्रभाव जनता पर न पड़ सका।

(३) ख़लीफ़त का आन्दोलन—इसी समय हिन्दू और मुसलमानों में एकता हो जाने का एक और कारण हो गया। महात्तुद से पहले तुर्कों का बादशाह ही सब मुसलमानों का ख़लीफ़ा अथवा धर्मगुरु समझा जाता था। तुर्कों ने जर्मनी का पक्ष लिया था। इससे अंग्रेज़ों ने उसको चारों तरफ़ से घेर लिया। उस समय भारत के मुसलमानों की अवस्था बड़े पेंच की हो गई और उनको अपने धर्म-भाइयों से युद्ध करना पड़ा। बाद को अंग्रेज़ों के साथ तुर्कों की संधि हो गई। इसका निर्णय करने में डेढ़ वर्ष लग गये। यह संधि सन् १९२० के मई मास में हुई। इसके अनुसार अरब, सीरिया, पेल्लेस्टाइन, मेसोपोटामिया तुर्कों से छीन लिये। लीग-ऑफ-नेशन्स की आज्ञा से अंग्रेज़ और फ्रेंचों ने उनपर अधिकार कर लिया। तुर्कों के बादशाह को यूरोप से निकाल दिया गया। इससे कांस्टेंटिनोपल और ख़लीफ़ा का सम्बन्ध टूट गया। ख़लीफ़ा की बादशाही टूट गई। अपने धर्म-गुरु की पुरानी राजधानी टूटने के कारण भारत में मुसलमानों को क्षोभ हुआ और इस ख़लीफ़ा को फिर से वहाँ बैठाने के लिए वे प्रयत्न करने लगे। मुसलमानों को इस मनोवृत्ति को देखकर महात्मा गान्धी ने उनके नेताओं को अपने सत्याग्रह के आन्दोलन में शामिल किया। दोनों समाजों ने यह निश्चित किया कि जब तक जलियाँवाला-हत्याकांड के



नायर बने। ये सर शंकरन नायर पहले गवर्नर-जनरल की कार्य-कारिणी-कौंसिल के समासद थे और पंजाब के दंगे के सम्यन्ध में सरकारी नीति से नायाज़ होकर उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया था, लेकिन मनभेद अधिक होने से बम्बई की यह सर्व-दल-समिति टूट गई। तब बाद को वर्तमान स्वराज्य-दल की स्थापना हुई।

सरकार और जनता की परस्पर बिगड़ती ही गई। सन् १९२२ के आरंभ में जिस समय प्रिंस-आव-वेल्स भारत में जाये, उस समय बम्बई तथा अन्य स्थानों में उनका बहिष्कार किया गया। उस समय बम्बई में दंगा भी हो गया। इसलिए सरकार ने गांधी को गिरफ्तार कर प्रतिबंध में रक्खा। अतः नेता के न होने से आन्दोलन ठंडा हो गया। शहर स्कूल व अदालतों का बहिष्कार भी असम्भव समझा गया। केवल कपड़े के बहिष्कार के सम्यन्ध में अनेक लोगों ने चरखा चलाकर स्वयं सूत कात खादी पहननी शुरू की। गांधी की इस शिक्षा को बहुतों ने स्वीकार किया और उसका सम्यन्ध राष्ट्रीय स्तर में भी पहुँचा। बाद को सन् १९२३ में तुकों ने एका करके राज्यशान्ति की और खलीफ़ा को पदच्युत करके मुस्तफ़ा कमालपाशा को अध्यक्ष बनाकर अंगोरा में प्रजा-सत्तात्मक राज्य की स्थापना थी। इससे खिलाफ़त का प्रश्न अपने आप हल हो गया और हिन्दू-मुसलमानों में जो परस्पर ऐक्य था वह नष्ट हो गया। गांधी का भी बाद को कैद से छुटकारा हुआ। हिन्दुओं में अनेक जातियाँ होने के कारण और इसी प्रकार भारतीयों में मुसलमान, ईसाई व पारसी इत्यादि अनेक विभिन्न धर्मों लोगों की खिचड़ी होने से राष्ट्रीयता के



बढ़ होने पर स्वराज्य की गति तनिक अधिक तेज़ हो गई।  
 जमिंदारों ने आन्दोलन किया कि स्वराज्यपक्ष राजद्रोही  
 है। लेकिन लार्ड आलिवर ने कहा कि स्वराज्य-दल राजद्रोही  
 नहीं है, उसकी पद्धति नीति-युक्त है। उसी समय से स्वराज्य-  
 दल का कार्य बड़ी मज़बूती से होने लगा। यह मज़बूती इतनी  
 बढ़ी कि बड़ी व्यवस्थापक सभा में लोक-पक्ष की धार-धार जीत  
 होने लगी और सरकारी पक्ष की हार हुई। सरकार का कहना  
 था कि प्रस्तुत क़ानून के अनुसार दस वर्ष तक कोई परिवर्तन  
 होने का नहीं। तब जनता के प्रतिनिधियों ने यह माँग पेश की  
 कि द्विविध शासन विलकुल निरूपयोगी है, उसे नष्ट कर प्रांतीय  
 सरकारों को विलकुल स्वतन्त्रता दे दी जाय। इस विवादामक  
 प्रश्न पर विचार करने के लिए एक जाँच-कमेटी बेंचई गई।  
 इस जाँच-कमेटी के अध्यक्ष सर मुडीनेन बने। इस समिति  
 के अपनी जाँच प्रकाशित करने के पहले ही विलायत का लेबर  
 मंत्रिमंडल टूट गया और उसके स्थान पर कंज़रवेटिव  
 दल ज़रफ़्त़र अनुदार ने अपना मंत्रिमंडल बनाया। इनमें  
 भारतीयों को लाभ की बहुत कम आशा रह गई। मुडीनेन-  
 समिति में भी मतभेद हो गया। इनमें भारतीय सदस्यों के मत  
 और सरकारी मत में परस्पर बड़ा विरोध था। तब उस समय  
 इस प्रश्न का निर्णय करने के लिए मई १९२० की गरमियों में  
 लार्ड रेडिक्ल को सरकार ने लंदन में बुलाया। वहाँ विचार होने  
 पर भारत-मंत्री लार्ड थर्ज़नहेड ने यह प्रकाशित किया कि  
 दस वर्ष पूरे होने से पहले शासन-व्यवस्था में किसी प्रकार का  
 फेरफार नहीं हो सकता। जो सुविचार्य पद्धतें दी जा चुकी हैं  
 उनका उपयोग जनता सरकार के साथ नइयों करके करे।





लगाए लड़कर जीते हैं। कुछ ऐसी भी रियासतें हैं, जिनका निर्माण ही अंग्रेजों के समय में हुआ है; जैसे मैसूर, काश्मीर आदि। कई ऐसी भी रियासतें हैं जिनकी मित्रता शुरू से ही अंग्रेजों के साथ होगई थी। जैसे यड़ोदा, कोल्हापुर, हैदराबाद आदि। राजपूतों की रियासतें बाद में विशेष संधियों-द्वारा ब्रिटेन के अधीन हुईं। वास्तव में चाहे किसी रियासत के साथ मित्रता की संधि हो, चाहे किसी को जीतकर संधि की गई हो—सभी रियासतों पर इस समय ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व अधिकार है। जिस रियासत के साथ जैसी संधि है, उसके अनुसार कार्यवाई की जाती है। यदि किसी रियासत में गड़बड़ या कुप्रबंध हो तो उसमें हाथ डालकर उसे सुव्यवस्थित करने के अधिकार को अवश्य ही ब्रिटिश सरकार अपने में लाती है। विदेशी राज्यों के साथ व्यवहार स्थापित करने का अधिकार किसी राज्य को नहीं है। पहले अनेक रियासतें गोद लिये चारित्र्यों को नामंजूर कर ज़ुलम कर ली गईं। लेकिन सन् १८५८ से उत्तराधिकारी न होने पर किसी रियासत के ज़ुलम न किये जाने का पक्ष महापद्म विक्टोरिया ने अपने संदेश में दिया है। तैनाती फौज की पद्धति सब रियासतों के लिए जारी की गई। तब दोनों पक्षों का व्यवहार सफल करने के लिए सरकार ने सभी रियासतों में रेज़िडेंट की नियुक्ति की। यह सरकारी पदाधिकारी है। रेज़िडेंट को स्वतंत्र अधिकार कुछ भी न था। लेकिन उसकी सिफारिश पर ही राजा और राज्य दोनों का हितहित निर्भर करने से अत्यन्त रूप से उसका दायरा बहुत बढ़ा। राजा ज़रा रोद़र हुआ कि उसका और रेज़िडेंट के बीच में झटका गाँ, और राजा कुछ नरम हुआ था।



में उनकी पैदावार और धेनी के अनुसार उनका गट बाँध दिया गया है। उसका ही पालन शासन-सम्बन्धी कार्यों में किया जाता है। रियासत की भीतरी व्यवस्था अथवा असंतोष बढ़ने पर केवल पहले की संधियों के अनुसार व्यवहार किया जाय अथवा सरकार बीच में पड़कर अव्यवस्था को दूर कर दे। इस विषय का एक प्रश्न हाल में उठा था। इसका स्पष्ट निर्णय लार्ड रोडिक् ने सन् १९२६ में यह किया कि सब प्रजा की यथा योग्य रक्षा करने तथा उसकी अभिवृद्धि करने का भार सार्वभौम सरकार पर अन्ततः निर्भर है। इस कर्तव्य का पालन करने में किसी संधि के किसी नियम का ध्यान न रखा जायगा। सभी रियासतों के मान व उनके पद की रक्षा करने में सरकार पूर्ण रूप से दक्ष है। ब्रिटिश-भारत में जनता को अपना शासन करने का विशेष अधिकार खुल्ल-खुल्ला देने का उपक्रम सरकार ने किया है। सरकार की इच्छा है कि इसी परिमाण में रियासतों भी अपने-अपने राज्यों में जनता को वैसे ही अधिकार दें। महायुद्ध में इन रियासतों ने जो भारी सहायता सरकार की की, उसको चर्चा पहले की जा चुकी है। युद्ध के अनन्तर लोगों की स्वतन्त्र्य का अधिकार मिलने की आवश्यकता विदित हुई। यही आवश्यकता इन रियासतों में भी उपस्थित हुई। लेकिन नौकर-साही के लिए इस तृतीयांश भारत का इतना आधार अति महत्व का प्रतीत होने से, इन रियासतों के कारबार में बाहरी आन्दोलनों का संपर्क न होने देने के लिए "प्रिन्सिप-प्रोटेक्शन बिल" "अर्थात् रियासत-दारों के बचाव का क़ानून" बनाया गया। सांग्रहा यह कि भारत की ब्रिटिश प्रजा व देशी रजबाड़ों की प्रजा का एक होना कठिन है। महायुद्ध में जो सहायता इन देशी रजबाड़ों ने की उसके बदले में सरकार ने उनको पूर्ण अन्तर्गत स्वातन्त्र्य दे



कम की इच्छा के अनुसार राजा द्वारा चलाया जाता है। पार्लामेंट में एक लाइनों की सभा दूसरी सामान्य प्रजा की सभा, इस प्रकार दो सभाएँ हैं। सामान्य सभा में ६५ लोक-निर्वाचित सदस्य हैं। इनमें अधिकारी दल की ओर के २१ सदस्यों का एक प्रधान मंडल बनाकर मंडल-द्वारा राज्य का समस्त कार्रवाई चलाया जाता है। इस प्रधान मंडल का अध्यक्ष ही प्रधानमंत्री बनता है और बहुमतवाले दल का नेता होता है। इसी मंडल में भारत के राज-शासन का निरीक्षण करनेवाला भारत-मंत्री की एक सदस्य होता है। उसकी सहायता के लिए ८ से १२ सदस्यों की एक परामर्श-दात्री-समिति भी रहती है। इस कौंसिल में राज्यपाल ३ भार्गव सदस्य रहते हैं। धान्तव में भारतमंत्री का भारत के शासन में कोई स्वतंत्र अधिकार नहीं। अधिकार पार्लामेंट और राजा का रहता है, लेकिन इस अधिकार के अनुसार जो कुछ कार्यवाई होनी है वह केवल इसी भारत-मंत्री के द्वारा ही हुआ करता है। जन-मूर्ख के विषय में उसे अपनी परामर्श-दात्री-समिति के ही अनुसार चलना पड़ता है। अन्य बातों में वह अपनी समिति के अनुसार न भी चले तो कोई रुकावट नहीं पड़ती। पूरे भारत की मिलकरियत या उसका सम्मन-प्रबन्ध करने की सत्ता मर्यादा प्रिटिश पार्लामेंट के ही हाथ में है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।

२—कानून—विषय भी नवीन कानून को बनाने या पुराने कानून को तोड़ने का अधिकार वही व्यवस्थापिका सभा को है। दोनों कानूनी मर्यादों पर विचार करने के लिए सभा के सम्मलेन में एक कमिटी की जाती है। इसका कार्य है। सरकार की नीति-निर्देश पर पर मर्यादा व्यवस्थापिका सभा के



सुधार किये गये। अतएव यहाँ का शासन करनेवाले नौकरों की एक विशिष्ट संस्था ही बन गई है। इसे इण्डियन-सिविल-सर्विस कहते हैं। इसका परीक्षा इंग्लैंड में होती है और इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए व्यक्तियों को यहाँ नौकरी मिलती है। शासन के विभिन्न विभागों में सभी उच्च व महत्व के पदों पर इन लोगों की तैनाती की जाती है। सारा कार-बार बड़ी नेफनियती से इस संस्था द्वारा होने पर इसकी सब जगह बड़ी तारीफ़ होती है। भारताय भी इंग्लैंड जाकर इस परीक्षा में बैठते हैं और योग्यता के अनुसार उनका पद मिलते हैं। भारतीयों को उत्तरोत्तर अधिक पद देने का निश्चय अब सरकार ने किया है। इसके अलावा प्रत्येक प्रान्त में प्राविशियल इण्डियन-सिविल-सर्विस है जो बिल्कुल निम्न नौकरियों की सर्वाडिनेट सर्विस है। प्रत्येक के नियम और वेतन अलग-अलग निश्चित हैं। इधर अब सिविल-सर्विस की परीक्षा भारत में भी ली जाने लगी है।

४—फ़ौज, जलसेना और विमान—देश की रक्षा करने के लिए फ़ौज और जलसेना की योजना पहले से ही है। इधर हवाई जहाज़ भी रफ़े जाने लगे हैं। भारत के पास कोई स्वतन्त्र जल-सेना नहीं है, ब्रिटिश जल-सेना की ही एक शाखा यहाँ पर तैनात है। फ़ौज के पैदल, घुड़-सवार, तोप-खाना और इञ्जीनियर आदि चार मुख्य अंग हैं। इन सब का बड़ा अफसर सेनापति कमांडर-इन-चीफ़ है। वह बड़ी व्यवस्थापिका सभा और गवर्नर-जनरल की कार्य-कारिणी कौंसिल का एक सदस्य है। इस सम्पूर्ण सेना के चार विभाग किये गये हैं। उनके रहने का स्थान उत्तर में मरी, दक्षिण में पूना, पूर्व में नैनीताल और पश्चिम में क्वेटा है। कुछ भारतीय स्वयं-सेवक तैयार करना









हैं। इन सब का अध्ययन करने में समग्र भारतीय शासन में सरकार का कितना प्रभाव पड़ता है और सरकार की निगाह चारों तरफ़ कितनी तेज़ है, यह बात जानी जा सकती है। समग्र शासन को चलाने के लिए प्रत्येक ज़िले में कौन-कौन सरकारी पदाधिकारी रहते हैं, यह जानने के लिए एक कोष्टक परिशिष्ट में दिया गया है। इसे देखने से विद्यार्थी ज़िले के शासन को स्वयं समझ लें।

८—स्थानीय स्वराज्य—लोगों को अपना शासन स्वयं अपनी संघ-शक्ति-द्वारा चलाने के लिए विभिन्न स्थानों में विशिष्ट संस्थाएँ हैं। इनके द्वारा सार्वजनिक हित के अनेक काम करने का अधिकार सरकार ने लोगों को दिया है। लोगों की आवश्यकताएँ बड़ा-बड़ा इतनी हैं कि उनके ही स्थानों में, उनकी सुविधा के अनुसार जैसा प्रयत्न हो सकता है, वसा प्रयत्न दूर रहनेवाले सरकारी पदाधिकारी नहीं कर सकते। इसलिए उनकी कठिनाइयों को दूर करने का अधिकार उन्हें ही देने पर उन्हें कोई शिकायत करने का मौका नहीं मिलता और इससे उनको राज्य चलाने का व लोक निर्वाचित संस्था के चलाने का अनुभव भी मिलता है। यह विषय बड़े महत्त्व का है। प्राथमिक शिक्षा, पुस्तकालय, मार्ग, जल-प्रयत्न, नौगों का निवारण, रोगरानी, गंदगी दूर करने आदि की व्यवस्था, दवा-खाने, दूध देनेवाले जानवरों की निगरानी—इस प्रकार के अनेक छोटे-मोटे परन्तु सार्वजनिक हित के विषय इस संस्था को सौंपे गये हैं। ये संस्थाएँ तीन दर्जों में बंटी हैं। बड़े शहरों की संस्थाओं को म्युनिसिपैलिटी कहते हैं, परन्तु राजधानी की म्युनिसिपैलिटी को कॉर्पोरेशन कहते हैं। प्रत्येक बड़े गाँव में एक ग्राम-पंचायत रहती है। इन पंचायतों-द्वारा छोटे-छोटे झगड़ों



पश्चिमी समुद्र को पारने के लिए वैश्वेन्द्रियनमेशन इत्यादि की गिनती भी ऐसी ही संस्थाओं में होती है। आजकल भारत में ७५० म्युनिसिपैलिटियाँ हैं। अंग्रेजी अमलदारी शुरू होने से पहले भी यहाँ लोकनिर्वाचित ग्राम-संस्थाएँ थीं। ये उपयुक्त सभी काम उनके द्वारा होते थे। इस प्रकार अधिकांश कामचारा उन्हीं के हाथों में था। इन ग्राम-संस्थाओं या गाँव की पंचायतों का फिर से निर्माण किये जाने का प्रयत्न आजकल चल रहा है। सहकारी बैंक से, अर्थात् एक-दूसरे की ज़ामिनदारी द्वारा, लोगों को ऋज मिल जाता है। इससे अनेक उपयुक्त लोकोपयोगी काम करने की योजना आजकल सारे देश में जारी है। पाठशालाओं में 'बालघर' अर्थात् छ्वाय स्काउट की शिक्षा देने का प्रारम्भ अनेक स्थानों में हो गया है। युनिवर्सिटियों में फीजी शिक्षा के शास प्रारम्भ हो गये हैं। इनको युनिवर्सिटी-ट्रेनिङ्ग-कोर (यू० टी० सी०) कहते हैं।

९—ब्रिटिश साम्राज्य—अर्धाचीन काल में संसार में अनेक साम्राज्यों का प्रसार हुआ। रोमन बादशाही, अरबी खिलाफत, यूरोप में शार्लमैन का साम्राज्य और भारत में मुगल बादशाही सामान्यतः समकालीन हैं। प्राचीन काल में अशोक का साम्राज्य जयवा उसके बाद गुप्त, हर्ष इत्यादि के राज्य, भारत में उदय हुए। परन्तु आजकल के राज्य-तन्त्र से यदि उनकी तुलना की जाय तो पता चलेगा कि जितनी बातें प्रस्तुत राज्य-तन्त्र की विदित हैं उतनी बातें अन्य राज्यों की नहीं विदित हैं। इसी प्रकार चीन की बादशाही हजारों वर्ष रही, उसका भाँ अनेक बातें अज्ञात हैं। इन सब से ब्रिटिश साम्राज्य की अनेक बातें बिल्कुल भिन्न हैं। एक तो यही कि यह साम्राज्य अविच्छिन्न



के साथ अनवरत हो गई। सन् १७५६-६३ तक सात वर्ष का युद्ध हुआ। इसमें फ्रांस की हार हुई और अंग्रेजों की समुद्री सत्ता स्थापित होगई। इसके बाद इस शक्ति के बल पर उसने अपना व्यापार, अपने उपनिवेश और राज्य बढ़ाने का प्रारंभ किया। उपर्युक्त सात वर्षों के युद्ध के बाद होने पर उत्तर अमरीका के संपुट राज्यों ने इंग्लैंड की अधीनता अपने ऊपर से हटा दी और वे स्वतंत्र हो गये। बाद को नेपोलियन के युद्ध में उसकी उन्नति में जो कुछ बाधा पड़ी, उसकी पूर्ति महारानी विक्टोरिया के शासन-काल में पूर्ण हो गई। वर्तमान अंग्रेजी-साम्राज्य निम्नांकित सात विभागों में विभक्त है—

१—इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स—एगस स्वामी की मूल मातृभूमि।

२—आयरलैंड—इसे अब “फ्री स्टेट” कहते हैं। इसे स्वतंत्र राज्य मिला है।

३—स्वतंत्र उपनिवेश—कनेडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, और दक्षिण-अफ्रीका—इनको पूर्ण अन्तर्गत-स्वातंत्र्य मिला है।

४—क्राउन कालोनीस—माल्टा, जर्मका, सीलोन, मलाया इत्यादि, इनका शासन पार्लामेंट द्वारा तैनात किये गये गवर्नर करते हैं।

५—अधीन देश—भारत इत्यादि—ये परतंत्र हैं। अपने अन्तर्गत शासन-स्वतंत्रता चाहते हैं। भारत में ७०० देशी रियासतें हैं, जिन्हें अन्तर्गत-स्वातंत्र्य प्राप्त है।

६—संरक्षित प्रदेश ( प्रोटेक्टोरेट्स )—इजिप्ट, ब्रिटिश पूर्व अफ्रीका, नैजीरिया इत्यादि। ये विशिष्ट संधियों द्वारा इंग्लैंड की अधीनता में आ गये हैं।





के. ए. ए. विभाग (मैट्रिक) की परीक्षा बहुत सख्त होती। इसका कारण यह  
 है कि यह परीक्षा केवल एक ही बार होती है। यदि कोई छात्र इस परीक्षा में  
 फेल हो जाता है, तो उसे दोबारा परीक्षा देने की आवश्यकता पड़ती है।  
 इसलिए छात्रों को इस परीक्षा में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के लिए  
 बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इस परीक्षा में छात्रों को न केवल  
 बुनियादी ज्ञान, बल्कि उच्च स्तर की समझ और विश्लेषण क्षमता  
 का प्रदर्शन करना पड़ता है। इसलिए छात्रों को इस परीक्षा के लिए  
 अच्छी तैयारी करनी चाहिए।

लेकिन यूरोपीय उपनिवेशोंवाले भारतीय प्रवासियों को बराबरी के नाते के अधिकार नहीं देते, इसमें अनेक पैचीदे प्रदन उपस्थित होते हैं और उनमें ब्रिटिश-साम्राज्य का शासन बड़ा जटिल हो हा जाता है। विशेषतः दक्षिण व पूर्व अफ्रीका में भारतीय-प्रवासियों की बस्ती अधिक है। इसलिए वहाँ यूरोपियों और भारतीय-प्रवासियों के अनेक विषयों के झगड़े खड़े होते हैं। उपनिवेशों के भीतरी शासन में दखल देने का अधिकार ब्रिटिश सरकार को न होने से कई मौकों पर उनकी स्थिति बड़ी जटिल हो जाती है। इधर उपनिवेशवालों का जी दुखाया नहीं जा सकता और उधर भारतीयों के योग्य अधिकारों की रक्षा करने की जिम्मेदारी पूरी नहीं हो पाती। ब्रिटिश-सरकार जब-जब ऐसी अड़चन में पड़ जाती है। पूर्व-अफ्रीका में केनिया नाम का एक उपनिवेश है। इस प्रदेश में बहुत पहले से भारतीय रहे हैं। पहले यह भू-भाग जर्मनी के अधिकार में था, युद्ध के बाद यह अंग्रेजों को मिल गया। केनिया का यह उपनिवेश भारतीयों के बसने के लिए अलग रखने की माँग भारतीयों ने सरकार से की थी, लेकिन सरकार ने उसे नामंजूर किया और केनिया के उत्तम भूभाग यूरोपीयों के बसने के लिए अलग रखे गये हैं। इस मामले में भारतीयों और सरकार में बड़ी अनपन हो गई। सांगंदा यह कि ब्रिटिश-साम्राज्य के शासन में जो जटिल प्रदन किसी प्रकार उत्पन्न हो जाते हैं उनकी कल्पना इस उदाहरण में की जा सकती है।

८—भारत की विद्योन्नति—साम्राज्य का विस्तार, शासन, व्यापक व्यवस्था की जानकारी भारतीय लोगों को सार्थक रूप से देने के उद्देश्य से विद्योन्नति रूप में हाने लगी। विभिन्न विषयविषयों





में यहाँ के विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। इनके अलावा  
 अतिरिक्त अधिक संख्या में भारतीय विद्यार्थी इंग्लैंड, जर्मनी,  
 फ्रांस इत्यादि विदेशों में जाने में भागीय जनता  
 की दृष्टि विस्तृत हुई। तरुणों में उत्साह की वृद्धि हुई और वे  
 अपने अधिकांशों को जानने लगे। ऐसी स्थिति में लार्ड कर्जन ने  
 विद्यार्थियों का नियंत्रण करने के लिए युनिवर्सिटी-एक्ट अर्थात्  
 भारत के समस्त विश्वविद्यालयों के लिए एक नवीन कानून बनाया।  
 इस एक्ट के द्वारा सब की व्यवस्था बदेख-रेख एक ही रख  
 उसका बहुत कुछ काम सरकार ने अपने हाथ में ले लिया।  
 इनका परिणाम यह हुआ कि लोगों की भावना बदल गई और  
 उन सरकारी स्कूलों और युनिवर्सिटियों में लोक-हित-पोषक शिक्षा  
 का अभाव उन्हें देख पड़ने लगा। लोग शिक्षा के विषय को पूर्ण  
 रूप से अपने अधीन करने के लिए तत्पर हुए। इसका प्रारम्भ  
 पहले बंगाल में हुआ और नेशनल एज्युकेशन अर्थात् राष्ट्रीय  
 शिक्षा की स्वतंत्र संस्था स्थापित होने लगी। लेकिन इसके  
 साथ ही साथ राजद्रोह का प्रसार होता देख सरकार ने ऐसी  
 संस्थाओं पर अपना नियंत्रण कुछ काल तक अधिक रक्खा।  
 बाद को लार्ड हाडिंज ने लोक-शोभ का शमन करने के लिए जो  
 अनेक उपाय किये उनमें उत्तम लोक-शिक्षा पर से सरकारी  
 सहायता बहुत कुछ हटा दी। मिसेज़ बीमेट का धियानफी के द्वारा  
 लोक-शिक्षा का उपयोग बहुत दिनों तक जाग रहने में बनारस में  
 उत्तम एक सेंट्रल हिन्दू-कालेज बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस  
 संस्था के क्षेत्र को और भी अधिक विस्तृत कर वहाँ हिन्दू-  
 युनिवर्सिटी स्थापित करना और उसमें हिन्दू धर्म का व अन्य  
 विषयों की शिक्षा यथेच्छ रीति से देने के उद्देश से पंडित मदन

माहज मालवीय इत्यादि जितने ही घमांमिमानियों ने चंदे की बड़ी-बड़ी रकमें एकत्र कीं और सन्धार की परवानगी लेकर सन् १९१५ में धनारस-हिन्दू-युनिवर्सिटी स्थापित की। यह युनिवर्सिटी बड़ी उन्नति कर रही है। इसी नमूने का मुमलमानों का एक स्वतंत्र विद्यालय अलीगढ़ में था। उसका क्षेत्र बढ़ाकर मुमलमानों ने भी चंदा एकत्र कर अपनी अलीगढ़ की मुस्लिम युनिवर्सिटी स्थापित की (सन् १९२०)। अर्थात् इन दो सरकार-सम्मत युनिवर्सिटियों का अधिकांश काम लोगों को मिला।

एधर इसी समय यूरोप में महायुद्ध शुरू हुआ। उसका प्रभाव संसार के सभी राष्ट्रों पर पड़ा। इससे पृथिवी के जितने भी राष्ट्र थे उनमें अपनी अन्तःस्थिति को सर्वप्रथम सुलभ रीति से चलाने का प्रयास हुआ। इसी प्रकार व्यापार-मार्ग एवं व्यापार के साधनों की बाढ़ स्थान-स्थान में होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों की चर्चा भी खुलकर होने लगी। इससे प्रत्येक राष्ट्र में नीति जागृति हुई, अपनी स्थिति व अधिकारों की रक्षा का उम्माड़ बढ़ा और स्वयं-निर्णय के सत्य के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को अपने शासन को संभालने का अधिकार मिला। वास्तव में यदि देखा जाय तो इसकी जड़ युद्ध के बंद होने पर ही जमी। लीग-ऑफ-नेशन्स नाम का एक अन्तर्राष्ट्रीय संघ स्थापित किया गया। प्रबल राष्ट्रों ने यह निश्चय किया कि अब से आगे सभी राष्ट्र अपने-अपने का निर्णय पहले इस संघ-द्वारा कराएँ, और उसका निर्णय बिना कोई राष्ट्र युद्ध न करे। तदनुसार आजकल इस राष्ट्र-स्थापना हुई है और वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का निर्णय

इसी संस्था के द्वारा होता है। इससे किसी नये युद्ध का अन्तानक प्रारंभ हो जाना बहुत कम संभव है। इस संघ में भारत का भी एक प्रतिनिधि है। इस योजना से भी विभिन्न देशों में नई राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न हो गई है और उसका परिणाम भारत में भी व्यक्त हुआ है।

इस स्वयं-निर्णय के तत्त्व पर भारत में भी कितने ही महत्त्व के प्रश्न खड़े हो रहे हैं। गान्धी-द्वारा सरकारी स्कूलों का बहिष्कार होने पर, राष्ट्रीय शिक्षा की अनेक संस्थाएँ व शालाएँ स्थान-स्थान पर खुलीं। धन का अभाव होने से यद्यपि ये संस्थाएँ ठीक-ठीक न चल सकीं, तथापि इनसे लोकमत की अनुकूलता दिखाई पड़ती है। पुना में तिलक महाविद्यालय और अहमदाबाद में गुजरात-विद्यापीठ राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं। कार्य-समाज-द्वारा कांगड़ो, जालंधर इत्यादि स्थानों में स्थापित 'गुरुकुल' संस्थाएँ भी राष्ट्रीय पद्धति पर चल रही हैं। इससे सम्पूर्ण लोक-शिक्षा के विषय में सरकार ने अपनी पहले की नीति बहुत कुछ बदलकर जनता की माँगों को अधिकांश में स्वीकृत किया है। ढाका, रंगून, पटना, लखनऊ, दिल्ली, नागपुर, मैसूर, आगरा व हैदराबाद की उस्मानियाँ युनिवर्सिटियाँ स्थापित हो गई हैं तथा अन्य स्थानों में भा खुलने की चर्चा हो रही है। इसी विषय में किन्तु भिन्न प्रकार का एक और उद्योग रवीन्द्रनाथ ठाकुर का विश्व-भारती है। गांधी व रवीन्द्रनाथ इन दोनों के प्रयत्नों द्वारा प्राच्य व पाश्चात्य संस्कृतियों का मेल कराकर समस्त भूमंडल की मानव-जातियों में समभाव और प्रेम-भाव उत्पन्न किया जा रहा है। इन दोनों के कार्यों में अन्तर केवल





धारा के बहने का सतत प्रवाह है। एक समय वह था कि जय आर्य-संस्कृति का फैलाव चीन से पश्चिमी एशिया तक तथा पूर्व एवं पश्चिम के समुद्रों तक पहुँच गया था। जावा-द्वीप में बोरो बुद्ध में बुद्ध-स्तूप का मन्दिर सन् ईस्वी के ८ वें शतक का भारतीय कला का नमूना है। ऐसी अप्रतिम स्थापत्य-रचनाएँ भूतल पर इनी-गिनी ही हैं। सारांश यह कि हमारे राष्ट्रीय इतिहास के संशोधन और खोज का कार्य अभी प्रारम्भ हुआ है। यह कार्य प्रस्तुत अंग्रेजी शासन-काल में शक्य है। अतः इसे स्वयं निष्ठ करने की सामर्थ्य प्राप्त करनी चाहिए। ऐसे शान्तिमय काल को प्रस्तुत करने के लिए यादशाह पंचम जार्ज के दीर्घ यशस्वी जीवन की कामना करते हुए तुम उनके प्रति अपने चित्त में धर्रा रखो। अंग्रेजी शासन में ज्ञान-ज्योति का विलक्षण प्रकाश देश में फैल रहा है और पाँच हजार मील दूर पर स्थित भाग्यशाली ब्रिटिश राष्ट्र का भारत से सम्यन्ध जुड़ गया है। जान्मोद्धार की ऐसी सुसंधि बड़े भाग्य से ही प्राप्त होती है। तुम बड़े होने पर राज्य-शासकों की सन्नोप-प्रद रीति से सहायता कर उनसे अपनी व अपने देश की उन्नति करा सकते हो। पोंले दिये हुए माघन्त इतिहास को पढ़कर यह उपदेश तुम्हें अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। तभी तुम्हारा इतिहास पढ़ना सार्थक होगा।









—अंग्रेज़-मराठा युद्ध पहला १७७५—१७८२

१—मुरत की सन्धि १७७५; २—भाराम की लड़ाई १७७५

३—पुरन्दर की सन्धि १७७६; ४—कारला की लड़ाई १७७९

५—बड़गाँव की सन्धि १७७९; ६—मालवाई की सन्धि १७८२

२—अंग्रेज़-मैसूर-युद्ध दूसरा १७८०—१७८४

१—पोटोनोको २—शिवलिंग गढ़ की लड़ाई १७८१; ३—मंगलोर का घेरा १७८४, ४—मन्नरो की सन्धि १७८४

३—अंग्रेज़-मैसूर-युद्ध तीसरा १७९०—१७९२

१—भारिकेर की लड़ाई १७९१; २—धीरजपट्टन की सन्धि १७९२

४—अंग्रेज़-मैसूर युद्ध चौथा, सन् १७९९

१—मलवल्ली की लड़ाई; धीरजपट्टन की लड़ाई १७९९

५—अंग्रेज़ मराठा युद्ध दूसरा सन् १८०३—१८०५

१—वमई की सन्धि १८०२, २—अहमदनगर का कब्जा, ३—अमराई की लड़ाई ४—भलीगढ़ की लड़ाई ५—दिल्ली की लड़ाई, ६—टापवाड़ी की लड़ाई, ७—आइगाँव की लड़ाई, १८०३, ८—मिन्चिवा से सत्रे अंतर्नागाँव की सन्धि ९—भीमले के साथ देव गाँव की सन्धि, होलकर से युद्ध, १०—दिल्ली की लड़ाई १८०४; ११—दींग, १२—कटैयाबाद की लड़ाई

300 200 100 0

[illegible][illegible]

५५३५ ॥ ३५३५३५ ॥ ३५३५३५ ॥ ३५३५३५ ॥ ३५३५३५ ॥

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

10. 11. 1944

14-117 0000 028 11111 1000 1000

१ - अथर्ववेदः श्री कृष्णार्चनम् १४२० ५ दशमोऽध्यायः

प्राप्त १०१० : २४० वीं प्राप्ति १०१०,

1. 1/1/2018 10:00 AM - 11:00 AM

41 6011 3030 4 01777 0.02 3030

[illegible]

—THE GIVER— and the receiver—

१०-भारत-सुख १८२५

14—नमो भगवते वासुदेवाय १०२० १०२०

18—frisch ausgeg. 1—falsch abg. 200. 100. 100. 100.

२-निधिया सुद - भाराजपुरा मीर ६ १० ३ ४ ५ ६

0001 1 0 000

୨୧—(ମିଥ୍ୟା ଯୁକ୍ତ ବାହ୍ୟ) ୧୯୪୩-୧୯୪୫

१) गुदवा ५-१५ दिने ५५१

વાલ મોર ૪—સોમી ૪૫ ૧૨૫૦ ૧૦૦—

एकहोत्र वा मयि १८५१

२५. मित्रवत् पुत्र जमरा मन् १८४८-१८४९

संलग्नक १८४६

૧ -- ગુજરાત ૧૯૪૯

०३ वामना पुत्र कुमार १- रघुन, २-देवीन की कथा :—रघुन

1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 26



ब्रमा पर अधिछर सन् १८५२

२४—मिर्जादियो का बलवा सन् १८५०-१८५८

२५—भङ्गान युद्ध इमरा सन् १८३८-१८८०

१—गन्धमुख की संधि १८१९; मेजर १

बंधार की लड़ाई १८८०

२६—यूरोपीय महायुद्ध १९१४-१८

२७—भङ्गान-युद्ध तीसरा १९१९

## प्रसिद्ध व्यक्तियों की नामावली

### (१) प्राचीन शासन-काल

कनिष्क,	चाणक्य,	अद्विपान,	मेगस्थनीज,	भीमर्ष,
गोताम बुद्ध,	जनक,	भोजराज,	याज्ञवल्क्य,	दुपनमात्र,
चंद्रगुप्त,	पाणिनि,	महावीर,	विष्णुसहस्रनाम ।	

### (२) मुस्लिम-शासनकाल

अल्लाउद्दीन खिलजी,	तुलुकामरावों,	मलिक अगवर,	मार्कोपोलो,
भुल्लुल्लुल्ल,	दोदामल,	महम्मद गवाँ,	रामदेवराव
आमकल्लों,	नूरजहाँ,	महम्मद गोरी,	रानामोंगा,
कुतुबुद्दीन,	तुघलक़ीराज,	मुहम्मदबिनक़ामिम	सुबुल्लुल्ल
चौदरीबा,	मनापसिंह,	महाबल्लुल्लों,	सत्यदेवन्धु
जयपाल,	बहगमल्लों,	मानसिंह,	हिम्पू ।

### (३) महाराष्ट्र शासन-काल

अन्नाली,	नानाजी मालुमरे,	फताहसिंह भोंसले,	रघुनाथराव,
	नारायण,	बाजीपभु,	रघुजीभोंसले,
गादी,	धनराजी यादव,	बापू गोस्वामे,	रामचंद्रपतभमाव

ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥

### (੧) ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥

ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥  
 ਸ੍ਰੀ ੧੦੮ ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ੧੦੮ ॥







